लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

वन्दे मातरम्

अर्धवार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका

28वाँ अंक
2023-24

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल,
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता – 700 001

कार्यालयीन पत्रिका वंदे मातरम् के 27 वें अंक का विमोचन करते हुए कार्यालय प्रमुख

कार्यालयीन पत्रिका वंदे मातरम् के रचनाकारों को सम्मानित करते हुए कार्यालय प्रमुख

सत्यमेव जयते

हिन्दी गृह पत्रिका

वन्दे मातरम्

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अर्धवार्षिक हिंदी गृह पत्रिका

अट्ठाइसवां (28वां) अंक

2023-24

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल,
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता – 700 001

पत्रिका परिवार

संरक्षक
- **श्री अतुल प्रकाश**
  महालेखाकार

परामर्शदातृ समिति
- **श्रीमती शैलजा खरे**, वरिष्ठ उप महालेखाकार
- **श्री अल्तमश गाजी**, उप महालेखाकार
- **श्री शंभू दयाल**, उप महालेखाकार
- **श्री रेबती रंजन पोद्दार**, वरिष्ठ लेखा अधिकारी

संपादक
- **श्री अरूण कुमार**, हिंदी अधिकारी

उप-संपादक
- **श्री आशीष कुमार**, कनिष्ठ अनुवादक

सहायक
- **श्रीमती प्रियंका संजीव सिंह**, कनिष्ठ अनुवादक
- **श्री सचिन प्रसाद**, कनिष्ठ अनुवादक
- **श्री अमित कुमार**, वरिष्ठ लेखाकार
- **श्री अतुल कुमार**, लेखाकार

रचनाकारों के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है क्योंकि वे उनके निजी विचार होते है।

श्री अतुल प्रकाश
महालेखाकार

संदेश

हिंदी गृह-पत्रिका 'वंदे मातरम्' के विगत 27वें अंक की भाँति 28वां अंक भी राजभाषा हिंदी के प्रति सभी कार्मिकों की निष्ठा को प्रदर्शित करता है। इस अंक में शामिल रचनाओं के अनुशीलन से ये बात स्पष्ट होती है कि परस्पर सहयोग के माध्यम से कार्यालय में राजभाषा हिंदी में कामकाज को राजभाषा विभाग और मुख्यालय की अपेक्षानुसार व्यवहार में लाया जा सकता है। इस अंक की सभी रचनाएँ नितांत भिन्न और व्यक्तिगत अनुभवों को सामासिक रूप से प्रस्तुत करती हैं जिससे जीवन में समस्याओं को संबोधित कर उनका समाधान करने में मदद मिल सके। इस अंक की रचनाएँ कुछ ऐसे पहलुओं को भी स्पर्श करती हैं।

'वंदे मातरम्' के 28वें अंक के प्रकाशन हेतु सभी रचनाकारों और सम्पादक-मण्डल को ढेर सारी बधाई। आशा करता हूँ कि ये अंक राजभाषा हिंदी की प्रगति में सहायक सिद्ध होगा। आगामी अंकों की उत्कृष्टता हेतु आप सभी की टिप्पणियों और सुझावों का स्वागत है।

सभी को शुभकामनाएँ !

अतुल प्रकाश

श्रीमती शैलजा खरे
वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन)

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि कार्यालय की गृहपत्रिका 'वंदे मातरम्' के 28वें अंक का सफल प्रकाशन हो रहा है। सभी रचनाएँ अलग-अलग सामाजिक परिप्रेक्ष्य को पाठकों के सम्मुख लाती हैं। ये सभी रचनाएँ हमारे जीवन-अनुभव से सार्थक संवाद करती हैं। 'वंदे मातरम्' के 28वें अंक का सफल प्रकाशन के लिए संपादक मण्डल और सक्रिय भूमिका के लिए सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ।

आप सभी पाठकों की टिप्पणियों और सुझावों का हार्दिक स्वागत है जिससे पत्रिका के आगामी अंक अधिक गुणवत्तापूर्ण बन सकें।

शैलजा

शैलजा खरे

अरुण कुमार
सम्पादक

संपादकीय

यह बहुत गर्व की बात है कि "ग" क्षेत्र में कार्यालय स्थित होने के बावजूद गृह पत्रिका "वन्दे मातरम्" का प्रकाशन वर्ष में दो बार किये जाते है। वन्दे मातरम् के 28 वें अंक एवं वर्ष 2023-2024 के लिए द्वितीय अंक का प्रकाशन किया जा रहा है, इसके लिए सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का प्रयास प्रशंसनीय है। कार्यालय की स्मारिका के रूप में, राजभाषा के प्रचार-प्रसार एवं उत्तरोत्तर विकास में अधि कारों/कर्मचारियों में सृजनात्मक लेखन क्षमता विकसित करने में गृह पत्रिका का महत्वपूर्ण योगदान है।

पत्रिका के संरक्षक, परामर्शदातृ समिति के सदस्यों के सुझाव एवं राजभाषा कार्मिकों की मेहनत सराहनीय है जिनके सुझाव एवं प्रयास से पत्रिका का अंतिम रुप प्रदान किया गया है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ, साज-सज्जा, रचनाओं का चयन आदि विवेकपूर्वक किया गया है एवं कार्यालय की विविध गतिविधियों से संबंधित झलकियों को भी शामिल किया गया है। इसके अलावा पत्रिका के सम्पादन एवं व्याकरणिक शुद्धता का पूरा-पूरा ध्यान रखा गया है। पत्रिका में राजभाषा नियम, अधिनियम से संबंधित संक्षिप्त विवरण, मधुबनी चित्रण, कई लेख, कहानी आदि शामिल किये गये है।

हिंदीतर भाषी क्षेत्र होने के बावजूद सभी रचनाकारों ने अपनी विद्वता का परिचय दिया है। गृह पत्रिका कार्यालय के कार्मिकों के लिए एक ऐसा सरल एवं सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा वे अपनी लेखनी प्रतिभा निखारते हैं और अपने अतिरिक्त समय का सदुपयोग रचनाओं के सृजन जैसे- कविता, कहानी, लेख, शोध, संस्मरण में करते है।

आशा है कि राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार की दिशा में "वन्दे मातरम्" पत्रिका हमेशा प्रगति की राह में रश्मि बिखेरती रहेगी।

पाठकों के बहुमूल्य विचार, मार्गदर्शन एवं सूझाव की प्रतिक्षा रहेगी ताकि इसके अगले अंक को और अच्छे ढ़ंग से प्रकाशन में सहयोग मिलेगा।

जय हिंद।

अरुण कुमार

आपके पत्र

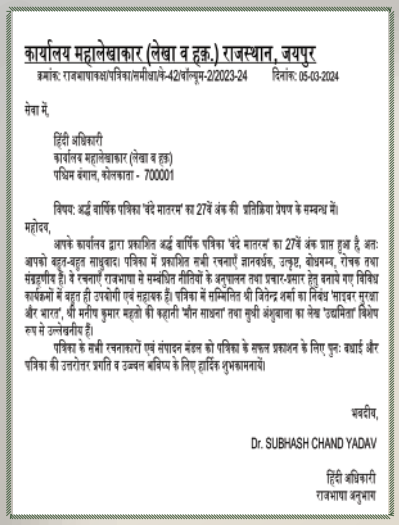

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक़.) राजस्थान, जयपुर

क्रमांक: राजभाषाकक्ष/पत्रिका/समीक्षा/के-42/वॉल्यूम-2/2023-24 दिनांक: 05-03-2024

सेवा में,

हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हक़)
पश्चिम बंगाल, कोलकाता - 700001

विषय: अर्द्ध वार्षिक पत्रिका 'वंदे मातरम' का 27वें अंक की प्रतिक्रिया प्रेषण के सम्बन्ध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित अर्द्ध वार्षिक पत्रिका 'वंदे मातरम' का 27वें अंक प्राप्त हुआ है, अतः आपको बहुत-बहुत साधुवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ ज्ञानवर्धक, उत्कृष्ट, बोधगम्य, रोचक तथा संग्रहणीय हैं। ये रचनाएँ राजभाषा से सम्बंधित नीतियों के अनुपालन तथा प्रचार-प्रसार हेतु बनाये गए विविध कार्यक्रमों में बहुत ही उपयोगी एवं सहायक हैं। पत्रिका में सम्मिलित श्री जितेन्द्र शर्मा का निबंध 'साइबर सुरक्षा और भारत', श्री मनीष कुमार महतो की कहानी 'मौन साधना' तथा सुश्री अंशुबाला का लेख 'उद्यमिता' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादन मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए पुनः बधाई और पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति व उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनायें।

भवदीय,

Dr. SUBHASH CHAND YADAV

हिंदी अधिकारी
राजभाषा अनुभाग

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I),
पश्चिम बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, 2, गवर्नमेंट प्लेस (पश्चिम),
कोलकाता - 700 001

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I),
WEST BENGAL
TREASURY BUILDINGS, 2, GOVT. PLACE (WEST),
KOLKATA-700 001
Ph. (033) 2213-3151/52, Fax (033) 2213-3174
e-mail : agauwestbengal1@cag.gov.in

सं. हिंदी कक्ष/हिंदी पत्रिका/पावती/396
दिनांक: 12.03.2024

सेवा में,

हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक.)
पश्चिम बंगाल, ट्रेजरी बिल्डिंग्स
कोलकाता-700001

विषय:- अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका "वंदे मातरम" के 27वें अंक की पावती संबंधी।

महोदय,

आपके कार्यालय का पत्रांक- पी.ए.जी.ए.ई.डब्ल्यू.बी./02/05/व.मा./14/2023-24/281, दिनांक 27.02.2024 के माध्यम से आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "वंदे मातरम" (ई-पत्रिका) के 27वें अंक की प्राप्ति हुई। धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ सुंदर एवं आकर्षक है। "वंदे मातरम" में समाहित सभी रचनाएं रोचक, प्रशंसनीय एवं ज्ञानवर्धक है। विशेष रूप से श्री चंदन कुमार बढ़ई की रचना "सूखे रंग की डिबिया", सुश्री आरती शर्मा की रचना "क्लिकबेट", श्री अनिल कुमार की रचना "जीवन के कुछ पहलू", श्री मनीष कुमार महतो की रचना "मौन साधना", सुश्री अंशुबाला की रचना "उद्यमिता" इत्यादि सराहनीय है। आशा है कि यह पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामनाएं।

भवदीय,

हिंदी अधिकारी

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय, मुंबई
O/o the DIRECTOR GENERAL OF AUDIT (CENTRAL),MUMBAI
C-25,Audit Bhavan, Bandra Kurla Complex,
Mumbai- 400 051
e-mail – pdacentralmumbai@cag.gov.in

सत्यमेव जयते

सं.म.नि.ले.प./कें./रा.भा.अ./पत्रिका वन्दे मातरम् /2023-24/ 99 दिनांक: 05.03.2024

Admin (Hindi) cell

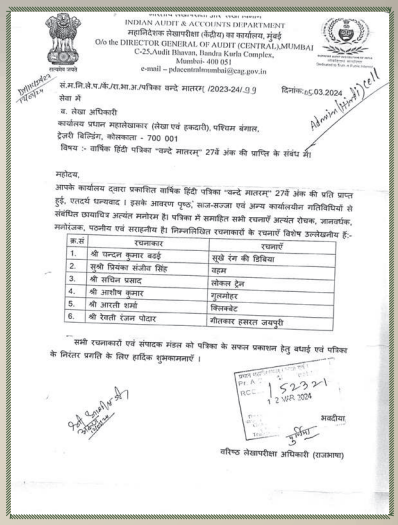

सेवा में

व. लेखा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल,
ट्रेज़री बिल्डिंग, कोलकाता - 700 001

विषय :- वार्षिक हिंदी पत्रिका "वन्दे मातरम्" 27वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक हिंदी पत्रिका "वन्दे मातरम्" 27वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद । इसके आवरण पृष्ठ, साज-सज्जा एवं अन्य कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र अत्यंत मनोरम है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय है। निम्नलिखित रचनाकारों के रचनाएँ विशेष उल्लेखनीय हैं:-

क्र.सं	रचनाकार	रचनाएँ
1.	श्री चन्दन कुमार बढ़ई	सूखे रंग की डिबिया
2.	सुश्री प्रियंका संजीव सिंह	वहम
3.	श्री सचिन प्रसाद	लोकल ट्रेन
4.	श्री आशीष कुमार	गुलमोहर
5.	श्री आरती शर्मा	क्लिकबेट
6.	श्री रेवती रंजन पोदार	गीतकार हसरत जयपुरी

सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई एवं पत्रिका के निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ ।

152321
12 MAR 2024

भवदीया

पूर्णिमा

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

दूरभाष/Telephone- 2223251 फैक्स/Fax- 0612-2225077

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय, बिहार, पटना
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A & E), BIHAR, PATNA

पत्रांक-हि.अ./वी. व हक./पत्रिका प्रति०/23-24/ 1 [illegible]
दिनांक- 11.03.2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (प्रशासन हिंदी सेल),
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल,
कोलकाता-700001

विषय: कार्यालय द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक हिन्दी पत्रिका "वंदे मातरम्" के 27वें अंक का अभिस्वीकृति एवं प्रतिक्रिया।

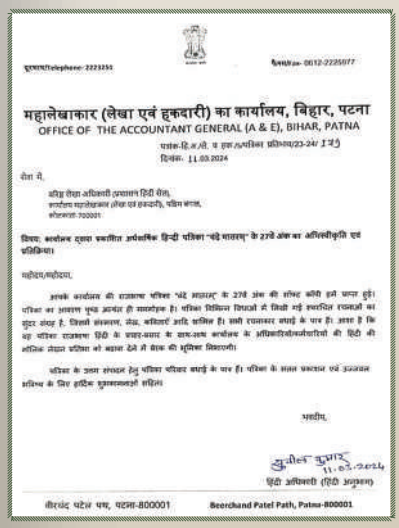

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "वंदे मातरम्" के 27वें अंक की सॉफ्ट कॉपी हमें प्राप्त हुई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अत्यंत ही मनमोहक है। पत्रिका विभिन्न विधाओं में लिखी गई स्वरचित रचनाओं का सुंदर संग्रह है, जिसमें संस्मरण, लेख, कविताएँ आदि शामिल हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में [illegible] की भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के उत्तम संपादन हेतु पत्रिका परिवार बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के सतत प्रकाशन एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

भवदीय,

सुनील कुमार
11.03.2024
हिंदी अधिकारी (हिंदी अनुभाग)

वीरचंद पटेल पथ, पटना-800001 Beerchand Patel Path, Patna-800001

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य
ए.जी.सी.आर. भवन, आई.पी. एस्टेट,
नई दिल्ली-110 002

OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT
INDUSTRY AND CORPORATE AFFAIRS
A.G.C.R. BUILDING I.P. ESTATE,
NEW DELHI-110 002

Admin (Hindi) cell

क्र. प्रशासन/राजभाषा पत्रि./23/2023-24/33 दिनांक 05.03.2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
प्रशासन/हिंदी सेल
कार्यालय महालेखाकार पश्चिम बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग कोलकाता -700 001

विषय: हिंदी पत्रिका "वंदे मातरम्" के 27 वें अंक की प्रतिक्रिया के संबंध में ।

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त विषय से संबंधित आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "वंदे मातरम" के 27 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख कविताएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं, विशेषकर श्री मनीष कुमार महतो का लेख "मौन साधना", अमित कुमार का लेख "सौभाग्य" और सुश्री सुनीता रावत की कविता "जरूरत कैसी" आदि उल्लेखनीय एवं सराहनीय है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई।

15119

संपादक एवं हिंदी अधिकारी
राजभाषा

दूरभाष/Phone : +91-11-23702357, फैक्स/Fax : +91-11-23702308, E-mail : [illegible]

Admin Hindi Cell

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा II), पश्चिम बंगाल
Office of the Pr. Accountant General
(Audit-II), West Bengal

संख्या : हिंदी कक्ष/पत्रिका पावती /II/ दिनांक: [illegible]

सेवा में
वरिष्ठ लेखा अधिकारी हिन्दी कक्ष,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी), पश्चिम बंगाल,
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता - 700001

To
Sr. Accounts Officer Hindi Cell,
O/o the Accountant General (A&E), West Bengal,
Treasury Buildings, Kolkata - 700001

विषय: अर्द्धवार्षिक हिन्दी पत्रिका "वंदे मातरम्" के 27 वें अंक के प्रतिक्रिया प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित **अर्द्धवार्षिक हिन्दी पत्रिका "वंदे मातरम्" के 27 वें अंक** की प्राप्ति हुई। [illegible] गीतकार हसरत जयपुरी, [illegible] जीवन के कुछ पहलू, [illegible] लोकल ट्रेन [illegible]

[illegible]

भवदीय,

व. लेखापरीक्षा अधिकारी हिंदी कक्ष

[illegible]

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
पंजाब, चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT
GENERAL (AUDIT) PUNJAB,
CHANDIGARH-160017
फोन : 0172-2783168, फैक्स 0172-2703149
Email-agaupunjab@cag.gov.in

क्रमांक-हि.क./समीक्षा/23-24/160 दिनांक: 06/03/2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
पश्चिम बंगाल, कोलकाता-700001

विषय: अर्द्धवार्षिक हिन्दी पत्रिका "वंदे मातरम्" के 27 वें अंक की समीक्षा।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "वंदे मातरम्" के 27 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय हैं विशेष तौर पर श्री जितेन्द्र शर्मा की "साइबर सुरक्षा और भारत", सुश्री सुष्मिता सरकार की "सुरीली चिड़िया", श्री आशीष कुमार की "गुलमोहर", श्री जयंत कुमार सील की "आगरा और फतेहपुर सीकरी की मनोहारी यात्रा" एवं श्री अमित कुमार की "सौभाग्य" आदि रचनाएँ सारगर्भित एवं सराहनीय हैं।

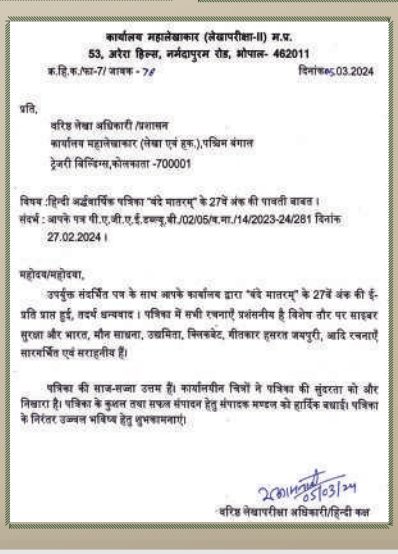

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ।

भवदीया,

(हिंदी अधिकारी)

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) म.प्र.
53, अरेरा हिल्स, नर्मदापुरम रोड, भोपाल- 462011

क.हि.क./फा-7/ जावक - 78 दिनांक 05.03.2024

प्रति,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी /प्रशासन
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक.),पश्चिम बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग्स,कोलकाता -700001

विषय :हिन्दी अर्द्धवार्षिक पत्रिका "वंदे मातरम्" के 27वें अंक की पावती बावत ।
संदर्भ : आपके पत्र पी.ए.जी.ए.ई.डब्ल्यू.बी./02/05/व.मा./14/2023-24/281 दिनांक 27.02.2024 ।

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा "वंदे मातरम्" के 27वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद । पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय है विशेष तौर पर साइबर सुरक्षा और भारत, मौन साधना, उद्यमिता, क्लिकबेट, गीतकार हसरत जयपुरी, आदि रचनाएँ सारगर्भित एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम हैं। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

05/03/24

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी कक्ष

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	शीर्षक	रचनाकार (सर्व सुश्री / श्री)	पदनाम	विद्या	पृष्ठ संख्या
1.	सुरक्षा	अतुल प्रकाश	महालेखाकार	लेख	1
2.	ओवर द टॉप प्लेटफ़ॉर्म	जितेंद्र शर्मा	सहायक लेखा अधिकारी	लेख	3
3.	एक कहानी	सुभाष चंद्र मंडल	लेखाकार	कहानी	6
4.	जंग: एक त्रासदी	संजय कुमार	डीईओ	कविता	7
5.	तू चलते जा	सत्यम कुमार	डीईओ	कविता	8
6.	ज़िंदगी जीने का फलसफ़ा	राजीव कपूर	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	संस्मरण	9
7.	दीवाली	आशीष कुमार	कनिष्ठ अनुवादक	कहानी	10
8.	तेरे मेरे मिलन की ये रैना...	रेवती रंजन पोहार	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	लेख	14
9.	नियति	नीरज कुमार पांडेय	सहायक लेखा अधिकारी	संस्मरण	17
10.	मेरी श्री माता वैष्णों देवी, मथुरा तथा वृंदावन की यात्रा	मंतोष यादव	एमटीएस	यात्रा-वृतांत	19
11.	एक तीर्थ यात्री की गंगासागर यात्रा	सौमी बंदोपाध्याय	डीईओ	यात्रा-वृतांत	22
12.	दया और विश्वास	धनेश कुमार	डीईओ	कविता	24
13.	त्योहार	अभिजीत दत्ता	सहायक लेखा अधिकारी	कविता	25
14.	कृत्रिम बुद्धिमत्ता	तापसी आचार्य बसाक	सहायक लेखा अधिकारी	कहानी	26
15.	बदलाव	सुस्मिता सरकार	वरिष्ठ लेखाकार	कहानी	28
16.	सहिष्णुता	गौरव कुमार	लिपिक/टंकक	कहानी	31
17.	फिराक गोरखपुरी	चन्द्रशेखर भगत	पर्यवेक्षक	लेख	34
18.	साजिश	अनिल कुमार	लेखाकार	कहानी	37
19.	मधुबनी पेंटिंग	रितु कुमारी	पत्नी- श्री अतुल प्रकाश, महालेखाकार	लेख	41
20.	ममता	प्रियंका संजीव सिंह	कनिष्ठ अनुवादक	कहानी	43
21.	भारत-मालदीव संबंध: एक झलक	अनूप कुमार सिन्हा	सहायक लेखा अधिकारी	लेख	47
22.	भारत का चंद्रविजय अभियान	आनंद कुमार पांडेय	सहायक लेखा अधिकारी	लेख	49
23.	छोटी-छोटी बातें	आस्था गुप्ता	लेखाकार	कहानी	50
24.	राजभाषा	अरुण कुमार	हिंदी अधिकारी	लेख	53
25.	हास्य-व्यंग्य	अरुण कुमार	हिंदी अधिकारी	हास्य-व्यंग्य	56
26.	कुछ वर्ष पहले	अमित कुमार	वरिष्ठ लेखाकार	कहानी	57
27.	क्रिकेट विश्वकप फ़ाइनल एवं छठ महापर्व	अतुल कुमार	लेखाकार	लेख	61
28.	प्रतिभा बनाम लापरवाही	सचिन प्रसाद	कनिष्ठ अनुवादक	कहानी	65
29.	कार्यालय में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन	सुनीता राउत	एस.टी.एस.	लेख	69

सुरक्षा

आजकल राज्यों में पर्यावरण की बहुत सारी समस्याएं देखी गई हैं। जैसे जल का अभाव या दूषित जल की समस्या, प्रदूषित वायु की समस्या, खाने की समस्या इत्यादि इत्यादि। आजकल मनुष्य भी इतना स्वार्थी हो गया है कि हम समझ ही नहीं पाते हैं कि हमें उन जरूरी चीजों की सुरक्षा करनी चाहिए जो कि जीवन के लिए अति आवश्यक हैं और खुद के लिए भी अत्यंत जरूरी हैं। स्वामी विवेकानंद की राजयोग पुस्तक से एक बात याद आती है, जो मैं यहां कहना चाहता हूं। स्वच्छ मन से, स्वच्छ विचार की शक्ति से ही हम अपने शरीर का कायाकल्प कर सकते हैं। उन्होंने दोहराया कि अष्टांग योग के आठ अंग काफी महत्वपूर्ण एवं प्रथम सोपान हैं। जिसमें यम-नियम एवं प्रथम सोपान काफी महत्वपूर्ण है। स्वामी विवेकानंद का कहना है कि अच्छे विचारों से ऋषि या अन्य अच्छे व्यक्तियों की अच्छी शक्तियां बनती हैं और वही उनकी रक्षा करती हैं। उनका कहना है कि सिद्ध संत चमत्कार नहीं करते, चमत्कार अपने आप हो जाते हैं। यह देखकर मुझे लगता है कि संसार में जो बहुत सारी समस्याएं हैं वे मानव के स्वार्थ के कारण ही उत्पन्न हुई हैं और अपने प्रबल रूप में उभर कर सामने आ रही हैं।

मेरा भी ऐसा अनुभव है कि जो स्वामी विवेकानंद जी ने कहा है वह शाश्वत सत्य है। मैंने अपने सद्गुरुदेव के पास वास्तव में चमत्कार होते देखा है। एक सज्जन व्यक्ति या महात्मा दूसरों के कल्याण के सिवा और कुछ नहीं सोचते हैं। मैंने अपने सद्गुरुदेव श्री देवराहा हंस बाबा जी को देखा है। चाहे ठंड हो या गर्मी हो, अपनी योग साधना के माध्यम से वे सदैव उसी स्वरूप में ही दिखते हैं। लोग उनके आस-पास जाते हैं और उनके शक्तिपुंज से लोगों का कल्याण हो जाता है। जब मैं जो सोचता हूं कि हमारे पर्यावरण की समस्याओं का क्या निदान होगा, तब मैं बहुत चिंतित हो जाता हूं। उन समस्याओं में जल की विकट समस्या भी शामिल है। चाहे वह भारत हो या विदेश, बहुत सारे देशों में हम देख सकते हैं कि जल की समस्या विकट पर विकट होती जा रही है। जल के बिना हम कुछ भी नहीं कर सकते हैं। संयुक्त राष्ट्र के 17 सतत विकास के लक्ष्य 2030 तक निर्धारित हैं जो सभी आयामों को पूरा करते हैं। सतत विकास के लक्ष्य भारत के लिए भी उपयोगी हैं। इसमें जल के संकट व बाकी समस्याओं का जिक्र है और उसके निदान के लिए प्रयास दिया गया है। जब यह देखता हूं कि बंगाल में तो अधिक जल है, तो यहाँ जल की समस्या नहीं होनी चाहिए। लेकिन यहां भी जल के स्रोत काफी दूषित हो रहे हैं और अन्य समस्याओं से ग्रसित हैं जैसे खारा पानी, आर्सेनिक इत्यादि। पानी का स्तर नीचे गिरता जा रहा है। बढ़ती हुई जनसंख्या इस और भी समस्या को और भी बढ़ा रही है।

किस प्रकार हमारा प्रयास हो कि हम इन समस्याओं का निदान कर सकें और पानी को अपने और भविष्य के लिए सुरक्षित रख सकें। हमारे देश की आजादी में कई शहीदों ने अपने जान न्यौछावर करके देश को आजाद किया है परंतु मुझे आज लगता है कि हम किसी दूसरी समस्या के जाल में फंसे हुए हैं और हम उससे निकल नहीं पा रहे हैं। इस जाल से कौन निकालेगा? इसका उत्तर कौन देगा? जिस तरह से हम सभी की लाइफ़स्टाइल बदल रही है, पानी की उपयोगिता बढ़ती जा रही है। इससे तो स्थिति और बदतर होती जाएगी। हम तो जल के उन संसाधनों का उपयोग कर रहे हैं जो बहुत हजारों साल से भी बचाए गए थे। मैं एक बात बता ही दूं कि मैंने एक स्वप्न देखा कि हाथी का एक झुंड जंगल में घूम रहे हैं और उनको कहीं भी पानी नहीं मिल रहा है। तो वे जंगल में एक जगह जाकर अपने सूढ़ों को उठाकर ऊपर वाले से प्रार्थना कर रहे थे कि कुछ उपाय निकालिए। वैसे तो यह एक स्वप्न था, लेकिन इसने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया कि मनुष्य के यहां इस समस्या का समाधान नहीं हो सकता है? यह सोचकर देखा कि पानी तो सिर्फ हम मनुष्यों के लिए ही नहीं अपितु जंगल में रहने वाले वन्य-जगत के जीव-जंतुओं सहित सबके लिए बहुत अनमोल है। तो किस प्रकार इसकी सुरक्षा हो? इसकी सुरक्षा कैसे होना चाहिए। क्या यह अत्यंत जरूरी नहीं है कि पर विचार किया जाए?

क्या हम हाथ पर हाथ रखे बैठे रहें या कुछ कार्य करें? मैंने किसी से छोटी सी कहानी सुनी थी जो मैं यहां दोहराना चाहता हूं। एक चिड़िया थी जिसका नाम हमिंग बर्ड है। एक बार जंगल में आग लग गई और सारे जानवर परेशान हो गए। सभी चारों ओर भागने का प्रयास करने लगे और सोचने लगे कि उन्हें क्या करना चाहिए और वे क्या कर सकते हैं। तभी सबने देखा कि एक छोटी सी चिड़िया अपने छोटी सी चोंच में पानी भर के ला रही है और बार-बार आग मे गिरा रही है। वह बार-बार जाती, बार-बार आती। बहुत से जानवरों ने कहा कि यह तो पागलपन है, इससे क्या होगा? कुछ नहीं होने वाला है। तब कुछ जानवरों ने चिड़िया को टोककर कहा- ऐ चिड़िया, तुम ये क्या कर रही हो? कुछ नहीं होगा। बैठी रहो। चिड़िया ने बोला कि जो मेरी शक्ति है, जो मेरी क्षमता है, उसमें जो कुछ भी मैं कर सकता हूं, वह तो मुझे करना पड़ेगा। मैं हाथ पर हाथ रखे बैठ तो नहीं सकता हूँ। इस कहानी के माध्यम से मुझे यह समझ में आया कि अगर एक छोटी सी चिड़िया इतनी कोशिश कर सकती है, इच्छा शक्ति से मजबूत है तो क्या हम लोगों की इच्छाशक्ति मजबूत नहीं हो सकती है? क्या हम खुद अपने बल पर इन समस्याओं का निदान करने के लिए प्रयास नहीं कर सकते है? क्या हम किसी और पर ही निर्भर रहेंगे?

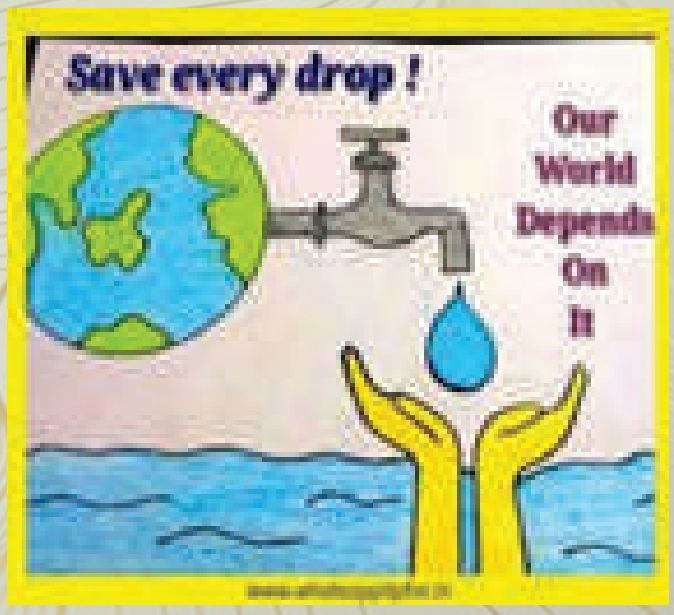

इन बातों पर विचार-विमर्श करना होगा। जब तक जल की समस्या को हम खुद नहीं समझेंगे, इसकी सुरक्षा नही करेंगे तो हमारे आगे की जो भी भविष्य है उनको और भी ज्यादा ही दिक्कतें होंगी। बहुत अच्छी बात है कि सरकार भी बहुत कुछ कर रही है, अन्य लोग भी कुछ कर रहे हैं। यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि सभी लोग कुछ ना कुछ करें। जब तक सबका साथ नहीं होगा तब तक हम बहुत कम समय में इसका निदान नहीं कर पाएंगे। इसलिए हाथ पर हाथ रखने से बेहतर है कि हम कुछ-कुछ करें। जो विज्ञान जानते हैं वह विज्ञान का प्रयोग करें। जो अध्यात्म जानते हैं, अध्यात्म का प्रयोग करें। सब विभिन्न माध्यमों से अपना प्रयास करें जिससे कि जो समस्याएं मनुष्य या प्राणियों पर आई हैं उसमें हम सुधारात्मक कार्रवाई कर सकें। कोरोना काल में हम ऑक्सीजन खरीद रहे थे। क्या ऐसे दिन का ही इंतजार करना है कि पानी के साथ भी यही समस्या हो? अब इसपर विचार करना चाहिए कि क्या पानी मेरे पास है तो हम दूसरे को दान दे सकते हैं। अगर हमारे देश के भीतर कहीं भी कोई परेशानी या कठिनाई में है तो उस समस्या का समाधान तो हम लोगों को मिलकर निकालना चाहिए। ऐसा नहीं कि वह एक राज्य या एक क्षेत्र ही उस समस्या का समाधान कर सकता है। इन समस्याओं का समाधान हो सकता है इसलिए जरूरी है कि हम सम्पूर्ण रूप से विचार करें। सार्वभौमिक रूप से विचार करें और इस समस्या का निवारण करें। मैंने देखा है कि कुछ लोग बोलते हैं और वह हो जाता है। मैं सोचता हूं कि उनको यही बोलना चाहिए कि पानी की सुरक्षा हो।

अपने संसाधनों की सुरक्षा प्रत्येक मनुष्य को अपने स्तर पर से ही शुरुआत करनी होगी। जल के माध्यम से मैं ये प्रकाश में लाना चाहता हूँ कि जल, खाद्य, जमीन, वन इत्यादि बहुत ही अनमोल हैं। अतः हमें स्वयं प्रयत्न करना चाहिए। अगर हम अपने संसाधनों की सुरक्षा का प्रयास करेंगे तब पहले सारे समाज की सुरक्षा के बारे में प्रयास करना होगा।

सभी को शुभकामनाएं इस प्रयास के लिए, जिससे अपना जीवन और दूसरों का भी जीवन खुशहाल रहे।

श्री अतुल प्रकाश
महालेखाकार

ओवर-द-टॉप (ओटीटी) प्लेटफार्म

ओवर-द-टॉप (ओटीटी) प्लेटफॉर्म पारंपरिक केबल या सैटेलाइट टेलीविजन सेवाओं को दरकिनार करते हुए इंटरनेट पर वीडियो सामग्री वितरित करते हैं। ओटीटी प्लेटफार्मों के उदाहरणों में नेटफ्लिक्स, अमेज़न प्राइम वीडियो और डिज्नीप्लस आदि शामिल हैं। ओटीटी प्लेटफार्मों ने मनोरंजन उद्योग में क्रांति ला दी है और डिजिटल युग में दर्शकों द्वारा सामग्री का उपभोग करने के तरीके को नया आकार दिया है। ओटीटी की अवधारणा 2000 के दशक की शुरुआत में इंटरनेट स्ट्रीमिंग सेवाओं के उदय के साथ उभरी। ओटीटी अग्रदूतों में से एक नेटफ्लिक्स ने स्ट्रीमिंग मॉडल में बदलाव से पहले डीवीडी रेंटल-बाय-मेल सेवा के रूप में शुरुआत की थी। इसने लोगों की मीडिया सामग्री तक पहुंच और उपभोग करने के तरीके में एक आदर्श बदलाव की शुरुआत को चिह्नित किया।

जैसे-जैसे इंटरनेट के बुनियादी ढांचे में सुधार हुआ, कई अन्य कंपनियों ने ओटीटी क्षेत्र में प्रवेश किया। हुलु, अमेज़ॅन प्राइम वीडियो और डिज्नीप्लस जैसे प्लेटफार्मों ने पारंपरिक टेलीविज़न नेटवर्क और केबल प्रदाताओं को चुनौती देते हुए विविध प्रकार की सामग्री पेश की। मूल सामग्री उत्पादन की शुरुआत के साथ ओटीटी प्लेटफार्मों के बीच प्रतिस्पर्धा तेज हो गई है। विशेष रूप से नेटफ्लिक्स ने मूल श्रृंखला और फिल्में बनाने में भारी निवेश किया जिससे 'स्ट्रीमिंग युद्ध' तक शुरू हो गए हैं। इसी प्रकार का भारी निवेश अन्य प्लेटफार्मों ने भी किया। इस प्रवृत्ति ने वैश्विक दर्शकों को आकर्षित करते हुए ओटीटी प्लेटफार्मों पर उपलब्ध सामग्री की गुणवत्ता को बढ़ाया।

आधुनिक मनोरंजन में ओवर-द-टॉप (ओटीटी) प्लेटफार्मों का महत्व:

ओवर-द-टॉप (ओटीटी) प्लेटफॉर्म आधुनिक मनोरंजन परिदृश्य की आधारशिला बन गए हैं जो दर्शकों के कंटेंट तक पहुंचने और उससे जुड़ने के तरीके को मौलिक रूप से बदल रहे हैं। इंटरनेट पर उपयोगकर्ताओं को विविध प्रकार की सामग्री सीधे वितरित करने की उनकी क्षमता के कारण इन डिजिटल स्ट्रीमिंग सेवाओं को अत्यधिक महत्व प्राप्त हुआ है। ओटीटी प्लेटफार्मों का प्राथमिक महत्व उनके द्वारा पेश की जाने वाली सामग्री की विशाल और विविध श्रृंखलाओं में निहित है। फिल्मों और टेलीविजन श्रृंखलाओं से लेकर वृत्तचित्रों (डॉक्यूमेंट्री), स्टैंड-अप कॉमेडी और मूल प्रस्तुतियों तक ओटीटी प्लेटफॉर्म एक व्यापक वीडियो सामग्री संग्रह प्रदान करते हैं जो मनोरंजन और पसंद की एक विस्तृत श्रृंखला को पूरा करता है। विविध सामग्री तक यह पहुंच पारंपरिक टेलीविजन के बिल्कुल विपरीत है जहां प्रोग्रामिंग अक्सर समय स्लॉट और नेटवर्क निर्णयों द्वारा सीमित होती है।

ओटीटी प्लेटफार्मों को व्यापक रूप से अपनाने का एक प्रमुख कारण उनके द्वारा दी जाने वाली सुविधा है। उपयोगकर्ता अपनी सुविधानुसार सामग्री तक पहुंच सकते हैं, यह चुनकर कि उन्हें कब और कहां देखना है। ओटीटी सेवाओं की ऑन-डिमांड प्रकृति निश्चित प्रसारण शेड्यूल का पालन करने की आवश्यकता को समाप्त करती है जिससे उन दर्शकों को लचीलापन मिलता है जिनका व्यस्त जीवन पारंपरिक प्रोग्रामिंग के साथ संरेखित नहीं हो सकता है। ओटीटी प्लेटफार्मों ने सांस्कृतिक सामग्री के वैश्विक आदान-प्रदान की सुविधा प्रदान की है। दुनिया के विभिन्न हिस्सों से सामग्री निर्माता अब सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देते हुए वैश्विक दर्शकों तक पहुंच सकते हैं। दर्शक, भौगोलिक स्थिति की परवाह किए बिना, विविध संस्कृतियों, भाषाओं और दृष्टिकोणों से सामग्री का पता लगा सकते हैं और उसका आनंद ले सकते हैं। इस समावेशिता ने न केवल कहानी कहने का दायरा बढ़ाया है बल्कि क्षेत्रीय सामग्री निर्माताओं को वैश्विक दर्शकों तक पहुंचने के लिए एक मंच भी प्रदान किया है।

ओटीटी प्लेटफार्मों ने स्वतंत्र फिल्म निर्देशकों, निर्माताओं और कलाकारों के लिए एक मंच प्रदान करके सामग्री निर्माण का एक समान अधिकार प्रदान किया है। ये प्लेटफ़ॉर्म अक्सर रचनाकारों को पारंपरिक प्रतिबंधों के बिना अपना काम प्रदर्शित करने के अवसर प्रदान करते हैं जिससे मीडिया परिदृश्य में रचनाकार अपनी रचना को और अधिक समावेशी तथा विविध निरूपण करने में सक्षम होता है। ओटीटी प्लेटफार्म दर्शकों के द्वारा पूर्व में देखी गई सामग्री के अनुसार व्यक्तिगत सिफारिशें प्रस्तुत करने की सुविधा भी प्रदान करते हैं। देखने की आदतों और प्राथमिकताओं के डेटा विश्लेषण के माध्यम से ये प्लेटफ़ॉर्म व्यक्तिगत पसंद के अनुरूप सामग्री सुझाव प्रदान करते हैं। यह न केवल उपयोगकर्ता को अपने पसंद की सामग्री को सहजता से खोजने में सहायता करता है बल्कि उपयोगकर्ता को और अधिक आकर्षक और गहन मनोरंजन अनुभव में भी योगदान देता है। ओटीटी प्लेटफार्मों का महत्व तकनीकी प्रगति के साथ जुड़ा हुआ है। हाई-स्पीड इंटरनेट, बेहतर स्ट्रीमिंग गुणवत्ता और स्मार्ट उपकरणों के प्रसार ने हाई-डेफिनिशन सामग्री की निर्बाध डिलीवरी की सुविधा प्रदान की है। ये तकनीकी प्रगति दर्शकों के लिए अधिक गहन और आनंददायक दृश्य-अनुभव में योगदान करती है।

ओटीटी प्लेटफार्मों का आर्थिक प्रभाव काफी बड़ा है। वे डिजिटल अर्थव्यवस्था के विकास में योगदान देते हैं, सामग्री निर्माण, प्रौद्योगिकी विकास और संबंधित क्षेत्रों में नौकरियां पैदा करते हैं। सदस्यता-आधारित सेवाओं, भुगतान-प्रति-दृश्य और विज्ञापन सहित विविध राजस्व मॉडल, सामग्री निर्माताओं और प्लेटफ़ॉर्म ऑपरेटरों के लिए स्थायी राजस्व के स्रोत प्रदान करते हैं। ओटीटी प्लेटफार्मों के उदय ने पारंपरिक मीडिया व्यवसाय मॉडल को बाधित कर दिया है। जैसे-जैसे अधिक दर्शक केबल और सैटेलाइट टीवी से ओटीटी सेवाओं की ओर स्थानांतरित हो रहे हैं, पारंपरिक प्रसारक इस बदलते परिदृश्य के अनुरूप ढलने के लिए मजबूर हो रहे हैं। गतिशीलता में इस बदलाव के कारण प्रतिस्पर्धा, नवाचार और पारंपरिक वितरण चैनलों का पुनर्मूल्यांकन बढ़ गया है।

समकालीन मनोरंजन पारिस्थितिकी तंत्र में ओटीटी प्लेटफार्मों के महत्व को कम करके आंका नहीं जा सकता है। सामग्री उपभोग की आदतों को नया आकार देने से लेकर स्वतंत्र रचनाकारों को सशक्त बनाने और वैश्विक सांस्कृतिक आदान-प्रदान को प्रभावित करने तक, ओटीटी प्लेटफॉर्म डिजिटल युग में एक प्रेरक शक्ति बन गए हैं। जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी आगे बढ़ रही है और उपभोक्ता प्राथमिकताएं विकसित हो रही हैं, ओटीटी प्लेटफार्मों का प्रभाव बढ़ने की संभावना है जिससे आधुनिक मनोरंजन के परिवर्तनकारी और अभिन्न घटक के रूप में उनकी भूमिका और मजबूत होगी।

भारतीय मनोरंजन उद्योग पर ओटीटी प्लेटफार्मों का प्रभाव:

ओवर-द-टॉप (ओटीटी) प्लेटफार्मों ने भारतीय मनोरंजन उद्योग पर एक परिवर्तनकारी प्रभाव डाला है, जिससे दर्शकों द्वारा सामग्री का उपभोग करने के तरीके को फिर से परिभाषित किया गया है और टेलीविजन और सिनेमा के पारंपरिक मानदंडों को चुनौती दी गई है। ओटीटी प्लेटफार्मों के उद्भव ने भारतीय दर्शकों के सामग्री उपभोग के तरीके में क्रांति ला दी है। दर्शकों को अब यह चुनने की आज़ादी है कि वे क्या, कब और कहाँ देखना चाहते हैं। ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म विविध रुचियों और प्राथमिकताओं को पूरा करते हुए शैलियों, भाषाओं और क्षेत्रीय सामग्री की एक विस्तृत श्रृंखला पेश करते हैं। इस समावेशिता ने न केवल कहानी

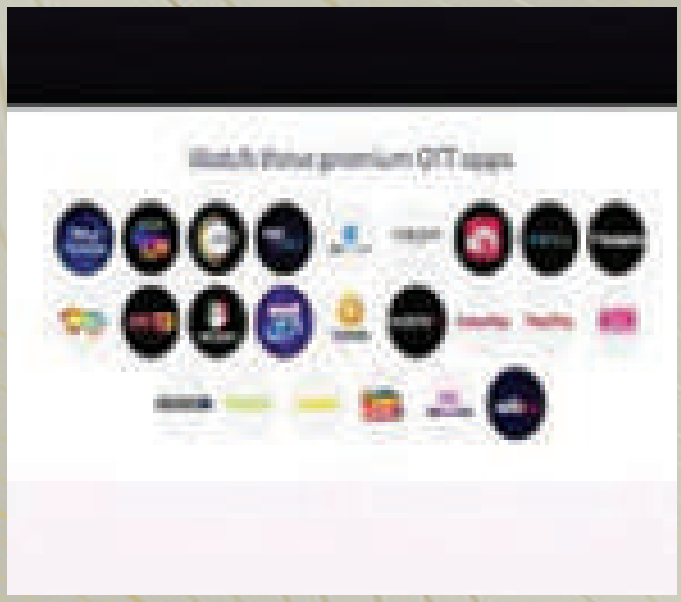

कहने का दायरा बढ़ाया है बल्कि क्षेत्रीय सामग्री निर्माताओं को वैश्विक दर्शकों तक पहुंचने के लिए एक मंच भी प्रदान किया है।

भारतीय मनोरंजन उद्योग पर ओटीटी प्लेटफार्मों के सबसे उल्लेखनीय प्रभावों में से एक स्वतंत्र फिल्म निर्माताओं और सामग्री निर्माताओं का सशक्तिकरण है। ये प्लेटफ़ॉर्म अनूठे और विशिष्ट सामग्री के लिए जगह प्रदान करते हैं जिन्हें पारंपरिक सिनेमा या टेलीविज़न में जगह नहीं मिल पाती है। परिणामस्वरूप भारत की सांस्कृतिक विविधता की समृद्धि को प्रदर्शित करने वाली मूल और प्रायोगिक सामग्री में वृद्धि हुई है। ओटीटी प्लेटफार्मों ने भारतीय सामग्री की वैश्विक पहुंच को सुविधाजनक बनाया है। इन प्लेटफार्मों के लिए निर्मित शो और फिल्में अक्सर अंतरराष्ट्रीय पहचान हासिल करते हैं जो वैश्विक मंच पर भारत की सॉफ्ट पावर और सांस्कृतिक प्रभाव में योगदान करते हैं। भारतीय मनोरंजन के इस वैश्वीकरण ने अंतरराष्ट्रीय भागीदारों के साथ सहयोग और सह-निर्माण के नए रास्ते खोल दिए हैं।

ओटीटी प्लेटफार्मों के उदय ने भारत में पारंपरिक उद्योग की गतिशीलता को बाधित कर दिया है। स्थापित फिल्म और टेलीविजन कलाकार अब डिजिटल प्रस्तुतियों में अवसर तलाश रहे हैं जिससे बॉलीवुड और डिजिटल स्पेस के बीच की रेखाएं धुंधली हो रही हैं। इस बदलाव ने अधिक आसान और गतिशील मनोरंजन पारिस्थितिकी तंत्र को जन्म दिया है, जिसमें प्रतिभाएं विभिन्न माध्यमों के बीच निर्बाध रूप से आगे बढ़ रही हैं। ओटीटी प्लेटफार्मों ने भारतीय मनोरंजन उद्योग में नए मुद्रीकरण मॉडल पेश किए हैं। सदस्यता-आधारित सेवाएँ, विज्ञापन-समर्थित सामग्री और भुगतान-प्रति-दृश्य विकल्प, व्यवहार्य राजस्व-स्रोत बन गए हैं। ओटीटी प्लेटफार्मों से जुड़ी तकनीकी प्रगति ने भारत में सामग्री की पहुंच में सुधार किया है। हाई-स्पीड इंटरनेट और स्मार्टफोन के प्रसार ने शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में दर्शकों को सामग्री की एक विस्तृत श्रृंखला तक पहुंचने में सक्षम बनाया है, जिससे दर्शकों की संख्या और प्लेटफ़ॉर्म सदस्यता में वृद्धि हुई है।

भारतीय मनोरंजन उद्योग पर ओटीटी प्लेटफार्मों का प्रभाव गहरा और बहुआयामी है। सामग्री उपभोग की आदतों को बदलने से लेकर स्वतंत्र रचनाकारों को सशक्त बनाने और वैश्विक मान्यता को बढ़ावा देने तक, इन प्लेटफार्मों ने उद्योग के विकास को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जैसे-जैसे ओटीटी प्लेटफॉर्म भारतीय दर्शकों की उभरती प्राथमिकताओं के अनुरूप नवाचार और अनुकूलन करना जारी रखते हैं, उनका प्रभाव गहरा होने की संभावना है, जो भारतीय मनोरंजन के परिदृश्य में एक परिवर्तनकारी युग का प्रतीक है।

श्री जितेन्द्र शर्मा
सहायक लेखा अधिकारी

एक कहानी

क्या उनका कोई नाम है? मैंने बहुत उत्सुकता से पूछा

-हाँ हाँ क्यो नहीं, ये अमेका है। मोहनलाल जी ने कहा।

मैंने पूछा- क्या ये मेरे लिए हर काम कर सकती है?

-आपके घर का सारा काम अमेका भलीभाँति कर सकती है। पर आपको हर महीना पाँच हजार अग्रिम देना पड़ेगा; नहीं तो हम अमेका को वापस बुला लेंगे। एक बात और, कृपया अमेका से सम्मानपूर्वक बात कीजिएगा, नहीं तो वो बुरा मान जाएगी और करारा जवाब भी देगी।

-जी मोहनलाल जी, आप निश्चिंत रहिए, मैंने कहा। पेमेंट और कागज़ात का काम पूरा करके अमेका को लेकर घर आ गया। -अमेका, क्या एक कप चाय मिल सकती है?

-क्यों नहीं! अभी लाई।

-जरा डेस्क पर रखी किताब देना।

-जी सर जी।

इस तरह अमेका घर का हर काम बहुत निपुणता से करने लगी। सिर्फ काम-काज ही नहीं अमेका को हर विषय के बारे में ज्ञान था। मैं कभी उससे गाना-बजाने के बारे में तो कभी खेल-कूद के बारे में चर्चा करता था। एक दिन मुहल्ले के कुछ पड़ोसी मेरे घर आए। अमेका ने सबको चाय-नाश्ता दिया। सभी अमेका से मिल कर बहुत खुश थे। ऐसे ही दिन बीतता गया, सब कुछ ठीक चल रहा था। मेरे कुछ ग़लत निर्णय के कारण करोबार में घाटा हो गया, और मैं आर्थिक मंदी से गुज़रने लगा। इतने में एक दिन मेरे मामाजी मुझसे मिलने आये। परिवार नहीं होने के कारण मामाजी बीच-बीच में मेरे पास घुमने आ जाया करते थे, और हफ्ता भर रहने के बाद चले जाते थे। मामाजी के आते ही मैंने उनका स्वागत किया। अमेका चाय-नास्ता लेकर आई। -अरे ये कौन है? मामाजी ने पूछा

-मामाजी ये अमेका है। घर का सारा कामकाज ये ही संभालती है। और हाँ, ये बहुत बुद्धिमान भी है। आप इससे प्रेमपूर्वक व्यवहार कीजियेगा, नहीं तो ये बुरा मान जाती है। दो दिन बीत गए। अमेका मामाजी का पूरा ध्यान रखती थी। मामाजी अमेका के काम-काज और व्यवहार से खुश थे। मेरी आर्थिक स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ; मेरा व्यापार में घाटा बढ़ता चला गया और मैं इस सोच में पड़ गया कि अमेका की 5000/- रुपये महीना फीस है वो मैं कैसे चुकाउँ? मामाजी भी इस बार लंबी छुट्टी का मन बनाकर आए थे। मैं करूँ तो क्या करूँ? किसी से खुल कर बात भी नहीं कर सकता। मुझे समझ आ गया था कि अमेका को एक महीने से ज्यादा नहीं रख पाऊंगा। वो इस परिवार से इतना घुलमिल गई थी कि अचानक उसे बिदा करना कुछ ठीक नहीं लग रहा था। इससे अच्छा है कि, उसको परिस्थिती की जानकारी दे दूँ। पहले से सब कुछ पता रहने पर अमेका को भी बिदा के समय खराब नहीं लगेगा। अतः मैंने अमेका को बुलाकर सारी बात उसके सामने रखी। उसने कहा- सर, आप चिंता मत कीजिए, कोई न कोई हल जरूर निकलेगा। अमेका की इस बात से खुशी ज़रूर हुई पर उसे बिदा देने का दुख और बढ़ गया।

मामाजी भी कल घर जाने वाले थे। मन में आया कि क्यों न मामाजी के गांव में घूमें। यद्यपि मैं एक पल भी उसको दूर नहीं करना चाहता था, पर ये सोच कर मन को शांत किया कि बहुत ही जल्दी हमेशा हमेशा के लिए अमेका को बिदा करना होगा। मैं सोच ही रहा था कि इस बारे में मामाजी से बात करूँ, तभी मामाजी आकर बोले- अगर तुम कहो तो मैं कुछ दिनों के लिए बेटी अमेका को अपने साथ गांव ले जाना चाहता हूं, उसे गांव घुमने का बहुत शौक है। - हाँ हाँ क्यो नहीं! मैंने कहा अगले ही दिन मामाजी और अमेका गाँव के लिए निकल पड़े। मैं अकेला घर पर दिन भर कारोबार के बारे में सोचता रहा- अगर थोड़ी पूंजी की व्यवस्था हो जाती तो फिर से सब कुछ ठीक हो जाता। मामाजी ने गांव पहुंचकर खबर भेजी कि सब कुछ ठीक है और गांव में अमेका का जोरदार स्वागत किया गया। अभी मुश्किल से तीन दिन ही बीते थे कि गांव से एक बुरी खबर आई कि मामाजी नहीं रहे। मैं आनन-फानन गांव पहुंच गया तो देखा कि मामाजी की मृत्यु हार्ट-अटैक से हुई है। मामाजी अपने इकलौते नौकर मुक्ताराम के साथ रहते थे। अतः अभी घर में अमेका, मुक्ताराम और कुछ गांव वाले थे। माहौल एकदम से शांत था। मामाजी का क्रिया-कर्म करने के बाद, मैं कमरे में अकेला बैठा था तभी अमेका आई और बोली- सर जी, ये कागजात मामाजी आपके लिए छोड़ के गए हैं। मैं कागजात हाथ में लेकर देखा तो दंग रह गया। ये क्या? मामाजी ने अपनी संपति मेरे नाम कर दी थी। मैं हैरान हो गया। हे भगवान ! मुझे पता नहीं था कि मेरी सारी समस्या का समाधान इस तरह होने वाला है। मैंने अमेका की तरफ देखा, वो भी मेरी तरफ देख रही थी। मेरे मन को बस एक ही इच्छा सताए जा रही थी कि काश ! अमेका एक रोबोट न होती! फिर मेरे मन में एक सवाल

आया- क्या मामाजी की मृत्यु सच में हार्ट-अटैक से हुई थी?

सुभाष चंद्र मंडल

लेखाकार

जंग: एक त्रासदी

मैंने अपने बच्चे को अभी-अभी
तो शुभरात्रि कहा था,
एक मीठी झप्पी देकर तो उसे सुलाया था,
सो जा मेरे बच्चे बोलकर
एक सुंदर सा ख्वाब दिखाया था
सपने में मिलने तुझसे परी आएगी
यह सुनकर एक रसभरी मुस्कान में मुस्कुराया था
कल सुबह फिर मिलेंगे
ऐसा कहकर हाथ को हिलाया था
अचानक अर्द्धरात को जोर की आवाज के साथ नींद खुली,
ऐसा लगा किसी ने जोर से बुलाया था
मैं भागकर अपने बच्चे के रूम में गई
देखा चारों ओर रक्त ही रक्त
चारों ओर शोर ही शोर
रणभेरी की चेतावनी वाली सायरन बज उठा
रॉकेट, बम, गोलियों की तड़तड़ाहट गूंज उठी
अपने बच्चे को इधर-उधर बेतहाशा ढूंढने लगी
पर वो ना मिला, मिले केवल उसके चीथडे..
वो दृश्य देख एकदम से किंकर्तव्यविमूढ़ हो गयी,
मैं उसे ही समेटे बाहर की ओर भागी
वो भयावह दृश्य, क्रंदन भरा शोर,
धुओं सा लिपटा नजारा दिखे चहुँओर,
चहुंओर रुदाली भरी कर्कश आवाज
भूख से बिलखते, दर्द से तड़पते बच्चे
सूनी हो गयी कितनी औरतों की माँग,
चहुँओर दिखे बरबादी ही बरबादी

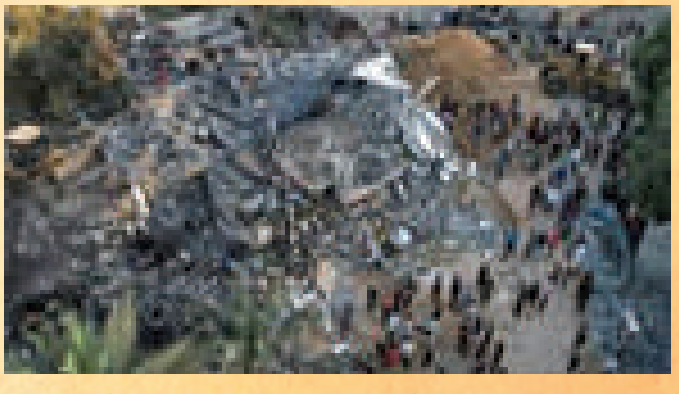

कुछ दिनों बाद जब जंग खत्म हुई
त्रासदी ही त्रासदी, विनाश ही विनाश
लगा जैसे भस्मासुर की नज़र
लग गयी है शहर को
जंग में केवल आदमी की ही मृत्यु नहीं होती
बल्कि मरते हैं पूरे जीवन के सपने,
मरती है इंसानियत,
टूटता है एक-दूसरे के प्रति भरोसा,
मरती है मानवता, मर जाती है जीने की चाह,
वर्षों का बना मकान यूं पल भर में टूट जाना
ये तेरी जमीं ये मेरी जमीं
ये तेरा घर ये मेरा घर
सब यहीं का यहीं रह जाना।
बच जाती है केवल जिंदा रहने के लिए सांस
ना रोटी ना कपडा, ना मकान ना सामान
बस एक दूसरे को
शक की नजरों से ताकते इंसान...

संजय कुमार
डी.ई.ओ.

तू चलते जा

मैंतू सफर में अपने चलते जा
संघर्ष की सीढ़ी चढ़ते जा
साँसों में उफान लिए,
तू आगे बढ़ते जा।

सफलता की तू मूरत बन
चाँदनी रात में सूरज बन
हर बूंद पसीना साथ लिए
तू आगे बढ़ते जा।

किस्मत क्या चीज है, क्या जाने
तू लिख जा जीत के अफ़साने,
मंजिल है अब ये यार तेरी
तू तकदीर बदलता जा।

माना की अड़चन आएगी
आँधी भी रुख दिखलाएगी
पर रोक सके न कोई तुझे,
तू शख़्स वो बनता जा।

तूने इश्क़ में धोखे खाएं हैं
और दर्द के गीत भी गाए हैं,
अब और न कोई तोड़ सके
यूं सख़्त तू बनता जा।

रग रग में गजब रवानी हो,
जो संकल्प बांध ये ठानी हो,
कि तुझ सा दूजा और नहीं
तू फतेह यूं करते जा।

पत्थरों के वार से क्या डरना,
उफान तू ले जैसे झरना
मेहनत की तेरे तोड़ नहीं
चट्टान तू बनते जा।

राख नहीं, तू शोला बन
शोक न कर, तू सोना बन,
रोक न तुझको कोई सके
तू शिकस्त यूं देते चल।

ये वक्त बदलता सबका है,
तू किस अड़चन से डरता है
जो बीत गई, सो बात गई
तू बस आगे चलता चल।

और याद तू रख, अभिमान न कर
तुझसे निर्बल पे वार न कर,
अंगारे रख, अभिलाषा रख
लेकिन निज सीरत का नाश न कर।

सत्यम कुमार
डी.ई.ओ.

जिंदगी जीने को फलसफा

एक हलचल भरे शहर में जहाँ समय नदी की तेज धाराओं की तरह बीतता हुआ प्रतीत होता था, वहाँ रोहित और कपिल नाम के दो दोस्त रहते थे। रोहित हमेशा अपने जीवन के हर पहलू में पूर्णता के लिए प्रयास करता था। दूसरी ओर कपिल का दृष्टिकोण अधिक शांतचित्त था, चीजें जैसी थीं उससे संतुष्ट था और वह लोगों को वैसे ही स्वीकार करता था जैसे वे थे। एक दिन, जब वे अपने पसंदीदा कैफे में बैठे अपनी सुबह की कॉफी पी रहे थे, रोहित ने टिप्पणी की- "आप जानते हैं, कपिल, मैंने हमेशा सोचा है कि हर किसी को मेरे जैसा बनने का प्रयास करना चाहिए। यदि लोग अधिक अनुशासित और केंद्रित होते तो दुनिया एक बेहतर जगह होती।" कपिल ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "मैं समझता हूँ आप क्या कहना चाह रहे हो रोहित, लेकिन मेरा मानना है कि लोगों को वैसे ही स्वीकार करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है जैसे वे हैं। हर किसी का लक्ष्य या आकांक्षाएं समान नहीं होती हैं। हमें दूसरों को बदलने की कोशिश करने के बजाए खुद को बेहतर बनाने पर ध्यान देना चाहिए।" कपिल के शब्दों में समझदारी का एहसास करते हुए रोहित ने भी अपनी सहमती जताई। उसने निश्चय किया कि अब से वह दूसरों को अधिक स्वीकार करने और समझने का सचेत प्रयास करेगा और उनके मतभेदों को अपनी छवि में ढालने के बजाए उन्हें स्वीकार करेगा।

इस बीच, शहर के दूसरे हिस्से में, कपिल और रोहित का एक और दोस्त शेखर, अपराध की भावनाओं से जूझ रहा था। बात यह थी कि हाल ही में शेखर की मुलाकात अपने पूर्व बॉस से हुई थी जिसे वह कुछ विशेष पसंद नहीं करता था; इसलिए उसने जानबूझकर अपने पूर्व बॉस को अनदेखा किया और उचित अभिवादन भी नहीं किया। इस घटना के कुछ दिनों बाद शेखर को मालूम पड़ा कि उसके पूर्व बॉस का दिल का दौरा पड़ने से अचानक निधन हो गया। शेखर पछतावे से भर गया। उसे एहसास हुआ कि अपने पूर्व बॉस के साथ उसकी मुलाकात उदासीनता भरी थी। शेखर को अपने दोस्त कपिल की बात स्मरण हो आई जिसने कहा था- "हमेशा मुस्कराते हुए चेहरे के साथ दूसरों का स्वागत करें क्योंकि हो सकता है यह आपका या उनका आखिरी दिन हो। आपको अपने किए पर पछतावा होगा यदि आपको पता चले कि जिस व्यक्ति की आपने उपेक्षा की थी, वह अब इस दुनिया को अलविदा कह चुका है और आपके पासके इस भूल को सुधारने का कोई भी मौका नहीं बचा है।" अपने दोस्त की सलाह को याद करते हुए शेखर दुःख की वेदना महसूस करने से खुद को नहीं रोक सका। शेखर को अब उन शब्दों का मर्म समझ में आया। वो सोचने लगा कि काश उसने अपने पूर्व बॉस का गर्मजोशी भरी मुस्कान के साथ अभिवादन किया होता तो उसे ताउम्र इस पछतावे की पीड़ा ना सहनी पड़ती।

कुछ दिनों बाद, तीनों दोस्तों का अपने एक दोस्त की शादी में मिलना हुआ। रोहित और शेखर अपने जिगरी दोस्त कपिल के जिन्दगी जीने के फ़लसफे की भूरी भूरी प्रशंसा कर रहे थे। उन्हें यह अहसास हो गया था कि हम केवल स्वयं को बदलकर ही खुश हो सकते हैं, अगर दूसरों को बदलने निकलेंगें तो हमेशा पीड़ा ही होगी। अनिश्चितताओं से भरी दुनिया में, वे समझ गए कि दूसरों के प्रति दया और करुणा ना दिखाने के अफसोस के साथ जीने की तुलना में खुद को सुधारना आसान है। और इसलिए, इस नए ज्ञान से लैस होकर, उन्होंने सरल अंग्रेजी अक्षरों से 'ए' और 'ई- स्वीकृति (Acceptance) और अपेक्षा (Expectation) के मूल्यों को अपनाते हुए, हर दिन खुले दिल और दिमाग से जीने की कसमें ली और अपनी अपनी मंजिल पर बढ़-चले।

राजीव कपूर
व. लेखा अधिकारी

दीवाली

वास्तविकता तो यही है कि हर वक्त समान नहीं होता है और उसके साथ सुख-दुख व उदासीनता जैसे भाव हर पल विद्यमान रहते हैं। यह देश, ये दुनिया किस चीज का जमघट नहीं है? परिस्थितियाँ, अंतरंगता और इसके साथ जीव-जगत में हर्ष और विषाद का संगम। ऐसे जीवन में त्योहारों की भूमिका बड़ी महत्वपूर्ण होती है। रमजान बीत गया है, दीवाली आने वाली है, क्रिसमस में अभी बहुत समय है.. त्योहारों के प्रति बच्चो का विशेष समर्पण दिखता है।

-अरे महेश, तुम इतने उदास क्यों बैठे हो? सोनू ने थोड़ा जल्दबाजी में पूछा।

महेश ने कहा- यार सोनू, रोहित मुझसे कह रहा था कि दीपावली के दिन वह नए रंग-बिरंगे कपड़े खरीदेगा और मिठाइयां खाकर खूब पटाखे छुड़ायेगा

-अरे तो, इसमें उदासी की कौन सी बात है। सोनू ने हैरानी से पूछा।

महेश थोड़ा चिढ़ते हुए बोला- अरे बेवकूफ, मैंने अपने दादा से इन्हीं चीजों की जिद्द की तो वे नाराज हो गए और उनकी नाराजगी देखकर मैं उदास हो गया। सोनू के मन में दीपावली की जो उमंग थी वह भी थोड़ी फीकी प्रतीत हुई। वह यूं ही मुस्कराता हुआ अपने घर की ओर चला गया।

आज धन तेरस है। अरे, ये लो..कल तो गोवर्धन पूजा होगी। कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को कैसी उमंग में उठाकर इन्द्र का घमंड तोड़ दिया था। रोहित अपने मन ही मन ऐसा सोच रहा था। शाम ढल रही थी। पटाखों की आवाज जब रोहित के कानों में पड़ती थी तो उसका बालकमन चंचलता से भर जाता था। कल दीपावली है। दिन की शुरुआत के साथ बच्चों में नवीनता की लहर सी दौड़ जाती है; उनका उत्साह चरम पर पहुँच जाता है। उनकी चिंता बहुत छोटी होती है, सपने बड़े होते हैं। उन्हें दीवाली पर स्वादिष्ट पकवान खाने का आनंद मिलता है। महीनों प्रतीक्षा करनी पड़ती है तब जाकर ऐसे व्यंजन खाने को मिलते हैं। सुखद नए दिन की आशा में वे अपने पिछले दुख-दर्द भूल जाते हैं। कभी-कभी किसी वस्तु की इच्छा या उत्कट लालसा लिए उनकी शाम बीत जाती है। रात कल्पनाओं के सागर में नींद आती है और सपनों का ज्वार उनकी लालसा पूरी कर देता है। किंतु उनकी जो तात्क्षणिक लालसा होती है वह उन्हें याद रहती ही है।

अगले दिन सुबह जब सूर्य ने क्षितिज से भू-दर्शन दिया तो बच्चों ने बड़े जोर-शोर से दिन का स्वागत किया, मानो सूर्य में उनकी समस्त ख़ुशियाँ छिपी हों। सोनू रोहित को ललकार कहता है कि देखना, इतने पटाखे छुड़ाऊंगा की तेरी जुबान बंद हो जायेगी। ऐसा कपड़ा पहना हूं कि इसमें 12 जेबें हैं, सात रंग हैं और लाल रंग का सुंदर किनारा भी है। बच्चे हमेशा ही ऐसी चुनौतियों को स्वीकार कर लेते हैं। उनकी समझ

में उनके घर वाले किसी से कम नहीं होते हैं....बच्चे मानते हैं कि उनके घर वाले उन्हें हर खुशी देंगे। रोहित भी कम न था। उसने कहा- पूरे बारह रुपये हैं मेरे पास। एक कमीज और कपड़े तो ऐसे हैं कि पूरे अंधेरे में ऐसे चमके जैसे प्रकाश चमकता है। रोहित को लगा कि इतने पर भी उसका उत्तर सही नहीं हैं। सोनू-रोहित की नोंक-झोंक जारी थी कि उसी समय पड़ोस का एक मुस्लिम बच्चा राशिद उस जगह पर पहुंचा जहां पर रोहित और सोनू की कहासुनी चल रही थी। वह रोहित और सोनू की बातचीत को सुनता है तो वह सोचता है कि क्या मुझे दिवाली मनाने का अधिकार नहीं है? वह दौड़ा-दौड़ा अपने अब्बाजान के पास पहुंचता है और उनसे पूछता है-अब्बा, क्या हम दीवाली नहीं मना सकते है? "मना सकते है बेटा, क्यों नहीं" उसके अब्बाजान ने कहा। राशिद ने तुरंत कहा- "तब अभी बाजार चलकर हमारे लिए पटाखे, मिठाइयाँ और नये कपड़े खरीद दो न.." राशिद के मन में हमेशा विचार उठते रहते थे। एक सामान्य प्रक्षोभ से उसका हृदय डोल जाता था। शायद उसके अब्बाजान इस बात को जानते थे। इसलिए उन्होंने सोचा कि राशिद का मन नहीं तोड़ना चाहिए। आमतौर पर बच्चे एक साधारण आश्वासन से मान भी जाते हैं। लेकिन जब समय पर उन्हें वह चीज नहीं मिलती है तो वे थोड़ी-बहुत जिद करते हैं। अब्बाजान ने सारा सामान लाने का वादा कर दिया। राशिद प्रसन्न मन से बाहर चला गया।

राशिद के परिवार में उसके दादा-दादी थे। उसके पिता असमय ही गुजर गए थे। परिवार पर विपत्तियों का बोझ था। राशिद परिवार का इकलौता बच्चा था, इसलिए उसके अब्बाजान उसकी हर इच्छा को पूरा करना चाहते थे.....बेचारा। दोपहर ढल चुकी थी। शाम का मुरझाया हुआ सफर शुरू हो गया था। हरेक बालक रोहित सोनू महेश आदि अत्यंत प्रसन्न दिखाई पड़ रहे थे। इधर दोपहर बाद जब राशिद अपने घर में घुसा तो उसने सुना। कि उसके अब्बाजान कह रहे थे कि समय तो यों ही कट जायेगा किंतु बालमन को ठेस नहीं पहुंचानी चाहिए। अंतिम वाक्य को राशिद ने सुन लिया था। राशिद एक विचारशील बालक था। यद्यपि बच्चे इस तरह की बातों में नहीं उलझते हैं लेकिन कुछ बच्चे अपनी पारिवारिक परिस्थितियों के कारण सामान्य बच्चों से हटकर प्रतिक्रिया देते है। जरूरी नहीं कि ये प्रतिक्रिया हमेशा अनुकूल ही हो। राशिद की विचारशीलता ने उसे हरेक से अलग कर दिया। वह कुछ देर अब्बाजान की बात के बारे में

सोचता रहा। कुछ देर अनमनेपन में बैठने के बाद राशिद बाहर चला गया तो उसने देखा कि उसी वृक्ष के नीचे बैठा सोनू रो रहा था। राशिद ने आश्चर्य से पूछा," अरे यार सोनू तू क्यों रो रहा है? कल तो दीवाली है, तुम्हें तो खुश रहना चाहिए।" राशिद की बात सुनकर कथन को सुनकर सोनू ने चुप होने की कोशिश की लेकिन रह-रहकर वह सिसक पड़ता था। अचानक वह दहाड़ें मारकर रोने लगा। थोड़ी सी सहानुभूति पाकर बच्चे भावुक हो जाते हैं। उन्हें लगता है कि कोई तो ऐसा है जो उनकी परवाह करता है। राशिद ने फिर पूछा-पराखे नहीं छुड़ाओगे क्या? तभी रोहित आ गया और बोला- सोनू पटाखे छुड़ा रहा था कि अचानक इसकी छोटी बहन सामने आ गयी। उसका बायाँ हाथ जल गया। इसकी अम्मा ने गुस्से में बहुत पीटा है और ये भयंकर मार पड़ने के बाद से ही दहाड़े मार-मारके रो रहा है। ये तो जले पर नमक छिड़कने जैसा था। ऐसी स्थिति में बच्चे और अधिक दुखी और कुछ हद तक क्रोधित हो जाते हैं। सोनू इतना कुछ सुनकर आहत हुआ और गुस्से व दुख से भरा हुआ बिना कुछ कहे ही अपने घर की तरफ चला गया। तभी वहाँ पर बंदर जैसी टोली के साथ महेश आ पहुँचा। महेश और रोहित ने राशिद से कहा- अरे राशिद, तुम्हें तो दीवाली मनानी नहीं है, कम से कम एकाध पटाखे तो छुड़ा लो। राशिद ने कहा- नहीं भाई, मेरे पास पटाखे नहीं है किंतु मैं दीवाली जरूर मनाऊँगा। रोहित ने कहा- लो मैं तुझे एक पटाखा छुड़ाने को देता हूँ। बालपन ऐसे मौकों पर ज्यादा कुछ नहीं सोचता। मन की चंचलता बड़ी निर्मम होती है। प्रत्यक्ष इंकार के बावजूद एक छिपी हुई इच्छा होती है कि काश! अमुक चीज मिल जाती तो बहुत अच्छा लगता। राशिद ने बहुत सकुचाते हुए आग्रह को स्वीकार कर लिया। पटाखे छुड़ाते समय एक चिन्गारी राशिद की तर्जनी पर पड़ गयी। राशिद भयभीत हो गया। महेश की बंदर-टोली ठहाका लगाते दूसरी ओर चल दी। राशिद ने सोचा कि कहीं वह जल न जाय, इसलिए जल्दी से वह बच्चों के समूह से परे अपने घर चला गया। शाम ढल रही थी। दीवाली की पूर्व संध्या पर सारा परिवेश उल्लासमय हो जाता है। दीवाली की तैयारियों को लेकर हर कोई उमंग में था। कही-कहीं दुख भी है लेकिन त्योहारों पर लोगों का उत्साह देखते ही बनता है। दीवाली की एक दिन पहले की रात में हर कोई इस खुशी से सोया कि कल उन्हें दीवाली मनाना है। घर में महिलाएं अपने पकवानों को बनाने की तैयारी कर रहीं हैं। समय की गति से सहज होती है; उसमें कोई आरोह-अवरोह नहीं होता है। समय के अच्छे-बुरे और जल्दी-देरी का कारण तो स्वयं मनुष्य ही होता है। अगली सुबह अंधकार को चीरती सूर्य की प्रखर किरण जब सज्जित और दीवाली के लिए तैयार धरती पर पड़ी तो ऐसा लगा जैसे कोई फरिश्ता उतर आया हो और साथ ही बंधुत्व का संदेश लाया हो। बच्चों में उमंग की नवीनता साफ दिखाई पड़ती थी। बंदर-टोली का उत्साह देखने लायक था। महेश तो रोज की तरह हुड़दंग कर रहा था और आज तो दीवाली थी। दूसरी ओर दीवाली को प्रति राशिद के उत्साह को लेकर राशिद के अब्बाजान कुछ चिंतित थे। उन्होंने किसी तरह इकट्ठा किए हुए कुछ पैसे को राशिद को वे रुपये देते हुए कहा, " जाओ बेटा, अपनी मनपसंद चीज खरीद लो। चूंकि राशिद विचारशील बालक था, इसलिए उसे बहुत सहज महसूस नहीं हो रहा था।

बाजार जाते समय उसके मन में बहुत सारे विचार चल रहे थे। ऐसे ही सोचते-सोचते, वह धीरे-धीरे भारी कदमों से सीधे पास की छोटी सी बाजार में पहुंचा। बाजार रंग बिरंगी वस्तुओ से सजी थी। इधर मिठाइयां लगी हुई हैं, उधर बिजली से जलने वाली झालरें लटक रहीं हैं। मिट्टी के दीये बड़े ढंग से सजाकर लगाए गए हैं। दीवाली के दिन एक मुस्लिम बच्चे को बाजार में देख कुछ दुकानदार आपस में ठहाके लगा रहे थे। किसी ने कहा- राशिद, मिठाइयां खाते जा..बड़ी स्वादिष्ट हैं ये सब..ये हाथी वाली, घोड़े वाली.. न..न.. ये भालू के आकार वाली तो ले ही ले। राशिद बाजार की रौनक देखकर चकित तो था ही परेशान भी हो रहा था।

इधर सोनू रोहित व महेश का वाकयुद्ध चल रहा था। सोनू ने कहा- अरे तुम लोग तो ऐसी कमीज कभी देखे ही नहीं होगे पहनने का शौक तो तुम सभी का होगा..बहुत महंगी है..पता है मेरे पापा इसे शहर की बहुत बड़ी दुकान से खरीद कर ले आए हैं, बिल्कुल नई है..एकदम शानदार। तभी रोहित पटाखे छुड़ाता है - अरे देखा न तुमने, कितना ज्यादा आवाज थी इस पटाखे में..तीन-चार कोस तक सुनाई दिया होगा पक्का। सोनू की बहन का हाथ जल गया था इसलिए उसकी माँ ने उसको पटाखों और आतिशबाजी से दूर रहने को कहा था। फिर भी सोनू ने माँ से बाहर घूमकर आने की जिद की थी। भला ऐसे कौतुक भरे त्योहार पर कोई बच्चा कैसे घर में बैठा रहेगा? महेश भी कहाँ पीछे रहने वाला था। उसने चीखते हुए कहा- मेरी भी बात तो सुन लो...मेरे घर पूरे पाँच किलो मिठाई आई है और खूब सारे खिलौने भी हैं। और ये देखो, इतने सारे पटाखे कि सारी रात मैं इन्हें छुड़ाऊंगा तो भी नहीं खत्म होने वाले। इतना कहते हुए महेश पटाखों वाला पूरा डब्बा पलट देता है। सारे पटाखे जमीन पर बिखर जाते हैं। सोनू चिल्लाता हैं- अरे हटाओ ये सब... अगर आग पकड़ ली जल जाएंगे हम सब। रोहित ने कहा- तुम एक नंबर के डरपोक हो...तुम डर रहे हो कि कहीं आग से तुम्हारा कपड़ा न खराब हो जाए। हमें तो पटाखे छुड़ाने में बहुत मजा आता है। इतना कहकर रोहित और महेश सोनू पर हंसने लगे। सोनू बोला- मैं किसी से नहीं डरता...मैं डरपोक नहीं हूँ। इतना कहकर वह बंदर-टोली से चला गया।

राशिद ने बाजार के बहुरंगी स्वरूप को देखकर सोचा कि क्या खरीदें, क्या न खरीदे ? दीवाली के बाद तो कड़ी सर्दी आने वाली है। अब्बाजान के पास कनटोपा नहीं था। ठंड से उनके कान सिकुड़ जाते होंगे। क्यों न एक कनटोपा ही ले लूं। यही विचार कर उसने एक कनटोपा खरीदा और शेष कुछ रुपयों से लिखने की एक कॉपी खरीदी और घर लौट आया। अब शाम होगी। ऐसा अवश्यम्भावी था कि रात भी होगी लेकिन सर्वत्र चारों ओर ऐसे दीपक जले हुए थे कि अंधकार दूर सा हो गया। राशिद घर पहुंचा। चारों ओर पटाखों की आवाज सुनाई दे रही थी। उसके अबाजान उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। अब्बाजान राशिद की खरीदारी को जानकर खुश हुए और आश्चर्यचकित भी। राशिद के परिवारजन मुग्ध हो गये। बाहर वही पटाखे को शोर व बच्चों का उल्लास जारी....।

आशीष कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

तेरे मेरे मिलन की ये रैना...

पिछले अंक में मेरी चर्चा महान कवि और शायर हसरत जयपुरी के प्रसिद्ध गीतों पर केंद्रित थी। मुझे नहीं मालूम कि इससे हसरत जयपुरी द्वारा लिखे गए कुछ पुराने, प्रसिद्ध और लोकप्रिय गीतों की याद ताजा हुई या नहीं लेकिन मुझे आशा है कि इन गीतों ने पुराने गीतों को पसंद करने वाले पाठकों के हृदय को जरूर स्पर्श किया होगा।

इस अंक में मैं एक महान संगीत निर्देशक सचिन देव बर्मन के द्वारा रचित कुछ बेहद लोकप्रिय और मधुर संगीत की चर्चा करूंगा। मेरा मानना है कि सचिन देव बर्मन बॉलीवुड में संगीत के पितामह हैं। 1 अक्टूबर 1906 को जन्में सचिन देव बर्मन त्रिपुरा के राज-घराने से आते थे। उन्होंने 1932 में बंगाली फिल्मों के साथ अपने करियर की शुरुआत की। बाद में वे बॉलीवुड में हिंदी फिल्मों के गीतों को अपना संगीत देकर एक सफल और प्रभावशील भारतीय फिल्म संगीतकार बन गए।

हम किशोर कुमार, लता मंगेशकर, आशा भोंसले, मोहम्मद रफी, गीता दत्त, मन्ना डे और हेमंत कुमार आदि जैसे महान गायकों की मधुर आवाज के साथ उनके संगीत से आनंदित होते हैं। उनका संगीत संयोजन मुख्य रूप से उनके विशाल बांग्ला लोक धुनों के संग्रह से प्रभावित था। साथ ही यह भारत के अन्य भागों व विश्व के संगीत से भी प्रभावित रहा है। सचिन देव बर्मन ने स्वयं की बनाई धुनों पर गीत भी गाए हैं जिनमें से कुछ गीत तो बहुत ही लोकप्रिय हुए हैं। उदाहरण के लिए बंदिनी फिल्म का लोकप्रिय और मार्मिक गीत 'ओ रे मांझी, मोरे साजन हैं उस पार' 1965 की शानदार फिल्म गाइड का 'वहाँ कौन है तेरा, मुसाफिर जाएगा कहाँ' और 1969 की सफल और सुपरहिट फिल्म आराधना का गीत 'सफल होगी तेरी आराधना'। गीत 'सफल होगी तेरी आराधना' के लिए उन्हें 1970 में राष्ट्रीय फिल्मफेयर का सर्वश्रेष्ठ पुरुष पार्श्वगायन का पुरस्कार भी प्राप्त हुआ था।

सचिन देव बर्मन ने कुछ बंगाली गाने भी गाए हैं जो बहुत बहुत लोकप्रिय हुए-

1. मनो दिलो ना बॉधू
   मनो निलो जे शुधू
2. तुमि एसेछिले परशु काल केन आसनि इत्यादि।

हिंदी सिनेमा के पहले लोकप्रिय अभिनेता देव आनंद थे जिनके लिए सचिन देव बर्मन जी ने बहुत सारे लोकप्रिय गानों को अपना मधुर संगीत प्रदान किया था। 1965 की बहुचर्चित और बेहद लोकप्रिय फिल्म 'गाइड' में अभिनेता और अभिनेत्री की भूमिका में क्रमशः देव आनंद और वहीदा रहमान ने अभिनय किया था। इस फिल्म में सचिन देव बर्मन के द्वारा संयोजित और संगीतबद्ध सारे गाने बहुत ही लोकप्रिय हुए जिनमें से दो गाने तो सदाबहार बन गए।

लता मंगेशकर की मधुर आवाज में गाया गया गीत 'आज फिर जीने की तमन्ना है', और

'गाता रहे मेरा दिल' जिसे लता जी और किशोर कुमार ने अपनी आवाज दी थी।

इसी तरह राजेश खन्ना और शर्मिला टैगोर अभिनीत 1969 में प्रदर्शित हुई फिल्म 'आराधना' में भी सचिन देव बर्मन जी के संगीत संयोजन ने धूम मचा दी। इस फिल्म के

सारे गाने बहुत लोकप्रिय हुए जिनमें से दो गाने सदाबहार बन गए हैं। ये हैं-

'कोरा कागज था ये मन मेरा' जिसे लता जी और किशोर कुमार ने अपनी आवाज दी थी; और 'मेरे सपनों की रानी कब आएगी तू' जिसे किशोर कुमार ने गाया था।

सुंदर संगीत संयोजन से युक्त पश्चिम बंगाल के मन्ना डे और हेमंत कुमार (मुखोपाध्याय) अपने उत्कृष्ट गायन और अपनी अद्वितीयता के कारण बॉम्बे में भी बहुत लोकप्रिय हुए। वर्ष 1963 में फिल्म 'मेरी सूरत तेरी आँखें' प्रदर्शित हुई थी जिसमें सचिन देव बर्मन जी ने मन्ना डे के लिए एक सुंदर संगीत संयोजन प्रस्तुत किया था। राग अहीर भैरव में रचा-बसा ये गीत था- 'पूछो ना कैसे मैंने रैन बिताई'

ये गीत विरोधी कवि काजी नजरुल इस्लाम द्वारा रचित गीत 'अरुणकान्ति के गो योगी भिखारी' से प्रभावित एक मास्टरपीस गीत सिद्ध हुआ।

गुरुदत्त ने 1952 में 'जाल' नामक एक फिल्म बनाई जिसमें अभिनेता और अभिनेत्री की भूमिका देव आनंद और गीता बाली ने निभायी थी। इस फिल्म में साहिर लुधियानवी जी ने एक बहुत ही रोमांटिक गीत लिखा था जिसके बोल थे- 'ये रात ये चाँदनी फिर कहाँ'

सचिन देव बर्मन ने इस गीत का संगीत संयोजन किया था। इस गीत को हेमंत कुमार ने गाया और ये गीत उस दौर में बहुत ही लोकप्रिय हुआ। आज भी इसे सुना जाता है।

1950 से 1975 के दौरान सचिन देव बर्मन ने बहुत सारी फिल्मों के लिए संगीत दिया जिनके लगभग सभी गीत एक के बाद एक सुपरहिट हुए। वर्ष 1957 में फिल्म 'पेइंग गेस्ट' प्रदर्शित हुई थी जिसमें देव आनंद ने अभिनय किया था। इस फिल्म का निर्देशन सुबोध मुखर्जी ने किया था और सचिन देव बर्मन ने इस फिल्म के लिए संगीत दिया था। इस फिल्म के लिए मजरूह सुल्तानपुरी का लिखा हुआ और किशोर कुमार द्वारा गाया गया गीत बहुत हिट साबित हुआ। गीत के बोल थे- 'माना जनाब ने पुकारा नहीं'

वर्ष 1967 में प्रदर्शित हुई फिल्म 'प्रेम पुजारी' में देव आनंद और वहीदा रहमान ने अभिनेता और अभिनेत्री की भूमिका निभायी थी। इस फिल्म में सचिन देव बर्मन द्वारा संगीत-बद्ध किए गए सभी गाने बहुत लोकप्रिय हुए। लता मंगेशकर की मधुर आवाज में लोकप्रिय गीत 'रंगीला रे, तेरे रंग में' इसी फिल्म में है। आज कल्पना करना भी कठिन है कि सचिन देव बर्मन जी ने 1950-1955 के उस दौर में किस तरह आज के समय जैसा और पश्चिमी मूड से युक्त इस गीत का संगीत तैयार किया होगा।

1967 में ही एक और फिल्म प्रदर्शित हुई जिसका नाम 'ज्वेल थीफ' था। विजय आनंद द्वारा निर्देशित इस फिल्म का एक गीत बहुत लोकप्रिय हुआ। सचिन देव बर्मन द्वारा संगीत-बद्ध गीत को मोहम्मद रफी और लता मंगेशकर ने गाया था। गीत के बोल थे-'दिल पुकारे, आ रे, आ रे, आ रे'

गीतकार नीरज द्वारा लिखा हुआ एक गीत बहुत लोकप्रिय हुआ था। 'खिलते हैं गुल यहाँ' मुखड़े के इस गीत को सचिन देव बर्मन ने संगीत दिया और किशोर कुमार ने इस गीत को गाया था। ये गीत समीर गांगुली द्वारा निर्देशित फिल्म 'शर्मीली' फिल्म का है जो 1971 में प्रदर्शित हुई थी। आज भी इस गीत की लोकप्रियता के बारे में कहने की जरूरत नहीं है।

लता मंगेशकर द्वारा गाया हुआ एक गीत 'सुन री पवन, पवन पुरवइया' वर्ष 1971 में प्रदर्शित हुई फिल्म 'अनुराग' का एक लोकप्रिय गीत है जिसका संगीत भी सचिन देव बर्मन

जी द्वारा दिया गया था। शक्ति सामंत ने इस फिल्म का निर्देशन किया था। आप सभी जानते हैं कि ये गीत कितना हृदयस्पर्शी है। इस गीत के माध्यम से हम एक दृष्टिहीन लड़की की करूण भावना का अनुभव कर सकते हैं।

हम सभी ने अमिताभ बच्चन और जया बच्चन अभिनीत फिल्म 'अभिमान' तो देखी ही है जिसका निर्देशन ऋषिकेश मुखर्जी ने किया था। ये फिल्म 1973 में प्रदर्शित हुई थी। इस फिल्म के गीत मजरूह सुल्तानपुरी ने लिखे थे और सचिन देव बर्मन जी ने उन्हें संगीत-बद्ध किया था। इस फिल्म के सभी गीत बहुत लोकप्रिय हुए और लोगों के हृदय में बस गए। फिल्म के दो गीत लगभग 50 साल बाद भी

लोगों के मन में गूँजते रहते हैं। एक गीत है लता मंगेशकर द्वारा गाया गया 'पिया बिना पिया बिना' और दूसरा है 'तेरे मेरे मिलन की ये रैना' जिसे किशोर कुमार और लता मंगेशकर ने गाया था।

राजेश खन्ना और हेमा मालिनी अभिनीत फिल्म 'प्रेम नगर' वर्ष 1974 में प्रदर्शित हुई। गीतकार आनंद बक्शी ने इस फिल्म के सभी गीत लिखे थे और संगीत का संयोजन सचिन देव वर्मन जी ने किया था। इसमें दो गाने बहुत ही लोकप्रिय हुए। एक गीत था 'ये लाल रंग कब मुझे छोड़ेगा' जिसे किशोर कुमार ने गाया था। और दूसरा गीत था-

'किसका महल है, किसका ये घर है
लगता है ये कोई सपना ओ सजना
प्रेम नगर है ये अपना ओ रचना'

इसे भी किशोर कुमार और लता मंगेशकर ने ही गाया था।

ऋषिकेश मुखर्जी द्वारा निर्देशित एवं अमिताभ बच्चन और जया बच्चन अभिनीत प्रसिद्ध फिल्म 'मिली' वर्ष 1975 में प्रदर्शित हुई थी। इस फिल्म के सभी गानों का संगीत संयोजन सचिन देव बर्मन ने किया था जिसे लता मंगेशकर ने गाया था। ये गीत आज भी सभी उम्र के लोगों की जुबान पर हैं। एक गीत था-

'मैंने कहा फूलों से हँसों तो वो खिलखिला के हँस दिए'

ऐसे अद्वितीय संगीत निर्देशक ने हमें सैकड़ों मधुर गीतों का उपहार देकर 21 अक्टूबर 1975 को इस दुनिया में अंतिम सांस ली। हम उनके आभारी हैं।

रेवती रंजन पोद्दार
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

नियति

आपके कर्म अच्छे हों या बुरे, आपको इसका फल तुरंत ही नहीं मिलता बल्कि आपको वही फल मिलेगा जो नियति ने आपके लिए तय कर रखा है। यदि आपके जीवन में आपको करोड़पति बनना लिखा है तो आप जरूर बनेंगे फिर चाहे आप व्यापार करके बनें या फिर डाका डाल के। आपको गरीब ही रहना लिखा है तो आप गरीब ही रहेंगे चाहे आप अपने अर्जित धन को दान करके बन जाएं या व्यर्थ की आदतों से धन गवांकर या फिर किसी आपदा के कारण सारे धन के नष्ट होने से बन जाएं।

विचार करने योग्य बात यह है कि हमें जो मिलना है वही मिलेगा और मिलकर ही रहेगा तो फिर व्यर्थ के पाप, अपराध, चोरी, रिश्वतखोरी क्यों करें? बल्कि वही कर्म किया जाए जिससे स्वयं को कोई अपराध-बोध न हो। मान लीजिये की नियति ने किसी के भाग्य में आज एक हजार रूपये पाने का योग लिखा है, और वह अपने दफ्तर में जाता है तो उसदिन उसे कुछ काम करने के बदले रिश्वत में एक हजार रुपये प्राप्त होते हैं। अगर वो उस एक हजार रूपये को ठुकरा देता तो वो पैसे उसे इनाम स्वरुप ही आज दफ्तर से मिलने थे जो अब नहीं मिलेंगे यानि उसे जो मिलना था वही मिला पर अकारण ही उसने अपराध किया। इसी तरह मान लीजिये कि किसी के भाग्य में नियति ने लिखा है कि आज उसके पाँच हजार रुपये खर्च होने हैं और उसी दिन उसे एक अवसर प्राप्त होता है। वह एक जरूरतमंद को पाँच हजार देकर मदद कर सकता है पर उसने मदद नहीं की और शाम में घर जाते वक़्त उसकी गाड़ी का चक्का फट गया, जिसकी मरम्मत नहीं हो सकती और उसे बदलवाने में उसके पाँच हजार खर्च हो गए। अर्थात हर व्यक्ति के पास यह अवसर है कि वह अच्छा कर्म ही करे, वो वही पाएगा जो नियति ने तय कर रखा है।

इसी संदर्भ में एक कथा इस प्रकार है कि एक बार एक गाँव में एक सिद्ध महात्मा आए हुए थे। एक अत्यंत दीन-गरीब ग्वाला था जिसके पास एक ही गाय थी। बहुत मुश्किल से दाल रोटी का ही जुगाड़ हो पता था। वह ग्वाला उन महात्मा जी के पास ये जाकर ये निवेदन किया कि वे घर की स्थिति सुधारने के लिए कुछ उपाय बताएं। महात्मा ने उसकी कुंडली देख कर उसको बताया कि वो अपनी गाय बेच दे। कुछ दिनों बाद ग्वाला महात्मा जी के पास फिर से आया और उसने बताया कि गाय बेच कर उसने अपने घर की मरम्मत करवाई और अगले ही दिन एक अन्य गाय उसके द्वार पर आ गयी। बहुत पता करने पर भी जब किसी ने उसपर अपना अधिकार नहीं दिखाया तो उसने उस गाय को अपने घर पर ही रख लिया। महात्मा ने बहुत विचार कर उससे कहा कि अगर फिर पैसों की दिक्कत हो तो उस गाय को भी बेच देना। ग्वाले के चले जाने पर महात्मा जी के एक शिष्य ने उनसे ऐसी सलाह का कारण पूछा। तब महात्मा ने बताया कि उन्होंने पहले दिन ही उस ग्वाले के भाग्य में देख लिया कि जीवन-पर्यंत उसके पास एक गाय रहेगी। इससे अगर वो गाय बेचता भी रहे तो उसको गाय मिलती रहेगी। इस कहानी से यह समझ में आता है कि जीवन में कई बार त्याग से भी लाभ होता है और भाग्य में लिखा मिलकर ही रहता है।

शास्त्रों-वेदों में लिखा है- "ऐश ऐवा एनम, साधु कर्म कार्याति"। गीता में कृष्ण ने अर्जुन से कहा- "निमित्त मातरम भव सब्यासाची दिव्यम ददामि ते चक्षुस"। मैं तुम्हे दिव्य चक्षु देता हूँ। देखो, तुम कुछ नहीं कर रहे हो, सब कुछ मैं कर रहा हूँ तुम बस निमित्त मात्र हो। गुरु नानक ने भी कहा है- "करन करावन आपै आप नाम रखल्या ताव"। ऐसे ही कहा गया है कि "सबहि नचावत राम गोसाई"। हम क्या करें जैसे वो नचा रहें हैं, हम नाच रहें हैं। पाप किये जा रहें हैं। भगवान से पूछो क्यों नचा रहे हमको? ऐसा सिद्धांत बनाकर जीव निर्भय होकर सब पाप करता रहता है पर यह सही नहीं है। भला ईश्वर ऐसा क्यों करेगा, वो तो सिर्फ फल देता है। कर्म करने का अधिकार तो जीव का है।

इसलिए ये समझना ज्यादा उचित है कि 'साधना

से ही साध्य मिलेगा'। इस संसार में कुछ भी पाने के लिए प्रयत्न करना पड़ता है। कोई कह सकता है कि कुछ काम बिना प्रयत्न के भी होता है, जैसे साँस का लेना, पलक का टपकना, नींद लेना इत्यादि। लेकिन ये सब इतना स्वाभाविक हो गया है कि आपको लगता है कि यह स्वतः हो रहा है पर ऐसा नहीं है। अच्छी नींद के लिए थकना जरूरी है प्रत्येक इच्छित पदार्थ को पाने के लिए हमें प्रयत्न करना ही पड़ता है। यदि बिना प्रयत्न के ही सब कुछ मिल जाता तो ये संसार पत्थर (जड़) हो जाता और ये जीवन निरर्थक। अगर बिना कुछ किये लक्ष्य मिल जाए तो वेद-पुराण के उपदेशों का कोई मूल्य ही नहीं रह जायेगा अर्थात कुछ करने से ही कुछ मिलता है। कहीं-कहीं बिना प्रयास के भी कुछ मिल जाता है या ये कहें कि कम प्रयास से अधिक फल व अधिक प्रयास से कम फल का मिलना भी देखने में आता है। उदाहरणार्थ किसी अरबपति ने आपको गोद ले लिया और आप बिना किसी प्रयास के अरबपति हो गए। आपने घर के खुदाई की और आपको गड़ा हुआ सोना मिल गया। ऐसा भी कभी-कभी होता है। दरअसल आपको लगता है कि ऐसा होता है पर ऐसा होता नहीं। इसे ही प्रारब्ध कहते हैं, तक़दीर या नियति कहते हैं। यह सिद्धांत भी आता है कि यह पूर्वजन्मों के कर्मों का फल है। थोड़ा सा प्रयास किया तो थोड़ा फल मिलना चाहिए, अधिक प्रयास किया हो तो अधिक फल मिलना चाहिए। लेकिन ऐसा हर समय नहीं होता। संसार में सभी धन कमाने का पूरा-पूरा प्रयास करते हैं पर हर कोई अम्बानी, अडानी, टाटा, बिल या एलन मस्क नहीं बन जाता। एक श्रमिक ने ज़िंदगीभर मेहनत की और पेटभर अन्न भी न मिला। साधन से ही साध्य मिलेगा ये समझना सहज नहीं है।

जिसने पूर्वजन्म में जैसा कर्म किया है, इस जन्म में उसका भाग्य उसी अनुपात में अच्छा या बुरा होगा। प्रायः सभी धर्मों में यह मान्यता है कि इंसान के जन्म के समय से ही यह तय रहता है कि वो जीवन में क्या पाएगा और क्या नहीं। अब अगर इस सिद्धांत को माना जाए तो यह कहना अनुचित नहीं होगा कि एक पापी का भाग्य बुरा और पुण्यात्मा का ही भाग्य अच्छा होगा। इस तरह यह कहा जा सकता है कि एक पापी को ऐसा भाग्य मिला कि वो कितना भी धन अर्जित करे वो धन उसके पास टिकेगा नहीं पर उसके पास कर्म की स्वतंत्रता है। वो दानी बन सकता है और दान-पुण्य करके धन गवां सकता है या फिर वो कंजूस भी बन जाये तो प्रारब्ध के अनुसार धन टिकेगा नहीं। उसे कोई ऐसी बीमारी हो जाएगी जिसकी दवा में ही कमाया हुआ धन जाता रहेगा। ऐसे ही अगर पुण्यात्मा को भाग्य मिला कि वह इस जन्म में बहुत धनवान बनेगा और उसे भी कर्म की स्वतंत्रता है। वह व्यक्ति नेक कर्म और ईमानदारी करके भी धनवान हो सकता है और चोरी रिश्वतखोरी करके भी उतना ही धनवान होगा पर व्यर्थ में ही जीवन भर अपराध-बोध करेगा और मरणोपरांत दुर्गति होगी। इसलिए साधन के बिना साध्य नहीं मिलता, ये सिद्धांत भी सही है और जो नियति ने लिख रखा है वही मिलेगा ये सिद्धांत भी उतना ही सही है। जब जो मिलना है वही मिलेगा चाहे कर्म कुछ भी करें। तो कोई भी साधारण व्यक्ति भी इस बात को समझ सकता है कि अच्छा कर्म ही करना उसके और समाज के लिए उचित है।

नीरज कुमार पांडेय
सहायक लेखा अधिकारी

मेरी श्री माता वैष्णो देवी, मथुरा तथा वृंदावन की यात्रा

चलो बुलावा आया है, माता ने बुलाया है। कहते हैं कि माता वैष्णो देवी के दरबार में वही जा सकता है जिसे माता रानी खुद बुलावा भेजती हैं, और एक बार मां का संदेशा आ गया तो भक्त रुक नहीं पाता। मैं भी अपने परिवार के साथ माता-रानी के दर्शन करने पिछले साल नवंबर के महीने में गया था। मेरे साथ मेरी माता जी और मेरी छोटी बहन भी थी। मेरे कार्यालय के मित्रगण तथा उनका परिवार भी साथ था। माता-रानी के दर्शन के लिए सबसे पहले कटरा पहुंचना पड़ता है। कटरा त्रिकूट पर्वत की पहाड़ियों में बसा एक छोटा सा शहर है तथा रेल और बस द्वारा देश के सभी मुख्य शहरों से जुड़ा हुआ है। हवाई यात्रा के लिए यात्री जम्मू तक हवाई जहाज से आ सकते हैं।

नवम्बर महीने की 22 तारीख को हमने अपनी यात्रा की शुरुआत की। हमारी रेलगाड़ी शाम 4 बजे अपने निर्धारित समय पर हावड़ा से नई दिल्ली के लिए रवाना हुई। रास्ते में सब एक साथ मिलकर हँसी-मजाक, खाना-पीना और बातचीत करते हुए सफर का आनंद ले रहे थे। अगले दिन सुबह 10 बजे हम नई-दिल्ली स्टेशन पहुँचे। वहां से हम सब पहले से ही बुक एक कार में बैठकर होटल पहुँच गए। अगले दिन हमारी नई दिल्ली से जम्मू के लिए हवाई यात्रा थी। हम सबने खाना खाकर दिनभर आराम किया। शाम को खाली समय था तो हम सब ने सोचा कि क्यों न अक्षरधाम मंदिर का दर्शन कर लिया जाए। हमलोग शाम को अक्षरधाम के लिए निकले। मंदिर में बहुत भीड़ थी। सबको लाइन से अंदर जाने की अनुमति मिल रही थी। जब हमलोग मंदिर के अन्दर प्रवेश किए तो वहां अद्भुत नजारा था। इतनी शांतिप्रिय जगह आस-पास कोई नहीं है। यह मंदिर श्री स्वामीनारायण जी की पूजा के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ शाम को सहज आनंद वाटर शो 24 मिनट की एक लुभावनी प्रस्तुति होती है जो केन उपनिषद की एक कहानी को जीवंत करने के लिए विभिन्न प्रकार के दिलचस्प मीडिया को एकजुट करती है।

हम लोगों ने वाटर शो का आनन्द लिया। करीब 11 बाजे हमलोग पुनः अपने होटल पहुँचे। अगले दिन सुबह जल्दी उठना था इसलिए सब जल्दी सो गए। हम सब को सुबह इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से जहाज पकड़कर जम्मू के लिए रवाना होना था। करीब दो बजे हम लोग जम्मू पहुँच गए। वहाँ से कटरा के लिए हमने एक कार बुक की जो कि शाम 5 बजे कटरा पहुंच गई। रास्ते बहुत ही घुमावदार थे इसलिए वक्त भी लग रहा था। हमलोग कटरा में आसानी से अपने होटल तक पहुँच गए। सभी लोग थके हुए थे इसलिए जल्दी भोजन करके विश्राम करने अपने-अपने कमरे में चले गए। सुबह जल्दी उठकर यात्रा-पर्ची भी लेनी थी। हम सब लोग सुबह जल्दी उठ गए और तैयार होकर यात्रा-पर्ची के लिए कतार में लग लग गए। लगभग आधे घंटे के अन्दर सभी लोगों की यात्रा-पर्ची मिल गई। यात्रा-पर्ची प्राप्त करने के बाद हमने अपनी यात्रा बाणगंगा चेक पोस्ट से शुरू की और माँ के दरबार की ओर चल पड़े। कटरा से माता के भवन तक की दूरी लगभग चौदह कि.मी. की है। यात्री अपनी इच्छा अनुसार पैदल, घोड़े, खच्चर या पालकी के द्वारा इसे तय कर सकते हैं। हम सब लोग एक साथ "जय माता दी" के नारों की गूंज के साथ आगे बढ़ने लगे। माता रानी का नाम लेने से ही मन में जोश और उत्साह भर जाता है। मेरा ऐसा मानना है कि माता वैष्णो देवी पैदल यात्रा करने वालों को स्वयं हिम्मत देती हैं। मैंने देखा रास्ते में बहुत सी सुन्दर दुकानें सजी थीं जहां जल-पान की व्यवस्था थी। पैदल

यात्रा अत्यंत शांति देने वाली होती है। रास्ते के एक ओर ऊँचे पहाड़ तथा दूसरी और ऊँचाई से दिखता कटरा शहर। यह दृश्य मन को मोह रहा था। मेरी माँ और बहन भी अत्यन्त प्रसन्न थी।

हमारा अगला पड़ाव चरण-पादुका था और ऐसा माना जाता है कि यहाँ पर माता-रानी के पद-चिन्ह हैं। हम लोग भी माता-रानी की धुन में चलते जा रहे थे। कुछ दूर चलने के बाद अगला पड़ाव अर्ध-कुंवारी की गुफा का था जहाँ माता रानी ने नौ मास तक रहकर तपस्या की थी। इसे गर्भ-जून गुफा भी कहा जाता है। इस गुफा से होकर गुजरना माँ के गर्भ से होकर गुजरने के समान है। हमने थोड़ी देर रुकने के बाद फिर यात्रा प्रारंभ की। रास्ते में श्राइन बोर्ड द्वारा कई भोजनालय भी बनाए गए थे जहाँ साफ-सुथरा भोजन उचित मूल्य पर मिल रहा था। वहाँ के भोजनालयों में ज्यादातर स्वादिष्ट राजमा चावल ही मिलता था। अंततः शाम को 5 बजे हमलोग माता-रानी के भवन तक पहुँचे। माता-रानी के दर्शन के बाद हमने चाय-नाश्ता किया तथा थोड़ा विश्राम भी किया। नवम्बर के महीने में वहाँ काफी ठंड भी थी। माता के भवन से कुछ ऊपर भैरो बाबा का मंदिर है। ऐसा कहा जाता है कि भैरो बाबा के दर्शन के बिना वैष्णो देवी की यात्रा पूर्ण नहीं होती इसलिए हमलोग भैरो बाबा के दर्शन के लिए चल पड़े। रात दस बजे भैरो बाबा के मंदिर पहुँचे। उनका दर्शन हुआ और फिर हमलोग पुनः अपने होटल के लिए प्रस्थान कर गए। चढ़ना जितना मुश्किल था उतरना भी उतना ही मुश्किल था। शरीर नीचे की तरफ झुक रहा था। रात दो बजे के करीब हमलोग अपने होटल पहुंचे। अगले दिन सुबह कोई भी जल्दी नहीं उठ पाया क्योंकि सबके पैरों में सूजन हो गई थी; साथ ही थकान भी थी।

शाम को सबलोग कटरा के चौक के बगल में जो बाजार था उधर घूमने निकले। मैं भी अपनी माता जी के साथ गया। माँ ने कुछ कपड़े और प्रसाद लिए। मैंने भी कुछ सुखे फल लिए। कटरा की प्रसिद्ध वस्तुओं को सबलोग खरीद रहे थे। कटरा चौक पर बादाम वाला दूध भी मिलता है जो कि बहुत ही स्वादिष्ट लगता है। हम कुछ अन्य बाजार भी गए और फिर वापस होटल आ गए। अगले दिन सुबह हमारी रेलगाड़ी थी इसलिए जल्दी सोना था। सुबह हम सब कटरा स्टेशन जाने के लिए तैयार हो गए। माता-रानी का घर छोड़ने का मन नहीं कर रहा था। वहाँ के कण-कण में माँ की उपस्थिति का अनुभव हो रहा था। कटरा बस स्टैंड से माता-रानी के भवन की तरफ

देखने से हृदय को संतुष्टि मिल रही थी। वह जगह शांतिपूर्ण थी। वहां से लौटकर घर आने का मन ही नहीं कर रहा था। हमारी रेलगाड़ी दस बजे प्रातः कटरा से नई दिल्ली के लिए रवाना होने वाली थी। हमलोग समय से स्टेशन पहुंच गए। गाड़ी आकर प्लेटफार्म पर लग गई। जय माता दी के नारे के साथ हम नई दिल्ली के लिए रवाना हुए। रात को दस बजे हम नई दिल्ली स्टेशन पहुँचे। स्टेशन पर ही सबने शयनागार में विश्राम किया। अगले दिन सुबह छह बजे बस के द्वारा हमलोगों ने मथुरा के लिए प्रस्थान किया। सफर में ऐसा लग रहा था मानो थकान ही न हो रही हो।

कृष्ण जी की नगरी मथुरा जाने की उत्सुकता बढ़ती जा रही थी। चार घंटे के सफर के बाद हम मथुरा पहुंचे। वहाँ लोग कृष्ण भक्ति में सराबोर थे। जो भी मिलता; चाहे दुकानदार हो, मिठाई वाला हो, गाड़ी वाला हो या फिर कोई राही हो सभी जय श्री कृष्ण से ही अपनी बात आरंभ कर रहे थे। होटल पहुंचकर स्नान करने के बाद हमलोग प्रेम मंदिर के लिए रवाना हुए जो कि होटल से महज तीन किलोमीटर की दूरी पर स्थित था। प्रेम मंदिर में प्रवेश करते ही ऐसा लग रहा था जैसे वहां कृष्ण हर जगह उपस्थित हों। मन भक्ति से ओत-प्रोत हो रहा था। सबने कृष्ण जी का भजन-कीर्तन किया तथा बहुत सारी कलाकृतियों के साथ मैंने अपनी तस्वीर खिंचवाई। करीब दो घंटे मंदिर के प्रांगण में रहने के बाद हम वहां से निकले। प्रेम मंदिर से कुछ ही दूरी पर एक भोजनालय था। हमने वहीं भोजन किया। वहाँ से हम होटल के लिए निकले और करीब दस बजे होटल पहुँचे।

अगले दिन सुबह वृंदावन के लिए जाना था। भक्तों का हुजूम देखकर मन प्रसन्न हो रहा था। कड़ी मशक्कत तथा लंबे इंतजार के बाद हम सभी ने बांके बिहारी के दर्शन किए। इसके पश्चात हमलोग निधिवन 'तुलसीवन' के लिए निकले। कहा जाता है कि इसे राधा और कृष्ण एवं गोपियों की लीलाओं को समर्पित एक प्रमुख स्थल के रूप में माना जाता है। मालूम होता था कि पूरा नगर कृष्ण की भक्ति में डूबा हुआ हो। मेरी माता जी वहाँ से आने का नाम नहीं ले रहीं थी। कहा जाता है कि भगवान भक्त का भाव देखते हैं और बिना भाव की भक्ति से भगवान खुश नहीं होते है इसलिए भक्ति भाव में डूबे भक्त ही भवसागर पार करते हैं। शाम को पुनः नई दिल्ली के लिए हमलोग निकल पड़े। रात में वहाँ पहुँचकर सभी ने विश्राम किया। अगले दिन शाम पाँच बजे नई दिल्ली से हावड़ा के लिए रेलगाड़ी थी। हमने सोचा क्यों न चार बजे से पहले तक लाल-किला को भी देख लिया जाए। सबलोग राजी हो गए। मेरा भी मन बचपन से ही था कि मैं एक बार लाल-किला को देखूँ। आज मेरा सपना पूरा हो रहा था। परिवार के साथ यात्रा का अलग ही महत्व होता है। हम सब लोग लाल किला गए तथा बाहर बहुत लंबी-लंबी कतारें लगी थीं। प्रवेश टिकट के लिए इतनी भीड़ मैंने कहीं नहीं देखी थी। अन्ततः लंबे इंतजार के बाद टिकट मिल गया। लाल-किले को अंदर से देख कर ऐसा लगा जैसे हम भारतीयों ने आज भी अपनी पुरानी संस्कृति तथा विरासत को संभाल के रखा है। देश के प्रधानमंत्री इसी लाल-किले से प्रति वर्ष झंडा फहराते है। यहां घूमने के बाद हमलोग सीधे स्टेशन पहुँचे। करीब तीन बजे तक हम नई दिल्ली स्टेशन पहुँच गए। रेलगाड़ी कुछ देर के बाद प्लेटफॉर्म पर आ गई। हम सभी जाकर बैठ गए और चार बजे वहां से प्रस्थान कर गए। वास्तव में यह एक मजेदार यात्रा थी तथा सबसे ज्यादा खुशी इस बात की थी कि मेरे मित्रगण और उनके परिवार भी इस यात्रा में शामिल थे। इन सब के होने से यात्रा का आनंद और बढ़ गया था। अन्ततः मेनै अपनी माता जी और बहन के साथ एक अच्छी और स्मरणीय यात्रा पूरी की। यह यात्रा उम्र भर के लिए एक अच्छी याद बनकर मेरे मन में रहेगी।

मंतोष यादव
एम टी एस

एक तीर्थयात्री की गंगासागर यात्रा

भारत में संस्कृति और धर्म, तीर्थस्थलों और मेलों से जुडे हुए हैं। गंगासागर इनमें से एक प्रसिद्ध मेला है। एक प्रसिद्ध पवित्र स्थान सागरद्वीप, गंगा और सागर का मिलनस्थल जिसे महान ऋषि कपिल के साधना क्षेत्र के रुप में जाना जाता है। त्रिमार्गी गंगा, जिसे स्वर्ग में मंदाकिनी और पाताल में भोगबती के नाम से जाना जाता है, अंतत: मार्गदर्शक भगीरथ की मदद से हमारी पृथ्वी को छू गई इसलिए इसे पृथ्वी पर भागीरथी के नाम से जाना जाता है। एक तरफ निर्मल गंगा और दूसरी तरफ कपिल मुनि का निवास, गंगासागर में हर जगह मोक्ष है। मकर संक्रांति वर्ष के सबसे शुभ समयो में से एक है जो सूर्य के दक्षिणायन से उत्तरायण में पारगमन का प्रतीक है। मकर संक्रांति के अवसर पर लाखों लोग गंगा नदी और बंगाल की खाडी के संगम पर डुबकी लगाने के लिए सागरद्वीप जाते हैं। एक कहावत है- सभी सागरों में कई बार जाया जा सकता है, लेकिन गंगासागर में केवल एक बार। ऐसा माना जाता है कि यहां डुबकी लगाने से तीर्थयात्री को उसके सभी पापों से मुक्ति मिल जाती है इसलिए आप मकर संक्रांति के दिन हजारों तीर्थयात्रियों को सुबह भगवान सूर्य की पूजा करते हुए गंगा के पवित्र जल में डुबकी लगाते देखेंगे। गंगासागर में डुबकी लगाने का महत्व महाभारत काल से है। किंवदंती है कि एक विद्वान ऋषि ने भीमसा को सागर में स्नान करने का महत्व समझाया था। आत्मा की शुद्धि और बुरे कर्मों का पश्चाताप प्रत्येक हिंदू चाहता है और इसलिए अनादि काल से इसका अभ्यास किया जाता रहा है।

गंगासागर मेले के जन्म के संबंध में एक पौराणिक संकेत है। राजा सगर ने एक बार इस ब्रह्मांड का शासक बनने की महात्वाकांक्षा में अश्वमेघ यज्ञ आयोजित करने की योजना बनाई। एक घोडा जिसे पूरी जमीन और पानी पर दौड़ना था, उसे स्वर्ग के राजा इंद्र ने चुरा लिया था क्योंकि उसे डर था कि उसका राज्य सगर राजा द्वारा हड़प लिया जाएगा। चुराया गया घोड़ा कपिल मुनि के आश्रम में रखा हुआ था जिसके बारे में उन्हें कोई जानकारी नहीं थी। सगर के साठ हजार पुत्रों ने घोड़े की खोज शुरु की और अंत में कपिल मुनि के आश्रम में घोड़े को पाया। उन सबने कपिल मुनि के खिलाफ गंदे शब्दों का इस्तेमाल करना शुरु कर दिया जिससे कपिल मुनि ने अत्यधिक क्रोधित होकर सगर के सभी पुत्रों को जलाकर राख कर दिया। राजा सगर को इसके बारे में सब कुछ पता चला तो उन्होनें अपने पुत्रों के कर्म की क्षमा-याचना की। कपिल मुनि ने बताया कि उनके फिर से जीवित होने का केवल एक ही रास्ता है। सगर या उनके किसी एक वंशज को स्वर्ग से पृथ्वी पर कपिल मुनि के आश्रम के पास गंगा को लाना होगा और तभी वे अपने पाप से मुक्त हो सकेंगे। यह भगीरथ थे जो कठोर तपस्या के माध्यम से गंगा को भूमि पर ले आए और फिर उन्हें अपना जीवन वापस मिल गया। उसी समय से गंगासागर मेला और पवित्र गंगा में स्नान की शुरुआत हुई।

आस्था की लहरों में गोता लगाएं, विश्वास में सांस लें, शांति के तट पर चलें और यात्रा में शामिल हों, सभी दु:खों को दूर करने के लिए मोक्ष, इसलिए गंगासागर स्नान को पवित्र स्नान कहा जाता है। गंगासागर मेला कुंभ के बाद विश्व का दूसरा सबसे बड़ा मेला है। यहां पर पवित्र गंगा और बंगाल की खाड़ी पर मानव समागम होता है। गंगासागर मेला का उल्लेख महाभारत और रामायण में मिलता है जो इसे लगभग ईसा पूर्व 400 के पहले का बताता है। गंगासागर गंगा डेल्टा में एक द्वीप है जो कोलकाता से लगभग सौ किलोमीटर दक्षिण में बंगाल की खाड़ी के महाद्विपीय शेल्फ पर स्थित है। एक समय गंगासागर की यात्रा बहुत खतरनाक, जोखिम भरी और महंगी थी। अब गंगासागर की यात्रा इतनी आसान और बिना किसी परेशानी की हो गई है कि कोई भी व्यक्ति सुबह-सुबह गंगासागर की यात्रा शुरू कर सकता है और पूजा, दर्शन और पवित्र स्नान के बाद रात नौ बजे तक वापस लौट सकता

है। सुबह आठ बजे के तक धर्मतल्ला के काकद्वीप बस मार्ग द्वारा नया रास्ता स्टॉप पर जाकर वहां से ऑटो द्वारा लॉट नं. आठ पर जाकर घाट से कटुबेरिया तक लगातार नौका सेवा उपलब्ध है। जिसमें लगभग आधे घंटे का समय लगता है। कचुबेरिया से मेला क्षेत्र तक पहुंचने के लिए बहुत सारी बसें/टैक्सी/टोटो/जीपें उपलब्ध हैं। दूरी लगभग तीस कि.मी. है और किराया लगभग पचास रुपये है। मेले के दिनों में अस्थायी तंबू/आश्रम/निजी कमरे या सरकारी और निजी होटलों में ठहर सकते है। लेकिन मेले के दिनों में पूर्व बुकिंग को प्राथमिकता दी जाती है। पश्चिम बंगाल सरकार मेले के दिनों में तीर्थयात्रियों की सुख-सुविधाओं का ध्यान रखती है। एक हजार से अधिक निजी बसें, अस्थायी अस्पताल, एयर लिफ्ट, हैंड रेडियो, विशेष ट्रेन, भोजन की गुणवत्ता की अचानक जांच, फायर ब्रिगेड, दवा की दुकानें, बहुत सारी सरकारी और निजी दुकानें, मंत्रियों और उच्च स्तरीय सरकारी अधिकारियों की उपस्थिति, विशाल स्वयंसेवक दल सब कुछ मेला मैदान में उपलब्ध है। व्यावहारिक रुप से, अब गंगासागर मेला काफी आधुनिक है।

इस यात्रा को आसपास के अन्य आकर्षणों जैसे कि सागरद्वीप में कपिल मुनि मंदिर के साथ आयोजित की जाने वाली प्रार्थनाओं और पूजा पाठ के लिए जाना जाता है। इसके अलावा आप मेला स्थल, समुद्री तट, सागर समुद्री पार्क, सागर लाइट हाउस, बंदरगाह, रामकृष्ण मिशन आश्रम, सुषमा देवी चौधुरानी समुद्री जैविक अनुसंधान संस्थान और चिमागुरी मडपलैट की यात्रा कर सकते हैं। यहां का दृश्य तस्वीरें लेने के लिए सबसे उपयुक्त है। यदि आप कैमरा लेकर चलते हैं तो इसका अच्छा उपयोग कर सकतें हैं। इस वर्ष मकर संक्रांति के दिन लगभग दस लाख तीर्थयात्रियों नें गंगासागर में डुबकी लगाई। कपिल मुनि आश्रम में पूजा-अर्चना के बाद श्रद्धालुओं नें संगम तट पर पवित्र डुबकी लगाई। यह दिन सूर्य के मकर राशि में पारगमन के पहले दिन को दर्शाता है, जो शीतकालीन संक्राति के अंत और लंबे दिनों की शुरुआत का प्रतीक है। चूँकि ऐसी मान्यता है कि केवल एक गंगासागर स्नान से अश्वमेघ यज्ञ का फल मिलता है इसलिए प्राचील काल से लोग गंगासागर में एकत्र होते हैं। मकर संक्रांति के अवसर पर गंगासागर मेले के दौरान पवित्र स्नान करने के लिए देश के विभिन्न हिस्सों से श्रद्धालु और नागा साधु भी कोलकाता के बाबूघाट पर एकत्र होते हैं।

चूंकि कोलकाता एक पारगमन विंदु के रुप में कार्य करता है इसलिए सभी लोग यहीं रुकते हैं और फिर गंगा सागर मेले में जाने और वापस आने के लिए सरकारी बसों का लाभ उठातें हैं। वे इस हेतु बाबूघाट क्षेत्र में कई दिनों तक इंतजार करते हैं। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, उत्तराखंड आदि से वार्षिक तीर्थयात्रा मेले के लिए पश्चिम बंगाल आने वाले साधुओं और भक्तों के लिए बाबूघाट में अस्थायी पड़ाव स्थापित किया जाता है। गंगासागर मेला सिर्फ एक तीर्थयात्रा नहीं बल्कि आस्था और आध्यात्मिकता का मिश्रण है। नदी और समुद्र के संगम पर कपिल मुनि के आश्रम के पास पवित्र जल शुभ है, विशेष रुप से मकर संक्रांति के दौरान। यह आत्मा को शुद्ध और सभी सांसारिक पापों से मुक्त करता है। ऐसा माना जाता है कि शुभ क्षण में सही स्थिति में डुबकी लगाने से व्यक्ति को सभी सांसारिक पापों से मुक्ति मिल जाती है और उसे मोक्ष प्राप्त करने में मदद मिलती है।

सौमी बन्दोपाध्याय

डी.ई.ओ.

दया और विश्वास

जीवन के दो आधार
जीत और हार
इंसानियत के लिए जरूरी है ख़ास
दया और विश्वास

वो जीवन ही क्या
जिसमें इंसानियत न हो
और वह इंसानियत ही क्या
जिसमें दया और विश्वास न हो

कुर्सी के खातिर तुम
खेल ऐसा खेल गए
हँसते-खिलखिलाते परिवार की
सारी दुनिया बिखेर गए

क्या पूछते हो तुम उनसे
जिसकी दुनिया गयी उजड़
उसकी औकात होती बोलने की
निकाल दी होती तुम्हारी अकड़

तुम्हारे घर भी मातम पसरा होता
यदि टक्कर होती तेरे बराबर की
न तू होता न तेरा घमंड होता
तैयारियां होती तेरे जाने की

गर फिर भी तूने हार न मानी
वो दिन दूर नहीं
जब तेरे अपने ही तुझे
गंगा किनारे जलाते नजर आएंगे

हम तो गुलाम हैं
उपर वाले के
वो जैसा आदेश देगा
बिस्तर बांध तैयार हो जायेंगे

तू भी अपनी आदत सुधार ले
अपने कुकर्मों को विराम दे
हुई है जो गलतियां तुझसे
उन गलतियों को जीते जी स्वीकार ले3

कर कुछ ऐसा
देख वो तुझे बर्दाश्त करे
कुछ तो तेरे अच्छे कर्मों का
तेरे अपनों पर उसका आशीर्वाद बने

क्या पता.. ..
उसने हिसाब लिख रखा होगा तेरा
शायद कुछ रियायत कर दे
जीवन भर के तेरे पापों का
शायद कुछ जायज हिसाब कर दे

धनेश कुमार
डीईओ

त्योहार

त्यौहार मुक्ति लाता है
त्यौहार रोशनी लाता है,
उत्सव का अर्थ है खुशी का दिन
उत्सव का अर्थ है शुभ

उत्सव में मन जाग उठता है
लड़का आँगन में खुश है,
उत्सव का अर्थ है उत्सव का दिन
त्योहार से प्यार है

उत्सव का अर्थ है संतुष्टि
उत्सव का अर्थ है पाना,
त्योहार का मतलब है गले मिलना
एक साथ गाना

उत्सव का अर्थ है जो आप चाहते हैं
बंधन के बिना कोई बाधा नहीं है,
खुली बाहें फैला हुआ मन
मायावी स्पर्श,

त्यौहार ऐसा हो
रेत के कण की तरह,
प्रकाश का विवर्तन
मन के पंख लगे

जितने भी देवी-देवता
मनुष्यों के पास आये हैं
खुशी के नशे में चूर
महान भावनाओं के साथ रंगीन जुनून

हम बिखरे हुए हैं
लेकिन दरवाजे खुले हैं
सड़क पर उतरें और अपना ख्याल रखें
दोनों हाथ उठाओ और गले लगाओ
देखिये दोस्त मिलते हैं या नहीं?

प्रकाश फैलाओ, जीवन फैलाओ
जितना भूलने में गर्व है
आज मिलन मेला का पर्व है
सब आओ गले मिलो।

अभिजीत दत्ता
सहायक लेखा अधिकारी

कृत्रिम बुद्धिमत्ता

रतन बाबू एक गैर-सरकारी संस्था में काम करते हैं। उनकी पत्नी तभी गुजर गई थी जब उनका बेटा रोहन दस साल का था। रतनबाबू ने रोहन को माता और पिता दोनों का स्नेह दिया। रोहन आज ग्रेजुएट है किंतु अपने पिता को छोड़कर कोलकाता से बाहर नौकरी करने नहीं जा सका। सुबह पिता-पुत्र को ऑफिस जाने की जल्दी है। रोहन पिताजी का नाश्ता तैयार कर रहा है। तभी उसके दादा जी का फोन आया और रोहन ने अपने पिताजी को फोन दे दिया क्योंकि दादाजी को उन्हीं से बात करनी थी। रोहन के दादा कोलकाता में किसी बैंक में कर्मचारी थे। वे कर्मचारी यूनियन के नेता थे। उन्होंने बैंक में कंप्यूटर और तकनीक के प्रयोग के विरोध में आंदोलन किया था। बाद में उन्हें इस्तीफा देना पड़ा। मन में जनसेवा और अशिक्षा दूर करने का प्रण लेकर उन्होंने बिहार से सटे इलाकों व झाड़ग्राम में जमीन लेकर एक एनजीओ बना लिया। उस गाँव अचिनपुर में न ठीकठाक बिजली है, न ही इंटरनेट और फोन की सुविधा। गाँव में लोगों को शिक्षित करने के लिए उन्होंने एक प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालय प्रारंभ किया। एक महाविद्यालय भी बनने की सरकारी स्वीकृति मिलने की खुशी में उन्होंने अपने बेटे को फोन किया था। अपने पिताजी की आवाज सुनकर रतनबाबू को उनकी अच्छी सेहत और प्रसन्नता का आभास हुआ। वहाँ आने-जाने की बहुत समस्या है। सिर्फ दो ट्रेनें हैं जो कभी समय पर नहीं मिलती हैं।

रोहन अपनी बाइक से ऑफिस निकल गया। वह एक विज्ञापन कंपनी में कॉपीराइटर है। वहाँ इतना सारा काम होता है कि सिर उठाने का समय नहीं मिलता...अखबार, टीवी और सोशल मीडिया आदि के लिए विज्ञापन बनाना...और भी। अब एक नया काम भी आ गया है। एक कंप्यूटर अप्लीकेशन अरियन पर उसे काम करना पड़ेगा। यह कृत्रिम बुद्धिवाली एक तकनीक है जो विज्ञापनों का सारा कम खुद ही कर देती है...अनुवाद, डिजाइनिंग आदि से लेकर कंटेंट राइटिंग तक..सब। रोहन को उसके द्वारा किए गए काम में थोड़ा बहुत संशोधन करना है। इस अप्लीकेशन के काम में कोई क्रम नहीं हैं, कोई भाव नहीं है। इतना काम करके भी उसे बहुत कम पैसा मिलता है। बाइक की किश्त भी भरनी पड़ती है।

आज ऑफिस पहुँचते ही रोहन ने पाया कि माहौल बहुत तनाव भरा है। सब अपनी डेस्क पर सिर नीचा करके बैठे हैं। रोहन के बगल में बैठने वाली पूर्णिमा गुस्से में है। रोहन ने उससे पूछा- क्या हुआ तुमको? वह बोली- बॉस तुमको बुला रहे हैं। रोहन ने सोचा कि क्या हुआ है? बॉस के केबिन में जाने पर बॉस मिस्टर कपूर ने उससे कहा- एक बुरी खबर है मिस्टर रोहन। दो कॉपीराइटर को तीन महीने का वेतन देकर नौकरी से निकाला जा रहा है। उनमें से तुम एक हो। रोहन ने चौंककर कहा- लेकिन क्यों सर? बॉस ने कहा- कंपनी ने बहुत खर्चा करके इस एप को खरीदा है। अबसे सारा काम वही करेगा। रोहन बोला- सर, उसकी गुणवत्ता बहुत खराब है। मिस्टर कपूर बोले- आज यह खराब है समय के साथ सही हो जाएगा। सारी दुनिया इस परिवर्तन को स्वीकार करेगी। आज की सारी कमियों को दूर करके यह सफल बन जाएगा। आजकल विज्ञापन, सोशल मीडिया में गुणवत्ता के नाम पर कुछ नहीं है। अरियन सब कुछ कर लेगा। तुम लोगों की अब कोई जरूरत नहीं है। रोहन सब समझ गया लेकिन फिर भी उसने कहा- आप गलत समझ रहे हैं। मशीन कभी भी इंसानों की जगह नहीं ले सकती। बॉस ने कहा- ठीक है, ठीक है.. जाओ जब जरूरत होगी तो बुला लेंगे। अलविदा रोहन। रोहन रो भी न सका। उसके मन में विद्रोह और संशय का तूफान शुरू हो गया। बहुत साल पहले दादाजी भी कंप्यूटर के आने के कारण बेरोजगार हो गए थे। और आज खुद वह भी..। अंशु को ये बताना नहीं है। लेकिन उसी समय अंशु का फोन आ गया।

अंशु और रोहन की मुलाकात सोशल मीडिया पर हुई थी। धीरे-धीरे नजदीकियाँ बढ़ती गई। अंशु एक विधवा महिला थी। अपने माँ-बाप की इकलौती बेटी। बचपन में ही पिता के गुजर जाने से उसकी माँ ने उसे बहुत कष्ट से पाल-पोसकर बड़ा किया था। अंशु पढ़ाई के साथ-साथ कविता-लेखन और सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेने की शौकीन थी। कॉलेज के दौरान मिमिक्री और पशु-पक्षियों की आवाज की नकल करना उसका शौक बन गया। ऐसे ही एक कॉलेज फेस्टिवल में रिमा मैडम ने अंशु को बुलाया था। दक्षिणी कोलकाता में उनका एक स्टूडियो था। इसमें विभिन्न प्रकार के कार्टून, फिल्मों की विभिन्न भाषाओं में डबिंग की जाती थी। रिमा मैडम ने अंशु को वॉयस आर्टिस्ट के रूप में नियुक्त किया था।

सुबह दस से रात नौ बजे तक काम चलता था इसलिए सप्ताह भर रोहन से मुलाकात नहीं हो पाती थी। सप्ताह के अंत में वे किसी रेस्टोरेंट में मिलते थे और अपना सुख-दुख कहते थे। उनके परिवार वाले दोनों के रिश्ते के बारे में जानते थे और उन्हें कोई आपत्ति न थी। और न ही किसी को कोई जल्दबाज़ी थी। आज जब अंशु स्टूडियो पहुंची तो यहाँ भी वही एआई का बवाल मचा था। सब रिमा मैडम की डेस्क पर एक पुस्तिका को देख रहे थे। सबकी आँखों में डर और चिंता व्याप्त थी। रिमा मैडम ने कहा- अगले हफ्ते से अंशु और सुखरंजन की जरूरत नहीं है। ऑटोवॉयस एप सारा काम कर लेगा। सुखरंजन चिल्लाकर बोला- मैं क्या करूंगा? मुझे कौन सा काम मिलेगा? अंशु बोली- इस एप के फ्री वर्जन को चलाकर मैंने देखा था। बहुत खराब है ये। मशीन जैसी आवाज है इसकी। रिमा ने कहा- फ्री में सब अच्छा नहीं मिलेगा। लेकिन अब सारा काम इसी से हो जाएगा। अब यही आर्टिस्ट है। इसमें सारी विशेषताएं सेट करने पर इच्छानुसार आवाज मिलेगी, काम जल्दी होगा और ज्यादा काम मिलेगा। खुद मेरी बेटी की नौकरी इसी एआई की वजह से चली गई। मैं दुखी हूँ लेकिन मैं तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर सकती। अंशु रोने लगी। उसने रोहन को फोन लगाया।

आज कोई रेस्टोरेंट नहीं...दोनों चलते हुए रवीन्द्र सरोवर लेक तक आए। आज दोनों बेरोजगार थे। कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने उनकी नौकरियां छीन ली। दोनों ने इन्हीं नौकरियों के दम पर जीवन में आगे जाने का सपना देखा था..एक दूसरे के साथ। आज अचानक ये सपना टूट गया। दोनों एक कड़वी सच्चाई का सामना कर रहे थे। दोनों की आँखों के आँसू एक-अगले चार दिन से अंशु, रोहन, सुखरंजन हर रोज मिलते रहे। सभी नौकरी की तलाश में थे लेकिन सेक्युरिटी गार्ड और सेल्समैन के अलावा कोई नौकरी उपलब्ध नहीं थी। डाटा एंट्री ऑपरेटर या डेलीवरीमैन की नौकरी से घर का खर्चा चलाना और बीमार माँ की देखभाल करना संभव नहीं था। रोहन के पिता रतनबाबू इन सबकी हालत देखकर घबरा गए। उन्होंने अचिनपुर में अपने पिता को फोन किया और जैसे ही उन्होंने रोहन की बात की, रोहन ने फोन छीन लिया और बोला- दादाजी, आपके यहाँ कोई काम है क्या, जहां मशीन की जरूरत न हो? दादाजी ने हँसकर कहा- जो गलती मैंने पहले की थी, वही आज फिर करूँ क्या? कोशिश है कि मशीन, मशीन चलानेवाले को कोई नुकसान न करे। लेकिन हुआ क्या है? नेटवर्क खराब था। लेकिन धीरे-धीरे रोहन ने उन्हें सब समझाया। दादाजी ने कुछ सोच-समझकर कहा- अचिनपुर में लड़के और लड़कियों के लिए दो अलग-अलग कॉलेज बन रहा है, उसके लिए सभी नियुक्तियाँ हो गई हैं। लेकिन कॉलेज के साथ जो हॉस्टल बन रहा है उसके एक पुरुष और एक महिला पर्यवेक्षक का पद खाली है। यह एक फुलटाइम नौकरी है और यहीं रहना है। यह काम किसी एआई से नहीं होगा। छात्रों के चरित्र-निर्माण लिए मनुष्यों की जरूरत होती है। मनुष्य शब्द होकर सुनकर रोहन और अंशु की आँखें चमक उठीं। रोहन चिल्लाया- दादाजी, हम आ रहे हैं। दादाजी बोले- मुझे कॉलेज ट्रस्ट की अनुमति लेनी होगी। और इस नौकरी की एक लंबी प्रक्रिया भी होती है। रोहन बोला- दादाजी, जो भी हो, हम आ रहे हैं।

वहाँ जाने के लिए एक ही ट्रेन थी, जिसमें बहुत भीड़ होती है। रोहन और अंशु किसी तरह से बैठ सके। एक्सप्रेस ट्रेन बिल्कुल लोकल की तरह चलती है। जब ज्यादातर यात्री उतर जाते हैं तो इसकी रफ्तार बढ़ती है। खेत-खलिहान सब पीछे छूट रहे हैं.....अब अचिनपुर स्टेशन आ गया। रोहन और अंशु स्टेशन पर उतरे तो उन्होंने पाया कि वहाँ तो आवेदकों की पूरी भीड़ ही उतर रही है। सभी को मालूम हो गया था कि यहाँ मनुष्यों की जरूरत है। किसी भी पैरामीटर से एआई इस काम को नहीं कर सकता। वे घबरा गए कि कहीं उन्हें बाहर न कर दिया जाए। रोहन ने अंशु से कहा- रन अंशु रन...रन फास्ट। वे सब इसी पद के लिए आए हैं। हमको सबसे पहले पहुंचना पड़ेगा। रोहन ने पाया कि सैकड़ों आवेदक इस दौड़ में शामिल हैं। अंशु और रोहन और तेजी से दौड़ने लगे...इंसानियत की दौड़।

तापसी आचार्य बसाक
सहायक लेखा अधिकारी

बदलाव

साधना मैडम बैंक में घुसते ही निराशा से भर गईं। सभी काउंटरों पर लंबी-लंबी कतारें लगी थीं। डेस्कों के सामने भीड़ लगी थी। सीढ़ियां चढ़ने के कारण वह बुरी तरह हांफ रही थीं। एक कुर्सी तक खाली नहीं बची थी कि थोड़ा सुस्ता लें। पसीने की रेख माथे से बहकर उनके कान के पीछे जा रही थी। उन्होंने अपनी ऐनक उतारी, पल्लू से चेहरा थपथपाया, बेतरतीब सफेद बालों पर हाथ फिराया और ऐनक पुनः लगाकर वह इस डेस्क से उस डेस्क पूछताछ करने लगीं। काफी मशक्कत के बाद उन्हें समझ आया कि उनके काम का मामला डेस्क नम्बर नौ से है। उन्होंने देखा कि उसी डेस्क पर कतार सबसे लंबी थी। वे अपने कागजात समेटकर लाइन के पीछे खड़ी हो गईं। साधना मैडम जो बैंक की कतार में खड़ी थीं, लगभग घबराकर पीछे हटीं। इस तरह झुक कर कोई उनके पैर छुए! अपरिचित सा व्यक्ति। अपरिचित भला क्यों उनके पैर छूने लगे! कोई परिचित ही होगा। लंबा कद, हल्के आसमानी रंग का सूट पहने, आकर्षक व्यक्तित्व। कहीं ये पुष्पा का बड़ा बेटा तो नहीं। साधना मैडम एकटक उस युवक को निहार जा रही थी, जिसने अभी-अभी उनके पैर छुए थे। ना, ये पुष्पा का बेटा नहीं है। तो फिर कौन? युवक के चेहरे पर मुस्कान की गहरी लकीर खींची थी। युवक बोला, लगता है आपने मुझे पहचाना नहीं मैडम। आइए मेरे साथ। साधना मैडम कहना चाहती थीं कि सचमुच वह उसे पहचान नहीं पा रहीं। वह इस बैंक में अरसे बाद आई हैं। बैंक में कितने नए चेहरे दिख रहे हैं। पर वह कुछ कह नहीं पाईं। अपने बैग को कंधे पर संभालते हुए सम्मोहित सी वे उस युवक के पीछे हो लीं। कतार से निकलकर दो-चार कदम चलने पर मानों साधना मैडम की चेतना आई। वह युवक से बोलीं- माफ कीजिएगा, आप कौन हैं, मैंने आपको पहचाना नहीं? दरअसल मैं कुछ जरूरी काम से बैंक आई हूँ। उसे निपटा लूँ। इस पर उस युवक ने पुनः जोर देकर कहा- पहले आइए मेरे साथ प्लीज। उस युवक ने साधना मैडम को बैंक के कोने में कांच की दीवारों से बने केबिन में बिठाया। स्वयं उनके सामने बैठ मंद-मंद मुस्कुराने लगा। ऐसा लगा वह मैडम से कह रहा हो कि मैडम मैं तो आपको पहचान गया, अब आप भी पहचानें।

साधना मैडम वाकिफ थीं कि वह बैंक के ब्रांच मैनजर के केबिन में बैठी हैं। बैंक शाखा प्रबंधक ने उनके पैर छुए! साधना मैडम की नजरें लगातार उस युवक को पहचानने का प्रयत्न कर रही थीं।

युवक बोला- यहाँ क्या काम था मैडम बताइए। साधना मैडम को अपने काम का स्मरण हुआ। उनके पेंशन के रुपए इस महीने नहीं आए थे। कुछ जरूरी कागजात ट्रेजरी और बैंक में जमा करने थे। वह पिछले कुछ दिनों से इस ऑफिस से उस ऑफिस भटक रही थीं। पेंशन ही तो बुढ़ापे का संबल है। साधना मैडम ने सारे कागज शाखा प्रबंधक की मेज पर धर दिए। युवक उन कागजों को गंभीरता से देखने लगा। फिर उसने टेलीफोन पर किसी को बुलाया। एक बुजुर्ग से दिखने वाले बैंक कर्मी शाखा प्रबंधक के केबिन में आए। उन दोनों में कुछ मिनट धीमी आवाज में कुछ बातें हुईं। युवक ने बुजुर्ग बैंक कर्मी को कुछ हिदायत देते हुए सारे कागजात उन्हें सौंप दिया। जब वे कागजात लेकर केबिन से निकले तो युवक फिर साधना मैडम के मुखातिब हुआ। उसके चेहरे पर पुनः वही मुस्कान खिंच गई। युवक बोला, मैडम आपका काम आज हो जाएगा। पेंशन शुरू हो जाएगा। चिंता न करें। साधना मैडम ने कृतज्ञता के भाव से हाथ जोड़ दिए।

केबिन में तभी एक आदमी आया और दो कप कॉफी उन दोनों के सामने रख गया। युवक ने साधना मैडम को कॉफी पीने का अनुरोध किया। मैडम उस युवक के सदव्यवहार से काफी असहज महसूस कर रही थी। वह झिझकते हुए युवक से बोलीं- सर आपका नाम क्या है? आप मुझे कैसे जानते

हैं? मैं आपको पहचान नहीं पा रही। युवक बोला- पर मैं तो आपको पहचान गया साधना मैडम। कभी मैं आपका विद्यार्थी था। छात्र मंगल सेमिनरी हाईस्कूल में आपसे पढ़ा हूँ। कुछ याद आया मैडम।

मैडम प्रसन्न भाव से बोली- मुझे लगा था, हो न हो मेरा कोई स्टूडेंट ही होगा। तुम्हारा नाम क्या है? मेरा मतलब है आपका नाम क्या है? युवक बोला- कोई बात नहीं मैडम। आप मुझे 'तुम' कहकर संबोधित कीजिए। मेरा नाम आदित्य है। 2001 में आपके स्कूल से पास हुआ। मैडम युवक को देखते हुए उसे याद करने की कोशिश कर रही थी। युवक बोला- आप मेरा यह नाम भूल गई होंगी। स्कूल में सभी मुझे डैनी बुलाते थे। आपको पवन, अशोक, रवि, अमृत ये सब नाम याद है। ये सब मेरे क्लास में ही थे। साधना मैडम को लगा कोई खोई हुई पुरानी चीज उनके हाथ लगी हो और उस चीज से जुड़ी सभी स्मृतियां जीवित हो उठी हों। वह जोर से बोली- हाँ-हाँ याद आया। डैनी-डैनी। अमृत के साथ थे तुम। काफी बदल गए हो तुम। अब तुम्हारे स्कूल के दिनों का चेहरा तुम में देख पा रही हूं। कॉफी का एक लंबा घूंट लेकर मैडम ने कप टेबल पर रख दिया। कुछ सहज होकर बोली- तुम इस बैंक के मैनेजर हो। मुझे पता ही नहीं था। तुम तो कहीं बाहर चले गए थे न। डैनी बोला- हाई स्कूल पास कर मैं अपनी बड़ी दीदी के पास दिल्ली चला गया था। वहीं जाकिर हुसैन कॉलेज से पढ़ाई की। फिर मुंबई से मैनेजमेंट किया। कुछ सालों तक विदेशों में नौकरी की। पर मन नहीं लगा। इन दिनों यहीं हूँ। साधना मैडम अपलक डैनी की बातें सुन रही थीं। डैनी अपने क्लास का बेहद शरारती लड़का था। पढ़ाई में औसत था। दोस्तों की टोली बनाकर चौकड़ी मारना उसका प्रिय काम था। साधना मैडम को याद आया कि वह उसे कई बार डांट चुकी थीं। कितनी बार उसके पिता को बुलाकर शिकायत करनी पड़ी थी।

साधना मैडम बोली- तुम्हारा नाम आदित्य है, मै तो भूल ही गई थी। तुमने जैसे ही डैनी नाम बताया मुझे सब याद आ गया। वैसे ऐसा अद्भुत नाम किसने रखा। डैनी हंसते हुए बोला- मैडम, उन दिनों हम बड़े शरारती हुआ करते थे। आपको दुबे सर तो याद ही होंगे। बड़े मजाकिया और खुशमिजाज टीचर थे। एक बार उन्हें न जाने क्या सूझी, उन्होंने स्कूल के कुछ लड़कों के नाम हिंदी सिनेमा के विलेन के नाम पर रख दिए। किसी नाम उन्होंने रखा था अमरीश पुरी, किसी का गुलशन ग्रोवर, किसी का गब्बर सिंह। मेरे हिस्से डैनी आया था। बाकी लड़कों के विलेन उपनाम कुछ रोज के सभी भूल गए। पर मेरा नाम डैनी सबके जुबान पर चढ़ गया। सभी स्टूडेंट्स यहाँ तक कि टीचर्स भी डैनी ही बुलाते थे।

-ओह सॉरी आदित्य। ऐसा नहीं होना चाहिए था।

-इट्स ओके मैम। मैंने इसकी ज्यादा परवाह नहीं की।

-अमृत मिला था कुछ महीने पहले। बड़ी बुरी हालत है बेचारे की। उसके जैसा होनहार छात्र को कुछ बड़ा करना चाहिए था।

-अमृत मुझे भी मिला था मैडम। आजकल शायद ट्युशन पढ़ाता है। ट्युशन पढ़ाना बुरा नहीं है।

-उसकी माली हालत ठीक नहीं है डैनी। दो चार छात्रों को ट्युशन पढ़ाकर कितना कमाता होगा! अफसोस! वह हमारे स्कूल का बेस्ट स्टूडेंट था। क्लास में हमेशा फर्स्ट आता था। पढ़ाई के अलावा कुछ जानता ही नहीं था। हम सभी टीचर्स की बहुत उम्मीदें थी उससे।

मैडम और आदित्य सीढ़ियों से नीचे उतर रहे थे। लिफ्ट के मेंटेनेंस का काम चल रहा था। मैडम रेलिंग थामे एक एक सीढ़ी नीचे उतर रही थीं। मैडम के मना करने के बावजूद भी आदित्य उन्हें नीचे तक छोड़ने आया था। मैडम बोली, उम्र

हो गई है। घुटनों में दर्द रहता है। सीढ़ी चढ़ने-उतरने में थोड़ी तकलीफ होती है। आदित्य बोला लिफ्ट के मेंटेनेंस का काम आज ही खत्म हो जाएगा। एक और लिफ्ट लगवाने की बात चल रही है। कस्टमर्स को आए दिन परेशानी का सामना करना पड़ता है।

आदित्य कुछ देर ठहर कर बोला, जानती हैं मैडम, आपको देखकर मैं भी पहली बार पहचान नहीं पाया था। करीब 25 सालों के बाद आपको देखा है। आप स्कूल की सबसे स्मार्ट टीचर थीं। आपके गोल्डन रिम का चश्मा, आपके कपड़े, आपके जूते यहाँ तक कि आपका छाता भी खास हुआ करता था। आप ही एकमात्र टीचर थी जो परफ्यूम यूज़ किया करती थीं। आप जितनी देर क्लास में होती थी, पूरा क्लास महकता रहता था। यहाँ तक कि आप जिस स्टूडेंट की किताब हाथ में लेकर पढ़ाती थी, उस किताब में सुवास बस जाता था। साधना मैडम झेंप गईं।

बोलीं- मैं क्या केवल बन-ठन कर स्कूल में टहला करती थी या बच्चों को पढ़ाया भी करती थी।

-आप पूरे स्कूल की सबसे ज़हीन टीचर थीं मैडम। आप जब इंग्लिश पढ़ाती थी तो क्या मजाल कोई चूं तक करे। इंग्लिश लिटरेचर और ग्रामर में आपके नॉलेज से सभी टीचर्स वाकिफ थे। स्टूडेंट्स के लिखने हुई में छोटी से छोटी गलती भी आपके नजरों से बच नहीं पाती थी। पता है मैडम आपके पीछे हमसब आपको 'ग्रामर नाज़ी' कहा करते थे।

-ग्रामर नाज़ी! मैडम बरबस हँस पड़ी।

डैनी बोला- जानती हैं मैडम। मेरे स्मृति में अब तक आपकी पहले वाली छवि थी। 25 साल पहले की। समय के साथ चेहरे बदल जाते हैं। अपने किसी रोल मॉडल के चेहरे पर बढ़ती उम्र के निशान देखना पीड़ादायक होता है। मेरी माँ भी आपके उम्र की ही होंगी। वे तो और बूढ़ी दिखती हैं। पर उनका बुढापा तिनका तिनका मेरे सामने घटित हुआ। अचानक परिवर्तन नहीं दिखा। आपसे मिलकर अच्छा भी लगा, साथ ही आपकी 25 साल पुरानी छवि के मिटने पर दुख भी हो रहा है। अपनों को बूढ़ा और कमजोर होते देखना तकलीफ देता है। आदित्य ने अपनी बात दोहराई। साधना मैडम हँसते हुए बोली- डोंट बे सिली। आई एम स्टिल यंग आदित्य। आदित्य भी मुस्कुरा दिया।

टैक्सी में बैठी साधना मैडम आदित्य के फोन नम्बर को सेव करने का प्रयास कर रही थीं। आदित्य के व्यक्तित्व ने उन्हें अपने टीचर होने के गर्व से भर दिया था। कितना समझदार और सुलझा हुआ बन गया है अब। उन्हें लगा उसकी जगह अगर वह अमृत को देखतीं तो शायद रत्ती भर आश्चर्य न होता। लेकिन उनके स्कूल में केवल एक अमृत ही असफल नहीं हुआ। उन्हें स्मरण आया ऐसे कई चेहरे जो किताबी कीड़े थे। सोते-जागते, नहाते-खाते उन्हें बस पढ़ाई ही सूझता था। उन्हें न दोस्तों के साथ समय बिताना पसंद था, न ही खेलने-कूदने का। ऐसे न जाने कितने अमृत उन्होंने खुद तैयार किए। कितने अमृतों के पीठ थपथपाकर शाबाशी दी थी। पर आगे चलकर वे जीवन के व्यावहारिक दौड़ में पिछड़ते गए। शिक्षक और अभिवावकों की अपेक्षाओं पर खरे न उतर पाने के मलाल से ये घोर निराशा और अवसाद में डूब गए। आज उन्हें अहसास हुआ कि केवल किताबें ही पूर्णता प्रदान नहीं कर सकतीं। ऐसे बच्चे जो दूसरों से घुले-मिलें, खेल-कूद में भाग लें, सामाजिक कार्यों में रुचि लें, वे ज्यादा सफल और सामाजिक होते हैं। आज अफसोस हुआ कि इतने सालों तक शिक्षिका होकर भी वे क्यों नहीं इस बात को समझ पाईं कि किसी विद्यार्थी के लिए किताबी ज्ञान और किताबों के बाहर दुनियादारी का ज्ञान, दोनों का होना कितना जरूरी है। उन्हें लगा कि अब तक उनकी जो शिक्षण पद्धति थी उसमें कुछ आधारभूत कमियां थीं, वह मौलिक चिंतन, नवाचार और आत्म अभिव्यक्ति की संभावना कहां प्रदान करती थी? शिक्षिका के रूप में उन्होंने सदा दब्बू, चापलूस और रट्टू तोते जैसे विद्यार्थियों को अधिक पसंद किया है। आदित्य ने कितनी गहरी बात समझा दी। मन के कितने ही पुराने सांचे आज टूट गए। समय के साथ बदलते क़िरदारों को देख वे दंग थीं? समय ने उनके किरदार को भी बदल दिया था..... आदित्य तो ऐसा ही कह रहा था।

सुस्मिता सरकार
वरिष्ठ लेखाकार

सहिष्णुता

शादी का कार्ड देते हुए कैलाश अंकल ने मेरे पापा से कहा- मैं अपनी पहली बेटी का विवाह कर रहा हूँ। आप सपरिवार आमंत्रित हैं उमेश जी। खुशी से अंकल को गले लगाते हुए पापा ने कहा- क्यों नहीं वो हमारी भी तो बेटी है। तभी पापा मुझसे बोले- चाय नाश्ता लाने के लिए मम्मी को कहो। वो अंकल आए हैं जो पापा के साथ बैंक में काम करते हैं। कुछ देर बातें करने के बाद, 'जल्दी में हूँ' कह कर वे चले जाते हैं। कुछ दिनों बाद हम शादी में पूरे परिवार के साथ उनके घर गए। सजावट देखकर लग रहा था कि शादी में काफी पैसा खर्च हुआ था। तभी पापा ने पूछा- कैलाश बाबू, आप उस दिन मेरे यहाँ कार्ड देने आए तो जल्दबाज़ी में आप चले गए। मैं आपसे पूछ नहीं पाया लड़का क्या करता है, परिवार कैसा है? सब देख–भाल कर ही शादी कर रहे हैं ना। वे मुस्कुराते हुए बोले- हाँ, सभी तरह से मैंने जांच-परख लिया है। लड़का अच्छी फैमिली से है और डाक्टर है, हिसुआ शहर में अपना क्लीनिक खोले हुए है। घर-बार भी अच्छा है। वो तो मेरी बेटी का भाग्य अच्छा है जो इतने कम समय में इतना अच्छा वर मिला है। मैंने तो कहा था कि संगीता की पढ़ाई भी पूरी नहीं हुई है, इस बार ग्रेजुएशन फ़ाइनल ईयर का इग्ज़ाम दे देती तो शादी कर लेते। संगीता का भी यही मन था। पर दामाद जी (राजीव) ने कहा, पढ़ाई का क्या है, शादी के बाद भी पढ़ाई हो जाएगी, वो जब तक चाहेंगी। तभी पंडित जी आवाज़ देते हैं- खाना खा लीजिए, बाकी की बातें होती रहेंगी। शादी अच्छे से संपन्न हो गई थी। सब लोग अपने-अपने घर आ गए थे। संगीता भी नए परिवार में जीवन की शुरुआत कर रही थी। माँ-बाप ने अच्छे संस्कार दिए थे। ससुराल जाते समय रेखा आंटी ने एक ही बात कही थी कि बेटियों का घर सहनशीलता से बसता है। अपने संस्कार से रहना और पति का मान रखना।

शादी के दो-चार महीने ही हुए थे कि पति-पत्नी के झगड़े शुरू हो गए और परिवार में तनाव बढ़ने लगा। दहेज के रूप में कैलाश बाबू ने दस लाख रुपये और बहुत सारा सामान दिया था। संगीता का पति राजीव रोज शाम को शराब पीकर आता था, उसे पीटता था और उससे झगड़ा करता था। कहता था कि तुम्हारे बाप ने कुछ सामान नहीं दिया है। जाओ अपने घर से ये सारा सामान लेकर आओ तभी तुम्हें यहाँ रहने दूंगा। इस बात का पता चलने पर संगीता के मायके वालों ने बुला लिया और बोले कि दामाद का गुस्सा ठंडा हो जाए तो जाना। शादी के चक्कर में जमीन भी बिक गई और इतना अत्याचार सहकर भी संगीता ने पुलिस में शिकायत न की। न जाने क्यों नारियां सब-कुछ सह लेती हैं और शिकायत भी नहीं करतीं। कुछ महीने बीत गए लेकिन राजीव एक बार भी नहीं आया। इधर संगीता को उल्टियाँ शुरू

हो गईं और सरदर्द होने लगा। जांच से पता चला कि वो माँ बनने वाली है। संताप में उसे थोड़ी खुशी की अनुभूति हुई। रेखा आंटी ने दामाद जी को फोन लगाकर इस खुशखबरी की सूचना दी। ये खबर सुनकर राजीव आया और संगीता को ले जाने की बात की। बोला- मुझे अब किसी चीज की जरूरत नहीं है। पचास हजार रुपये मिल जाते हैं, कुछ और पैसे होते तो मैं अच्छे से संगीता का खयाल कर सकता हूँ। मेरे ऊपर थोड़ा कर्ज भी है। रेखा आंटी ने पैसों की व्यवस्था कर दी। संगीता अपने ससुराल में आई ही थी कि एक दिन राजीव को पुलिस उठाकर ले गई। पुलिस के जाने के बाद संगीता ने अपने माँ से सारी बात की। वे लोग पुलिस स्टेशन पहुँच गए। वहाँ पता चला कि राजीव और उसके घर वालों ने झूठ बोला था कि वह डाक्टर है। वह एक कंपाउंडर था जो लोगों से इलाज के नाम पर धोखाधड़ी करता था इसलिए उसे गिरफ्तार किया गया था। और वह बहुत बड़ा जुआरी भी था। संगीता ने गुस्से में राजीव को थप्पड़ मारते हुए कहा कि मैं इस आदमी के साथ नहीं रहूँगी। इसे जेल से छुड़ाने की कोई जररूत नहीं है। मुझे तलाक चाहिए। राजीव अपनी रिहाई के लिए गिड़गिड़ा रहा था। अपने होने वाले बच्चे की कसम खा रहा था। घर वालों ने संगीता से कहा- जिंदगी का फैसला इतनी आसानी से नहीं लेते बेटी; अपने बच्चे की तो सोचो। अपनी दो छोटी बहनों के बारे में सोचो, उनसे शादी कौन करेगा? राजीव सुधर जाएगा, उसने अपने बच्चे की कसम खाई है। सबके समझाने-बुझाने पर संगीता ने राजीव को माफ कर दिया और उसकी जमानत करवा ली। बच्चे के जन्म के बाद लगा कि राजीव सुधर गया है। सात-आठ महीने बाद लगातार दो दिन बीत गया पर राजीव घर नहीं लौटा। संगीता ने सबसे पूछताछ की लेकिन किसी को उसके बारे में नहीं पता था। एक दिन राजीव रात को चुपके से घर में आया। दरवाजा संगीता ने खोला तो चौंक गई। राजीव ने कोई जवाब नहीं दिया और बोला- मुझे भूख लगी है, जल्दी से खाने के लिए कुछ लाओ। मैं तुम्हें सब कुछ बताऊँगा। खाना खाकर वह थकान का बहाना बनाते हुए ये कहकर सो गया कि सुबह सब बात बताऊँगा। सुबह जब वह उठा तो संगीता खाना बना रही थी। राजीव झटपट तैयार हुआ। संगीता जब उसके कपड़े इस्त्री कर ही थी तो वह संगीता के सारे गहने एक थैले में भरने लगा। संगीता गुस्सा होकर बोली- ये गहने लेकर कहाँ जा रहे हो? ये मेरे हैं और मैं इसे कहीं नहीं ले जाने दूँगी। तुम क्या कर रहे, कहाँ जा रहे हो, इस सबके बारे में मुझे कुछ नहीं बताते हो। सारा सामान जुए में उड़ा दिया और अब तो घर भी गिरवी पड़ा हुआ है। दो-चार गहने हैं उनपर भी हाथ मार रहे हो अब? राजीव ने गरम इस्त्री उसके हाथ पर रख दी और दूसरे हाथ से गले को दबाते हुए बोला-बहुत सवाल करती हो..मेरे रास्ते से हट जाओ नहीं तो मैं तुम्हें मार दूंगा। एक अच्छी बीबी

की तरह चुपचाप बैठी रह और जैसा मैं कहता हूँ वैसा कर। जा रहा हूँ, जो करना है, कर लो।

संगीता का हाथ बहुत बुरी तरह झुलस गया था। वह अपने भाग्य को कोस रही थी। राजीव के जाने के बाद अचानक दो गुंडे आए और संगीता को जबरदस्ती गाड़ी में बिठाने लगे। संगीता का शोर सुनकर पड़ोसी मदद को आए तब उन गुंडों ने कहा कि इसका पति जुए में दो लाख हार चुका है, उसने कुछ गहने दिए थे लेकिन उससे हमारा पैसा पूरा नहीं हुआ है। उसने अपनी बीबी को बेच दिया है इसलिए हम इसे ले जा रहे हैं। पड़ोसियों ने फौरन पुलिस को फोन किया तो गुंडे भाग खड़े हुए। संगीता रोते हुए अपने मायके चली गई। सारी घटना सुनकर कैलाश अंकल ने कोर्ट में तलाक की अर्जी दे दी। कोर्ट की कार्रवाई के दौरान कैलाश अंकल किसी काम के लिए रेखा आंटी के साथ गाँव गए थे। घर पर संगीता अपने दोनों बहनों के साथ थी। राजीव चुपके से संगीता के कमरे में दाखिल हो गया। राजीव बच्चे को लेकर भाग गया और संगीता चिल्लाती रह गई। कैलाश अंकल भी गाँव से वापस आ गए। राजीव ने फोन करके संगीता से कहा- ये मेरा बच्चा है... मैं इसे नहीं दूँगा। तुम्हे तलाक चाहिए न...ऐसी हालत करूंगा कि तुम बाप-बेटी किसी को मुंह दिखाने के लायक नहीं रहोगे। मेरा दो लाख का कर्ज पूरा करना होगा तुम्हें। फोन कट गया। कैलाश अंकल गहरी सोच में पड़ गए। तभी बाहर पड़ोसियों की आवाज सुनकर वे बाहर आ गए। बाहर संगीता की फ़ोटो पर गंदे और भद्दे मजाक लिखे गए थे। ऐसे बड़े-बड़े पोस्टर रिश्तेदारों के घरों पर चिपकाए गए थे। किसी को पता नहीं ये सब किसने किया था। एक पोस्टर तो कैलाश अंकल की बैंक के नीचे भी लगाया गया था।

अगले दिन जब कैलाश अंकल अपने बैंक गए तो उनके एक साथ उमेश बाबू ने उनसे कहा- कैलाश जी, आप तो लगता है कि मुझे अपना ही नहीं मानते हैं। तब कैलाश अंकल ने उनसे अपनी सारी समस्या कह सुनाई। उमेश बाबू ने कैलाश अंकल को अपने वकील बेटे से मिलवाया। उन्होंने कोर्ट में तलाक की सुनवाई जल्दी से किए जाने की गुहार लगाई। संगीता के फोन बजा- राजीव गुस्से में बोल रहा था और बच्चे के रोने की आवाज आ रही थी। राजीव बच्चे को छोड़ने के बदले बीस हजार रुपये मांग रहा था। बच्चे का रोना सुनकर संगीता का दिल ममता से भर गया। वह पैसे लेकर राजीव के बताए हुए स्थान पर चली गई। राजीव वहाँ पहले से ही था। उसने पैसे छीन लिए और बच्चे को लेकर भागने लगा। संगीता ने राजीव को धक्का दे दिया। राजीव गिर गया और उसका सर फट गया। संगीता बच्चे को लेकर वहाँ से भागने की कोशिश करने लगी। तभी राजीव ने एक बड़े भारी डंडे से संगीता के सिर पर प्रहार किया। चोट से संगीता नीचे गिर गई और कुछ देर में उसकी मृत्यु हो गई। तभी रेखा आंटी पुलिस के साथ वहाँ पहुँच गईं। राजीव को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया और उसे हत्या की सजा दी गई। बच्चे की कस्टडी कैलाश अंकल और रेखा आंटी को दे दी गई।

गौरव कुमार
लिपिक

फिराक गोरखपुरी

फिराक गोरखपुरी का असली नाम रघुपति सहाय था। उनका जन्म 28 अगस्त 1896 ई. को गोरखपुर में हुआ। उनके पिता गोरख प्रसाद जमींदार थे और गोरखपुर में वकालत करते थे। उनका पैतृक स्थान गोरखपुर की तहसील बाँस गांव था और उनका घराना पाँच गांव के कायस्थ के नाम से मशहूर था। फिराक के पिता भी शायर थे। फिराक ने उर्दू और फारसी की शिक्षा घर पर प्राप्त की। इसके बाद मैट्रिक की परीक्षा गवर्नमेंट जुबली कॉलेज गोरखपुर से सेकेंड डिविजन के साथ पास किया। इसी के बाद 18 साल की उम्र में किशोरी देवी से उनकी शादी हुई जिसका अनुभव उनके जीवन में बहुत कड़वा रहा। जब वे 20 साल के थे और बी.ए. के छात्र थे तब उन्होंने अपनी पहली ग़ज़ल लिखी। प्रेमचंद उस जमाने में गोरखपुर में थे और फिराक के साथ उनके घरेलू संबंध थे। प्रेमचंद ने ही फिराक की आरंभिक ग़ज़लें छपवाने की कोशिश की और 'ज़माना' के संपादक दयानारायन निगम को भेजी। फिराक ने बी.ए., सेंट्रल कॉलेज इलाहबाद से पास किया और चौथी पोजीशन हासिल की। उसी साल फिराक के पिता का देहांत हो गया। ये फिराक के जिए एक बड़े दु:ख की घड़ी थी। छोटे भाई-बहनों की परवरिश और शिक्षा की जिम्मेदारी फिराक के सर आन पड़ी। धोखे की शादी और पिता के देहांत के बाद घरेलू जिम्मेदारियों के बोझ ने फिर से तोड़ कर रख दिया। वे अनिद्रा के शिकार हो गए और आगे की पढ़ाई छोड़नी पड़ी। उसी ज़माने में वे मुल्क की सियासत में शरीक हुए। सियासी सरगर्मियों की वजह से 1920 ई. में उनको गिरफ्तार किया गया और उन्होंने 18 माह जेल में गुजारे। 1922 ई. में वो कांग्रेस के अंडर-सेक्रेटरी बनाए गए। वे मुल्क की सियासत में ऐसे वक्त में शामिल हुए थे जब सियासत का मतलब घर को आग लगाना होता था।

नेहरू खानदान से उनके गहरे संबंध थे और इंदिरा गांधी को वो बेटी कहकर बुलाते थे। मगर आजादी के बाद उन्होंने अपनी राजनीतिक सेवाओं को भुनाने की कोशिश नहीं की। वो मुल्क की मुहब्बत की सियासत में गए थे। सियासत उनका मैदान नहीं था। 1930 ई. में उन्होंने प्राइवेट उम्मीदवार की हैसियत से आगरा यूनिवर्सिटी से अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. की परीक्षा विशेष योग्यता के साथ पास की और कोई दरख्वास्त या इंटरव्यू दिए बिना इलाहबाद यूनिवर्सिटी में लेक्चरर नियुक्त हो गए। उस जमाने में इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के अंग्रेजी विभाग की ख्याति पूरे देश में थी। अमरनाथ झा और एस. एस. देव जैसे विद्वान उस विभाग की शोभा थे। लेकिन फिराक ने अपनी शर्तों पर जिंदगी बसर की। वो एक आजाद तबीयत के मालिक थे। महीनों क्लास में नहीं जाते थे न हाजिरी लेते थे। अगर कभी क्लास में गए भी तो पाठ्यक्रम से अलग हिन्दी या उर्दू शायरी या किसी दूसरे विषय पर बातचीत शुरु कर देते थे, इसीलिए उनको एम.ए. की क्लासें नहीं दी जाती

थी। फ़िराक़ वर्ड्सवर्थ के आशिक थे और उस पर घंटों बोल सकते थे। फ़िराक ने 1952 ई. में शिब्बन लाल सक्सेना के आग्रह पर संसद का चुनाव भी लड़ा और जमानत जब्त कराई। निजी जिंदगी में फिराक बेढंगेपन की प्रतिमा थे। उनके मिजाज में हद दर्जा की खुद-पसंदी थी। उनके कुछ शौक ऐसे थे जिनको समाज में अच्छी नजर से नहीं देखा जाता लेकिन न तो वो उनको छुपाते थे और न शर्मिंदा होते थे। उनके सगे-सम्बंधी भी, विशेषकर छोटे भाई यदुपति सहाय, जिनको वे बहुत चाहते थे और बेटे की तरह पाला था, धीरे-धीरे उनसे अलग हो गए थे जिसका फिराक को बहुत दुःख था। उनके इकलौते बेटे ने सत्रह-अठारह की उम्र में आत्महत्या कर ली थी। बीवी किशोरी देवी 1958 ई. में अपने भाई के पास चली गई थीं और उनके जीते जी वापस नहीं आई। इस तन्हाई में शराब-ओ-शायरी ही फ़िराक़ के साथी व दुखहर्ता थे। 1958 ई. में वे यूनीवर्सिटी से रिटायर हुए। घर के बाहर फ़िराक़ सम्माननीय, सम्मानित और महान थे लेकिन घर के अंदर वो बेबस थे जिनका हाल पूछने वाला कोई न था। वो वंचितों की एक चलती-फिरती प्रतिमा थे जो अपने बाहर से खुशहाली का लिबास ओढ़े था। बाहर की दुनिया ने उनकी शायरी के अलावा उनकी हाजिर-जवाबी, हास्य-व्यंग्य, विद्वता, ज्ञान व विवेक और सुखफ़हमी को ही देखा। फिराक अपने अंदर के आदमी को अपने साथ ही ले आए। बतौर शायर ज़माने ने उनकी प्रशंसा में कोई कसर नहीं रखी। 1961 ई. में उनको साहित्य अकादमी अवार्ड से नवाजा गया। 1968 ई. में उन्हें सोवियत लैंड नेहरू सम्मान दिया गया। भारत सरकार ने उनको पद्म-भूषण के खिताब से नवाजा। 1970 ई. में वो साहित्य अकादमी के फेलो बनाए गए और 'गुल-ए-नग्मा' के लिए उनको साहित्य के सबसे बड़े सम्मान ज्ञानपीठ अवार्ड से नवाजा गया जो भारत में साहित्य का नोबेल पुरस्कार माना जाता है। 1981 ई. में उनको ग्लोबल अवार्ड भी दिया गया। 3 मार्च 1982 को दिल की धड़कन बंद हो जाने से फ़िराक की मृत्यु हो गई और सरकारी सम्मान के साथ उनका अंतिम संस्कार किया गया। फिराक उस तहजीब का मुकम्मल नमूना थे जिसे गंगा-जमुनी तहजीब कहा जाता है। वो शायद शायर के दुनिया से आखिरी व्यक्ति थे जिसे हम मुकम्मल हिन्दुस्तानी कह सकते हैं।

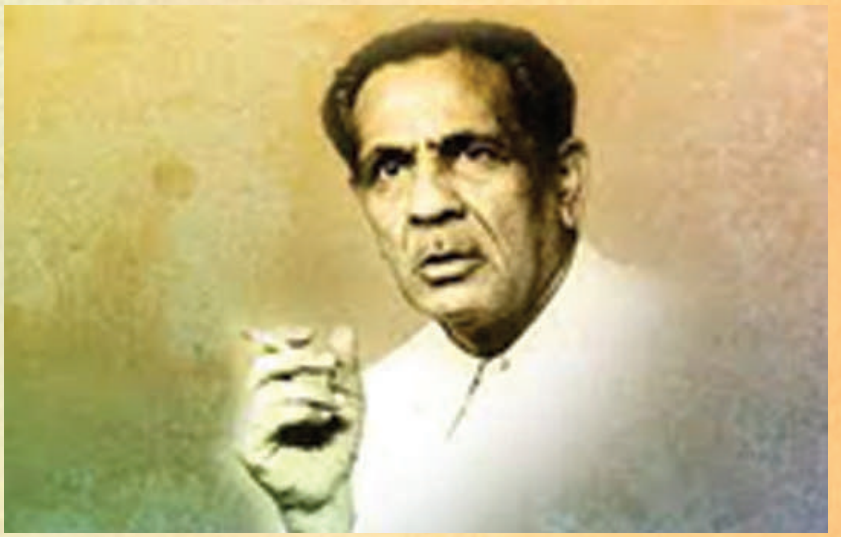

शायरी के लिहाज से फिराक बीसवीं सदी की अद्वितीय आवाज़ थे। कामुकता को अनुभूति व समझ और चिंतन व दर्शन का हिस्सा बना कर महबूब के शारीरिक संबंधों को ग़ज़ल का हिस्सा बनाने का श्रेय फिराक को जाता है। जिस्म किस तरह ब्रह्मांड बनता है, इश्क किस तरह इश्क-ए-इंसानी में बदलता है और फिर वो कैसे जीवन व ब्रह्मांड से संबंध प्रशस्त करता

है, ये सब फिराक के चिंतन और शायरी से मालूम होता है। फिराक शायर के साथ-साथ विचारक भी थे। प्रत्यक्ष और उद्देश्यपूर्ण सोच उनके मिजाज का हिस्सा थी। फिराक का इश्क़ रूमानी और दार्शिनिक कम, सामाजिक और सांसारिक ज्यादा है। फिराक इश्क की तलाश में जिंदगी की दिशा व गति और अस्तित्व व विकास की तस्वीर खींचते हैं। फिराक के मिलन की अवधारणा दो जिस्मों का नहीं दो जेहनों का मिलाप है। वो कहा करते थे कि उर्दू अदब ने अभी तक औरत की कल्पना को जन्म नहीं दिया। उर्दू जबान में शकुन्तला, सावित्री, और सीता नहीं। जब तक उर्दू साहित्य देवीयत को नहीं अपनाएगा उसमें हिन्दोस्तान का तत्व शामिल नहीं होगा और उर्दू सांस्कृतिक रूप से हिन्दोस्तान की तर्जुमान नहीं हो सकेगी क्योंकि हिन्दोस्तान कोई बैंक नहीं जिनमें रूमानी और सांस्कृतिक रूप से अलग-अलग खाते खोले जा सकें। फ़िराक़ ने उर्दू जबान को नए गुमशुदा शब्दों से अवगत कराया, उनके अल्फाज़ ज्यादातर रोजमर्रा की बोल-चाल के, नम्र, सुबुक और मीठे हैं। फ़िराक की शायरी की एक बड़ी खूबी और विशेषता ये है कि उन्होंने वैश्विक अनुभवों के साथ-साथ सांस्कृतिक मूल्यों की महानता और महत्व को समझा और उन्हें काव्यात्मक रूप प्रदान किया। फिराक के शेर, दिल को प्रभावित करने के अलावा सोचने को विवश भी करते हैं और उनकी यही विशेषता फिराक को दूसरे सभी शायरों से उत्कृष्ट बनाती है।

"एक मुद्दत से तेरी याद भी आई न हमें,
और हम भूल गए हों तुझे ऐसा भी नहीं।"

फ़िराक़ गोरखपुरी एक युग निर्माता शायर और आलोचक थे। उनको अपनी विशिष्टता के बदौलत अपने जमाने में जो प्रसिद्धि और लोकप्रियता मिली वो कम ही शायरों को नसीब होती है। वो इस मंजिल तक बरसों की साधना के बाद पहुंचे थे। बकौल डाक्टर खाजा अहमद फारूकी अगर फिराक न होते तो हमारी गज़ल की सरजमीन बेरौनक रहती, उसकी मेराज उससे ज्यादा न होती कि वो उस्तादों की गजलों की कार्बन कॉपी बन जाती या मुर्दा और बेजान ईरानी परम्पराओं की नकल करती। फ़िराक़ ने एक पीढ़ी को प्रभावित किया, नई शायरी के प्रवाह में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की और हुस्न-ओ-इश्क का शायर होने के बावजूद इन विषयों को नए दृष्टिकोण से देखा। उन्होंने न सिर्फ ये कि भावनाओं और संवेदनाओं की व्याख्या की बल्कि चेतना व अनुभूति के विभिन्न परिणाम भी प्रस्तुत किए। उनका सौंदर्य बोध दूसरे तमाम गजल कहने वाले शायरों से अलग है। उन्होंने उर्दू के ही नहीं विश्व साहित्य के भी मानकों और मूल्यों से पाठकों को परिचय कराया और साथ ही युग भावना, सांगारिकता और सभ्यता के प्रबल पक्षों पर जोर देकर एक स्वस्थ वैचारिक साहित्य का मार्ग प्रशस्त किया और उर्दू ग़ज़ल को अर्थ व विचार और शब्द व अभिव्यक्ति के नए क्षितिज दिखाए।

"बहुत पहले से उन कदमों की आहट जान लेते हैं
तुझे ऐ जिंदगी हम दूर से पहचान लेते हैं।"

चन्द्रशेखर भगत
पर्यवेक्षक

साजिश

रघु एक गरीब किसान जरूर था, मगर खुश था। छोटा परिवार, पत्नी और एक छोटे भाई के साथ गाँव में ही ब्याह कर बसाई गई बहन-बहनोई के रोजी-रोजगार का कोई ठौर-ठिकाना न था। रघु ने सोचा कि अपने ही हिस्से की कुछ जमीन फूलमती (अपनी बहन) को दे दी जाए ताकि उनका गुजर-बसर हो सके। अगर सही मायने में देखा जाए तो रघु का दिल साफ था, वह दूसरों की समस्याएं समझता था। रघु की नसीब भी शायद अच्छा था। पत्नी सरस्वती बेहद सुन्दर, सुशील और रघु के जैसे ही नेक दिल की थी। उपर वाले ने जोड़ी तो जबरदस्त बनाई थी। सरस्वती रोज सुबह नहा-धोकर पूजा करके रसोई का काम करती, फिर घर के कामों में दिन भर उलझी रहती। ब्याह के बाद फुर्सत कहां थी कि अपने या अपने मायके वालों के बारे में सोचे। बस पति की सेवा में लगे रहना था। अपनी छोटी सी कुटिया को ही स्वर्ग बना कर रखी थी। रघु ने गरीबों का कभी भी मजाक नही उड़ाया, न ही किसी तरह की अवहेलना की। उसका कहना था- 'संतोषम् परम् सुखम्।' फूलमती की मति थोड़ी खराब थी। दिमाग में कचरा भरा रहता था। कूटनीति भरी बातें करना उसका सुबह-सुबह का नाश्ता हुआ करता था। वैसे तो सरस्वती इस चापलूस से दूर ही रहती थी पर कभी-कभी फूलमती अपने मन के कचड़े को रघु के आंगन में फैलाने आ ही जाती थी। बगल मे ही घर जो ठहरा। घर रघु ने ही बनवाकर उपहार-स्वरूप दिया था; यह सोचकर कि दु:ख-सुख में साथ रहेगी। फूलमति के बच्चे बड़े समझदार थे। राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न जैसी जोड़ी थी। ये गुण इन चारों में रघु के बहनोई सूरज के कारण थी। सूरज एक धार्मिक विचारों वाला युवा ही लगता था। रघु भी इन बच्चों में अपनी खुशियाँ ढूंढता। उसे अभी तक संतान-सुख की प्राप्ति नहीं हुई थी। विवाह किए अभी कुछ दिन ही हुए थे- केवल एक साल।

रघु की जिंदगी में सबकुछ सही चल रहा था। कृषि से इकट्ठा धन संभाल कर रखता। सरु (सरस्वती का पुकारने का नाम) के हाथों में ही सारा धन का हिसाब-किताब रहता था। पढ़ी-लिखी न होने के बावजूद एक आना का भी हेर-फेर न होने देती थी। रघु को हर महीने पाई-पाई का हिसाब-किताब बता दिया करती थी। सरू का दिमाग भी कोई कम्प्यूटर से कम नहीं था।

रघु (बह-सुबह)- अरे सरू ! मुखिया घर आया था क्या?

सरू- नहीं तो, क्यों क्या हुआ?

रघु– कुछ नहीं। कल बाजार में रामेश्वर मिला था। वही रामेश्वर जो मुखिया का दलाल है। कह रहा था कि मुखिया का कोई बड़ा सा खेत खाली पड़ा है। कोई किसान नहीं मिल रहा खेती करने को। कह रहा था कि मात्र एक चौथाई हिस्सा ही लेगा उपज का और बीज भी वही देगा। कुझ समझ नहीं आ रहा मुखिया इतना मेहरबान क्यों है?

सरू– भूखे-नंगे दिनों में तो कभी आया नहीं हाल-चाल लेने! आज रामेश्वर को तुम्हारी याद कैसे आ गई? सोच-समझ कर ही फैसला लेना आप। हमारा जो भी है हम उसी में खुश है। जरुरत नही हैं अधिक कमाने की। रोटी कपड़ा और मकान सब तो है ही। उपर वाला गोद भी भरने वाला है।

सुरू ने बातों ही बातों में रघु को खुशखबरी दे ही दी। रघु फूले न समाया। दौड़कर बाजार से समोसा और बालूशाही लाकर पूरे टोले मुहल्ले में बांट दिया। फूलमती को तो अपने हांथो से ही खिला डाला। अंत में खुशी बांटने चंद्रिका ठाकुर (गांव का मुखिया) के घर पहुंचा। दरवाजे के सामने खड़े होकर....

रघु– बड़ी मालकिन! बड़ी मालकिन! बड़ी मालकिन!.... मालिक घर पर हैं क्या?

चंद्रिका– का हुआ रे रघु? सुबह-सुबह बड़ा खुश लग रहा है। कुछ बात है क्या?

रघु– जी हूजूर! घर में सब सुख-शांति से है। उपज भी अच्छी हो रही है और परमेश्वर की अनुकंपा से जल्द ही मेरे घर में किलकारियां गूंजेंगी। सरस्वती माँ बनने वाली है। मिठाई लेकर

आया था-हूजूर। आपकी कृपा हम पर बनी रहे बस। हमारे भाग्य ऐसे ही चमकता रहेगा।

चंद्रिका– एक ही खुशखबरी से बात न बनी। आपन बहन-बहनोई का भी खुशहाल समाचार सुनाओ तब जाने कि तुम्हारे घर में सुख-शान्ति है। सुने हैं कि सूरज सिर्फ पूजा पाठ में लीन रहता है। फूलमती के तो भाग ही फूट गए हैं। सूरज से कहो कि हमारा एक खेत खाली पड़ा है। मन करे तो कुछ उपजाकर अपना जीवन बेहतर बना सकता है।

रघु– जी हूजूर! आपकी बात तो सही है। पर.....

इतना कहते ही मुखिया गुस्से से झल्ला उठा और बोला- "ना सुनने की आदत नहीं है हमें, जो कह दिया वो कह दिया। सूरज को कल से काम पर भेज। एक बात याद रखना रघु, हम खुश तो गाँव भी खुश"

बड़े लोगों की बड़ी-बड़ी बातें। रघु को भी लगने लगा कि खुशियां उन्हीं के साथ बांटनी चाहिए जो हमारी खुशी में अपनी खुशी समझते हैं। कहाँ इन बड़े महलों में आया था जश्न मनाने, अब मन में बोझ लेकर जा रहा हूं। भारी मन से रघु घर पर पहुंचा और सरू को सारी बातें बताई और पीने को एक ग्लास पानी मांगा।

सरु– मैं तो पहले ही कह रही थी कि सभी आपकी खुशी में शामिल नहीं होंगे और रहा सवाल कुछ उपजाकर जीवन बेहतर बनाने का, बेहतर हमारा नहीं उनका होगा। वैसे भी जमीन खाली पड़ी है। कोई करने वाला नहीं है। आप कर के दे दो तो उनका कुछ तो होगा। ये लोग तो एक पैसे में भी अपना मुनाफा देखतें है। पानी पी कर रघु सरस्वती के पास वापस गया। सूरज स्नान कर रहा था। रघु ने कुँए के चबूतरे पर बैठकर मुखिया का निर्णय सुनाया।

सूरज- न कोई प्रस्ताव, न कोई सुझाव... यह कहां का न्याय है? कोई दुश्मनी है क्या हमलोगों से या फिर हमें कमजोर समझ रखा है? अगर समझ रखा है तो यह उसकी भूल होगी। वक्त बदलता है आज उसका है तो कल हमारे बच्चों का होगा।

रघु– गुस्सा काहें कर रहे हो? तुम्हारी खेती भी तो उतनी नहीं है तिसपर चार-चार लड़कों का सहयोग रहेगा। मैं तो अकेला हूँ कितना कर सकूंगा। उपर से मुखिया सर पर है। मना किया तो पता नहीं क्या होगा। चल जाकर मुखिया से मिल ले। एक-आध बात कर के देख ले...।

सूरज– ठीक है, देखता हूं। (तौलिए से शरीर पोंछते हुए) एक बार फूलमती से बात कर लेता हूँ। उसका रवैया तो आप जानते ही हैं। सहयोग न रहा तो बेकार में ही बात बिगड़ जाएगी। सूरज और फूलमती की बहस के बाद सूरज दु:खी मन से रघु के पास गया। खामोशी के साथ चुपचाप बैठा रहा। रघु सारा मामला समझ गया। पर अब करे तो क्या करे। मुखिया के शब्द रघु के कानों में गूँजने के साथ चुभन पैदा कर रहे थे। फूलमती को उधर से आते देख रघु कहता है– खाली तो रहती हो। कर लो। उसे ना सुनने की आदत नहीं।

फूलमती– तुम्हारी दया और दुआ से हमारा घर धन-धान्य से भरा पड़ा है। बच्चों का उज्जवल भविष्य मायने रखता है। कहां खेती बाड़ी में उलझाकर रखेंगें उन्हें। पढ़ लिख जाएंगें तो कुछ काबिल होंगें। भरण-पोषण में कोई कमी हुई तो तुम हो ही। कुछ मदद कर ही देना। सरू और मैं अपने परिवार सहित तुम्हारा हाथ बंटा देंगें। तुम ही कर लो।

रघु, सूरज, सरस्वती और फूलमती अपने सभी बच्चों के साथ आँगन में बैठकर घंटो बातें करते रहे। निष्कर्ष यह निकला कि रघु ही अब मुखिया को हामी भरेगा। रघु को फूलकुमारी की बातें समझ में नहीं आईं। रात भर यही सोचता रहा कि वह और कितना पसीना बहा-बहा कर शरीर गलाता रहेगा। फूलकुमारी को कोई चिंता नही है। सूरज अपनी पत्नी से बेबस है। और बच्चे क्या करेंगें? वे तो माता-पिता से बढ़कर नहीं है। अंत में रघु सुबह मुखिया के घर जाकर यह बयान दे आया कि सूरज से न हो पाएगा, हम ही कर लेंगें। मुखिया के चेहरे पर मुस्कान छा

गई। आंखों में चमक। मूछों पर ताव देकर मन ही मन सोचकर खुश हो रहा था कि उसका मनसूबा अब पूरा होने वाला है। सोच रहा था– नाही मामा से काना मामा बेहतर है। जमीन तो सोना उगलेगी। हमारा क्या? हम कौन से खेतों में जाकर पसीना बहाएंगें। मुखिया की सोच यही थी कि गरीब बस गरीब रहे। गरीब के बच्चे भी जन्म-जन्मांतर तक मुखिया और उसके परिवार की सेवा में अपना जीवन न्योछावर कर दें। बीघा का बीघा जमीन गरीबों से छीनकर अपना पट्टा तैयार कर लिया था। दूरदर्शी था या नहीं इसका पता नहीं। हाँ, यह बात सत्य है कि मुखिया बड़ा लालची था। अपने स्वार्थ के लिए ही जगह-जमीन और धन-सम्पत्ति इकट्ठा कर रहा था।

फूलमती और परमेश्वर दोनों एक साथ रघु के आँगन में सुबह-सुबह यह खबर देने आए कि मुखिया ने आज से ही काम पर जाने को कहा है। सरू कुछ कह न सकी। बस फूलकुमारी से अनुरोध किया कि सूरज को साथ में भेज दे। फूलमती उसी क्षण ऊंची आवाज में जवाब देती है- अपने बच्चों की परवरिश में वो बहुत व्यस्त है। हमें क्या पता कि मुखिया जी आज से ही खेतों में काम लगवाएंगें। पता होता तो कल ही मना न कर दिए होते। वैसे भी बच्चों की अर्धवार्षिक परिक्षा शुरु होने वाली है। बच्चे पढ़ेंगें नहीं तो क्या अपने बाप की तरह खेतों में हल चलाएंगें? घर में भी तो बहुत कुछ करना होता है। मेरे से काम-काज न हो पाएगा। देखो आज-कल भर सम्भाल लो।

सूरज ने सारी बातें अपने कानों से सुन लीं। अपने मन में बोझ लेकर या बेशर्म होकर जीवन व्यतीत करना उसके उसूलों के खिलाफ था। उसने उसी क्षण निर्णय लिया और अपने दोनो बड़े बेटों के साथ वापस अपने गाँव चला गया। फूलमती उसे अपने मन का कुछ भी करने नहीं देती थी। वह कठपुतली बनकर रह गया था। ऐसी जिंदगी उसे धिक्कारने लगी थी। देवता समान जिस इंसान ने उसे घर, जमीन, रोजी, रोटी दिया आज उसी इंसान का सूरज चाह कर भी मदद नहीं कर पा रहा था। सूरज की अंतर-आत्मा अब मूकदर्शी बने रहने की इजाजत नहीं दे रही थी। फूलमती अपने दो बच्चों के साथ निर्लज्ज बनकर अपने ही भाई का कमाया धन समाप्त करने में लग गई। न खुद कोई मदद करती और न ही बच्चों को किसी तरह काम-काज में हांथ बंटाने देती। रघु और सरू दिन-रात कोल्हू के बैल के जैसी मेहनत करन लगे। बारिश का महीना था। खेत तैयार करने से लेकर बीज बोने तक का काम हो गया। फसल लगाने का भी वक्त आ ही गया था। जहां एक तरफ रघु परेशान था तो वहीं दूसरी तरफ मन में एक खुशी थी कि वह जल्द ही एक पिता बनने वाला है। बस इसी खुशी के एक लहर में वह सभी परेशानियों को झेलता जा रहा था।

सरू गर्भवती होने के कारण रघु का हांथ न बटा पा रही थी। किसी तरह रसोईघर का काम और साफ-सफाई का ख्याल रख रही थी। मन ही मन सरू भी खुश थी। आखिरकार ईश्वर अब उसकी इच्छा पूरी करने जा रहे थे। मां बनने का सौभाग्य प्राप्त होने वाला था। दुआ करते रहती थी कि लड़का हो या लड़की, बस स्वस्थ और तेजस्वी हो। ऐसा चिराग पैदा हो जो वर्षों की गरीबी के अंधियारे को खत्म कर दे और पूरे गांव में उजाला कर दे। सरु को विश्वास था कि वह बच्चा उसके दु:खों को खत्म कर देगा। अंतत: जुलाई के महीने में रघु और सरू की प्रतीक्षा खत्म हुई। ईश्वर ने एक बेटा प्रदान किया। सरु फुले न समा रही थी। पड़ोस के लोग भी दिल खोलकर सभी कार्य में सहयोग किए। बच्चे को देखने के लिए भीड़ उमड़ पड़ी थी। आंखों की चमक, माथे पर चंद्रमा सा ललाट और होंठों की मुस्कान देखने लायक थी। चेहरे पर ऐसी स्थिरता झलकती थी मानो पूरा समुद्र शान्त बैठ गया हो। पूरा देश भगवान जगन्नाथ की रथ यात्रा के जुलूस में लीन था और रघु अपने घर में उमड़ी भीड़ को देखकर गद्गद था।

फूलमती, परमेश्वर और चंद्रिका ठाकुर तीनों रघु को बधाई देने पहुंचे। खुशी के ऐसे अवसर में फूलमती अपने दोनो बच्चों के साथ ससुराल चली गई। ससुराल से खबर आई थी कि सूरज की हालत खराब थी। तबीयत कुछ बिगड़ी-बिगड़ी सी रहती थी। कुछ काम भी न कर पा रहा था। रघु को सूरज के बारे जानकारी देकर फूलमती अपने पति के पास जा पहुंची। रघु और सरस्वती ने मिलकर सभी संस्कारों को निभाते हुए बच्चे का छठियारा मनाया। सब कुछ सुख-शान्ति से गुजर गया। कुछ ही दिनों में सरू घर का पूरा काम पहले जैसा संभालने लगी और अपने बच्चे अतुल की परवरिश में लग गई। व्यस्तता काफी रहती थी फिर भी अतुल के परवरिश में कोई कमी न हो रही थी। वक्त गुजर ही

रहा था खुशी-खुशी। अचानक से रघु के सर पर जिम्मेदारियों का इतना बोझ आ गाया था कि उसका शरीर भी जवाब देने लग गया था। रातों की नींद वैसे भी उड़ गई थी। रघु दिन-ब-दिन तन और मन का मरीज बनता जा रहा था। मन बहलाने को सिर्फ अतुल का खिलता हुआ चेहरा था। दिन भर की थकावट के बाद अगर दिल को सुकुन देता था तो सुरू का अपनापन और अतुल की किलकारियां। बाप-बेटे देर रात तक खूब मजे करते। पिता के सीने में बाहें फैलाकार सोए रहने का अलग ही सुकुन है। पीठ पर पिता के हौले-हौले हांथों की थपकियां और लोरियों का बुदबुदाना अतुल को शायद सोने पर मजबूर करता था। सरू को भी ऐसे में थोड़ा आराम मिल जाता था। रात भर में दिन भर की थकावट दूर कर लेती थी। अतुल का नसीब अच्छा था। दिन में माँ का प्यार और रात में पिता का। तीन महीने भी नहीं हुए थे। इतनी कच्ची उम्र में सबका मन मोह लिया था। संघर्षों का सिलसिला शायद खत्म होने वाला था। जो होना लिखा था, अब पूरा होने का वक्त आ गया था। ऊपरवाले की कलम से लिखी गई कहानी को कोई टाल नहीं सकता। फूलकुमारी अपने पति सूरज की मृत्यु के बाद अपने चारों बच्चों समेत वापस मायके आ गई। रघु पर जिम्मेदारियों का बोझ अब चार गुणा बढ़ गया। पहले तो सूरज की मौत एक पहेली बन गई। इतनी कम उम्र में बिना किसी रोग के कोई युवा कैसे मर सकता है? रघु का सर फटा जा रहा था। अब तो पाँच बच्चों के भरण-पोषण की जिम्मेदारी। रघु को कुछ सूझ नहीं रहा था। खेती के अलावा कोई चारा भी न था।

बारिश का मौसम आ गया था। बीज के अच्छी तरह तैयार होने के बाद खेत में लगाए गए धान की फसल की हरियाली मनमोहक थी। मुखिया के खेत से भी अच्छी फसल की उम्मीद थी। रघु दिन-रात खेतों की रखवाली करता। कभी-कभी रातों को भी खेतों से हो आता था। कहीं कोई मवेशी फसलों को चट न कर जाए। रघु अपने परिवार के खातिर पूरी तरह समर्पित था। खासकर अपनी बहन और उनके बच्चों के प्रति। अपने अतुल को कभी कुछ कमी कर भी दी हो मगर बिना बाप के पल रहे चार बच्चों का ख्याल एक पिता से भी बढ़कर रखा।

होनी में जो लिखा था शायद आज होने वाला था। रघु बहुत चिंतित था। तेज बारिश से रघु के घर का छप्पर तितर-बितर हो रहा था। पानी की बूँदें टप-टप घर में गिरने लगी थी। सरू को सचेत कर रघु पहले मवेशियों को ठिकाने लगाया। फूलमती से कहा कि बच्चों को सरु के पास रख आए और जरा खेतों से होकर आ जाए। तब तक रघु सोचा कि छप्पर ठीक-ठाक कर लिया जाए। एक ही तो झोपड़ी है। अगर ये भी न रहा तो...। रघु बहुत निराश था। बारिश थमने के बाद छप्पर ठीक करने में लग गया। अभी आधा काम भी पूरा न हुआ था कि फूलमती घर आकर जोर-जोर से चिल्लाकर कहने लगी:-

-मुखिया का सारा खेत मवेशी चट कर गए है। मैं तो खेत जा ही रही थी कि रामेश्वर की पत्नी ने बातों में उलझा दिया। उसी के साथ बात करने में थोड़ी व्यस्त क्या न हुई कि तब तक रामेश्वर के बेटे को देखा। वह बहुत सारे मवेशियों को हांककर कहीं ले जा रहा था। पूछने पर बताया कि मुखिया का खेत बर्बाद हो गया है। मुखिया को इसकी सूचना देने जा रहा हूँ।"

इतने देर में मुखिया आ धमका रघु के घर। रघु की साँसे फूल गई। डर के मारे उसकी हड्डियाँ काँप रही थी। छप्पर से आवाज दी– आया मालिक। नीचे जैसे ही उतरा मुखिया ने बिना सवाल-जवाब के लात-घूसों की बरसात करने लगा। मुखिया उस दिन न जाने कौन सी भड़ास निकाल रहा था। रघु को मार-मारकर अधमरा कर दिया। सरू जब तक घर से दौड़कर बाहर आती देर हो चुकी थी और फूलमती एक कोने में डरी-सहमी बैठी पड़ी तमाशा देख रही थी।

रघु को नजदीक के सरकारी अस्पताल में इलाज कराने ले जाया गया। बाहर का घाव तो भर गया पर अंदर का नहीं। पाँच दिन भी नहीं हुए और वह सबको अकेला छोड़ इस दुनिया को अलविदा कह गया।

अनिल कुमार
लेखाकार

मधुबनी पेंटिंग

मुझे चित्रकारी करना और उसमें रंग भरना शुरू से ही पसंद था। मेरे सामने कोई भी सामान होता तो मैं उसमें कुछ न कुछ चित्रकारी करने की कोशिश करती। मेरे बच्चे जब भी घर की दीवारों पर कुछ बनाते और उसमें रंग भरते तो मैंने उन्हें कभी मना नहीं किया क्योंकि उनसे ज्यादा मैंने अपने घर की दीवारों को गंदा किया है। अभी भी मैं अपने बच्चों के साथ दीवारों पर चित्रकारी करने से पीछे नहीं हटती हूँ। जब भी कोई चित्रकारी मैं देखती हूँ, मुझे बहुत अच्छा महसूस होता है। लेकिन मधुबनी चित्रकारी को देखकर एक अलग सी खुशी महसूस होती है। पता नहीं क्यों, शायद मैं बिहार से हूं इसलिए। जब हमलोग दिल्ली में रहते थे, तो दिल्ली में दिल्ली हाट लगता था। मैं वहां इसलिए जाया करती थी क्योंकि वहां मधुबनी चित्रकारी देखने को मिलती थी। वहां पर मधुबनी की सुंदर-सुंदर चित्रकारी देखने को मिल जाती थी। वहां पर जो लोग अपनी पेंटिग बेचते हैं, वे लोग वहां पर चित्रकारी करते भी हैं। ये देखकर मेरा भी मन करता कि उनके पास बैठकर मैं भी चित्रकारी करूं। मैं उन्हें बहुत देर तक खड़े-खड़े देखती फिर वहां से आ जाती। घर पर आने के बाद मैं भी कुछ बनाने की कोशिश करती और जो कुछ भी बनाती, उसे अपने घर वालों को दिखाती। वे लोग मेरी प्रशंसा करते और मेरा उत्साह बढ़ाते। लेकिन समय न होने के कारण मैं ज्यादा अभ्यास नहीं कर पाती थी। लेकिन जब कोविड महामारी फैली तो सबके पास समय ही समय था और मेरे पास भी। उसी समय मैंने मधुबनी चित्रकारी करना शुरु किया। जब मैंने चित्रकारी करना शुरू किया तो मेरे मन में इस चित्रकारी के बारे में जानने की इच्छा भी बढ़ी। जैसे कि इसे कब शुरू किया गया? इसका नाम मधुबनी क्यों पड़ा? इसे कैसे बनाते हैं? इसे बनाने में किन-किन रंगों का उपयोग किया जा सकता है? इत्यादि।

मधुबनी चित्रकारी की शुरुआत कब हुई?

त्रेतायुग में माना जाता है कि ये चित्रकारी जनकपुरी में राम-सीता के विवाह के दौरान महिला कलाकारों द्वारा बनाई गई थी। मिथिला क्षेत्र की कई गाँव की महिलाएं इस कला में दक्ष हैं। वर्तमान इतिहास के प्राचीन काल में मधुबनी चित्रकारी यानी मिथिला चित्रकारी की शुरूआत सातवीं-आठवीं सदी में हुई। तिब्बत के थंक आर्ट से प्रभावित चित्रकारी की यह लोककला विकसित हुई। फिर 13वीं सदी में पत्थरों पर मिथिला चित्रकारी होने लगी।

मधुबनी का नाम मधुबनी क्यों पड़ा?

विदेह के राजा मिथि के नाम पर यह प्रदेश मिथिला कहलाने लगा। रामायण काल में जनक की पुत्री सीता का जन्म मधुबनी की सीमा पर स्थित सीतामढ़ी में हुआ था।

मधुबनी चित्रकारी बहुत प्रसिद्ध क्यों है?

मधुबनी चित्रकारी में जिन देवी-देवताओं का चित्रण किया जाता है, वे है माँ दुर्गा, काली, सीता-राम, राधा-कृष्ण, शिव-पार्वती, गौरी-गणेश और विष्णु के दस अवतार इत्यादि। देवी-देवताओं को अत्यंत असाधारण भक्ति और श्रद्धा के साथ प्रदर्शित किया जाता है। आमतौर पर हिंदू पौराणिक कथाओं के दृश्य दिखाए जाते हैं। इन तस्वीरों के अलावा कई प्राकृतिक और रम्य नजारों की भी चित्रकारी की जाती है।

मधुबनी चित्रकारी में प्रयोग होने वाले रंग:-

मधुबनी चित्रकारी मे चटख रंगो का प्रयोग अधिक

किया जाता है। जैसे- गहरा लाल रंग, हरा, नीला और काला। कुछ हल्के रंगों से भी चित्र में निखार लाया जाता है- जैसे पीला, गुलाबी और नारंगी रंग। यह जानकर हैरानी होगी कि इन रंगो को घरेलू चीजों से ही बनाया जाता है जैसे हल्दी, केले के पत्ते, लाल रंग के लिए पीपल की छाल इत्यादि का प्रयोग किया जाता था। और भित्ति चित्रों के अलावा अलपन का भी बिहार में काफी चलन है।

मधुबनी चित्रकारी की पांच शैलियां कौन सी है?

विभिन्न प्रकार की मधुबनी चित्रकारी जैसे कि भरनी, कचनी तांत्रिक, गोदनी, कोहबर और भरती प्रत्येक में अपना सार होता है, जो अलग-अलग शैलियों, रूपांकनों और विषयों को प्रदर्शित करता है। इन शैलियों में विविधता मधुबनी कला की समृद्ध टेपेस्ट्री में बनी गई कहानियों, परंपराओं और मान्यताओं की बहुलता को दर्शाती है। लेकिन जो मधुबनी चित्रकारी की इन शैलियों में से कोहबर को हर कोई जानता है। कोहबर मिथिला क्षेत्र में विवाह समारोह के दौरान बनाई जाने वाली सबसे शुभ धार्मिक चित्रकारी है। इसे घर की महिलाओं द्वारा विवाह कक्ष या घर की दीवारों पर चित्रित किया जाता है, जहां दूल्हा और दूल्हन भगवान और परिवार के बड़े सदस्यों से आशीर्वाद पाने के लिए विभिन्न पूजा और अनुष्ठान करतें है।

जब मैंने मधुबनी चित्रकारी को जानने की कोशिश की तो ये सारी जानकारी मुझे प्राप्त हुई। आज मेरी स्थिति यह है कि जैसे योग और ध्यान कर के आप अपने आपको स्वस्थ्य और खुश रखतें है ठीक उसी प्राकर की खुशी मुझे मधुबनी या मिथिला चित्रकारी बनाकर होती है। जब मैं सीता-राम स्वयंवर को दर्शाती हूँ, तो मुझे लगता है कि मैं भी राम-सीता विवाह में शामिल हूं। जब मैं राधा-कृष्ण रासलीला को दर्शाती हूं, तो लगता है मै भी कहीं न कहीं इन गोपियों में शामिल हूं। जब मैं कोहबर को कैनवस पर उतारती हूँ, तो महसूस करती हूँ कि हमारे बुजुर्ग जो गांव में मिट्टी से लीपी गई झोपड़ियों में दीवारों पर अपनी कलाकारी को उतारती हैं, मैं भी वही खुशी कैनवस पर बनाकर उतारती हूँ।

जब भी कैनवस पर मैं अपनी चित्रकारी को रखती हूँ, मुझे अंदर से बहुत हल्कापन और खुशी की अनुभुति होती है, तो इस तरह से मैं अपनी चित्रकारी को पूरा करने की कोशिश करती हूँ।

ये थी कुछ जानकारियां मिथिला चित्रकला के बारे में जो कि आप सभी से बांट कर मुझे बहुत अच्छा लगा।

रितु कुमारी
पत्नी: अतुल प्रकाश
महालेखाकार

ममता

निशा का मन आज बहुत बेचैन था। उसे एक अजीब मन:स्थिति ने घेर रखा था, जिसमें एक खुशी भी थी और एक डर भी था। खुशी इस बात कि इस एक दिन का उसने लंबा इंतज़ार किया था और डर इस बात का कि आज का दिन बीतेगा कैसे? यही सब सोचते-सोचते उसे रात को नींद भी नहीं आई। आज के दिन के लिए उसने ऑफिस से भी छुट्टी ले रखी थी। घर के पास के मंदिर से घंटी की आवाज़ आने पर उसने अब बिस्तर से उठने का मन बना ही लिया, क्योंकि पाँच बज चुके थे। खाने की तैयारी उसने रात में ही कर ली थी। गैस पर एक तरफ चाय और एक तरफ सब्जी बैठा कर उसने चावल धोकर अलग रख दिए। अभी काम वाली दीदी के आने में समय था। पहले दिन के हिसाब से वह क्या टिफिन बनाए– यह सोच ही रही थी कि सब्जी के जलने की गंध आई। भागकर उसने गैस का नाब बंद किया। कुछ देर के बाद काम वाली दीदी भी आ गई। उनके आने के बाद वह नहाने चली गई।

सब कुछ तैयार करके ठीक आठ बजे निशा घर से निकल पड़ी। 8.45 पर वह स्कूल के गेट के सामने खड़ी थी। उसका मन भारी हो रहा था। हालांकि इस दिन के लिए उसने खुद को और बेटे को तैयार किया था, लेकिन उस क्षण दोनों की हालत बहुत ज़्यादा खराब थी। बेटे को जैसे–तैसे बहला कर उसने स्कूल के अंदर भेजने का प्रयास किया। लेकिन अंतत: वह ना माना और स्कूल के एक स्टाफ ने उसे ज़बरदस्ती अपनी गोद में उठा कर क्लास तक पहुंचाया। वो तो अंदर चला गया लेकिन निशा की स्थिति भी इधर कुछ ठीक नहीं थी। अपने आपको संभालने का प्रयास करते हुए वह जैसे ही पीछे मुड़ी ही थी कि एक बच्चे से टकराते बची। वह बच्चा भी अपनी माँ को पकड़ कर रोए जा रहा था। स्कूल का पहला दिन होने के कारण सभी छोटे बच्चों की यही स्थिति थी। आज निशा ने ऑफिस से छुट्टी ली थी, सो उसने आज वहीं रुकना ठीक समझा।

स्कूल की घंटी लग चुकी थी और मेन गेट भी बंद हो चुका था। धीरे-धीरे सब लोग स्कूल के सामने से जाने लगे। निशा ने भी सोचा कि स्कूल के एकदम सामने रुकना ठीक नहीं, क्यों ना कहीं चल कर चाय पी लिया जाए। अभी वह कुछ दूर ही चली थी कि उसे वही लड़की दिखी जिसके बच्चे से उसकी टक्कर हो गई थी। दोनों ने एक दूसरे को देख कर मुस्कुराया। उस लड़की ने खुद ही निशा से चाय के लिए पूछा। फिर दोनों में सामान्य बातचीत शुरू हुई। उसका नाम ज़ुबिन था। वह आशुतोष कॉलेज में संस्कृत विभाग की विभागाध्यक्ष थी। आज उसने भी छुट्टी ले रखी

थी। उसको भी वही डर था, जो निशा को था। खैर पहले दिन के हिसाब से दोनों की बातचीत से इतना स्पष्ट हो गया कि दोनों ही कामकाज़ी माँ हैं और बच्चे और काम के बीच के संतुलन में उलझी हैं। 10.30 बजे छुट्टी का समय था। पहला दिन होने के कारण सभी अभिभावक पहले से ही स्कूल के गेट के सामने आ गए थे। गेट खुला और एक-एक कर बच्चे आना शुरू हुए। निशा कुछ डरी हुई थी लेकिन उसने देखा कि बेटा चुपचाप ही आ रहा है बस उसका हुलिया थोड़ा बदला था। क्लास में रोया था, इतना तो साफ हो गया था।

धीरे–धीरे निशा जीवन में आए इस बदलाव के अनुरूप खुद को ढाल रही थी। आज तो ऐसा लगा कि बस अब गेट बंद ही होने वाला है और पहला लेट आज लग ही जाएगा। बेटे को खींचते हुए उसने गेट के अंदर किया। लंबी सांस लेते हुए मुड़ी ही थी कि सामने ज़ुबिन मुस्कुरा रही थी। उसे मुस्कुराता देख अनायास ही निशा की हंसी छूट गई। रोज़ की इस रेस में आज तो निशा ही विजेता रही। दोनों हँसते-हँसते चाय पीने के लिए चल दीं। जीवन के इस पड़ाव पर ज़ुबिन के रूप में उसे एक दोस्त तो मिली। उन दोनों के जीवन में बहुत अधिक समानता थी। उसके पति खड़गपुर में एक कॉलेज में असिस्टेंट प्रोफेसर थे। ले-देकर वह भी अकेली ही अपने जीवन को संभालने का प्रयास कर रही थी। ज़ुबिन आज कुछ परेशान थी। आज उसके कॉलेज में 10.30 बजे से फ़र्स्ट ईयर की परीक्षा थी। न तो उसने आज कुछ खाया था न ही कुछ बना पाई थी। जैसे-तैसे बस बेटे को समय से स्कूल पहुंचा कर उसे भागना था। निशा के बहुत आग्रह करने पर उसने चाय पीने की हामी भरी। चाय खत्म कर के वह भागी- भागी कॉलेज गई। उसे भाग-भाग के जाता देख निशा को उस पर तरस आया-शायद वो उसकी कुछ मदद कर पाए। कितनी बार ऐसा हुआ कि निशा को भी कभी ना तो ढंग से कुछ बनाने का समय मिलता और ना ही चैन से बैठ कर खाने का।

कुछ दिन पहले तक ज़ुबिन की जो हालत थी, वही स्थिति आज निशा की भी थी। उसने कितनी कोशिश की कि बेटा खुद स्कूल आना–जाना सीखे लेकिन ऐसा हो ना सका। पूरा दिन उसे माँ की ज़रूरत नहीं पड़ती, लेकिन स्कूल जाने के समय उसे सिर्फ निशा चाहिए होती। उसे स्कूल पहुंचाकर निशा को

ऑफिस भागना था। लेकिन ज़ुबिन ने चाय के लिए रोक ही लिया। शुक्रवार का दिन उसका ऑफ डे होता था। लेकिन आज निशा के ऑफिस में कुछ कार्यक्रम था, जिसका संचालन उसके अनुभाग को ही करना था। कई दिनों से दोनों आराम से बात नहीं कर पा रही थी। खैर, चाय खत्म कर वह बस लेने के लिए भागी। करीब एक बजे ज़ुबिन का फोन आया कि आज बच्चों को स्कूल से प्रोजेक्ट मिला है जिसे अगले सप्ताह तक जमा करना है। निशा को बचपन से ही चित्र बनाना, कट-आउट तैयार करना बहुत पसंद था। उसने ज़ुबिन को आश्वासन दिया कि अपने बेटे के साथ उसके बेटे का प्रोजेक्ट भी वह कर देगी।

नौकरी करते निशा को लगभग आठ साल हो चुके थे। देखते–देखते बेटा भी अब स्कूल जाने लगा। कितनी बार निशा का मन करता कि वह नौकरी करने से पहले के जीवन को जी सके- वही उन्मुक्तता, ज़िम्मेदारी से रहित स्वच्छंद जीवन। मनुष्य की सामान्य प्रवृत्ति है कि उसे जो भी सहजता से मिलता है, अच्छा नहीं लगता। अब ये स्थिति थी कि इस नौकरी से निशा का मन ऊब चुका था। उसे ना तो खुद के लिए कभी समय मिलता, ना ही वह बेटे का पूरा ध्यान रख पाती। हर समय एक खीज और झुंझलाहट से वह घिरी रहती। ऐसी ही स्थिति ज़ुबिन की भी थी।

समाज चाहे 19वीं सदी का हो या 21वीं सदी का, पूर्व का हो अथवा पश्चिम का, स्त्री को कसने की कसौटी एक ही होती है। स्त्री घरेलू हो अथवा कामकाज़ी उसे सभी क्षेत्रों में सिर्फ ठीक नहीं, बहुत अच्छा होना होता है। एक अच्छी बेटी, अच्छी बहन, अच्छी पत्नी, अच्छी माँ, लेकिन क्या उसे सिर्फ एक स्त्री होने का अधिकार नहीं। निशा ने इन सब बातों पर विचार करना लगभग छोड़ दिया था। जीवन को उसने अब बस एक रेस मान लिया था, उसके चारों ओर जो भी थे सबको उस रेस में सिर्फ दौड़ना था। ना चाहते हुए उसे भी भागना पड़ रहा था। उसे एक संबल मिल रहा था तो सिर्फ अपनी माँ से।

खैर जैसे-तैसे बेटे के स्कूल का पहला साल खत्म होने को आ रहा था। इस बीते साल ने निशा को बहुत कुछ सिखाया। उसका मानना था कि एक स्त्री जब माँ बनती है तब उसे अपनी सीमाओं और शक्तियों का ज्ञान नहीं रहता। लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता है, उसमें परिपक्वता आती है और परिस्थितियों का सामना करने की हिम्मत भी। उसे पहले दिन के 24 घंटे बहुत ज़्यादा लगते थे, लेकिन मातृत्व की इस यात्रा में समय पंख लगा कर उड़ रहा था।

देखते-देखते बेटे के रिजल्ट का दिन भी आ गया। उस दिन निशा को ऐसा अनुभव हुआ कि उसने सच में कुछ बड़ा पा लिया हो। बेटे का पहला रिजल्ट देखकर उसके उत्साह ने सभी सीमाएं तोड़कर आँखों से बहने का रास्ता ढूंढ लिया। उस दिन उसे उतनी ही खुशी मिली, जितनी बेटे को उसने पहली बार गोद में लेते समय महसूस की थी। एक माँ की मन:स्थिति को दूसरी माँ ने समझा। उसे अपने कंधे पर हल्का सा दबाव महसूस हुआ। पीछे मुड़ी तो देखा ज़ुबिन भी आँखें मिचे, हल्की मुस्कान से अपने उद्गार को

रोकने का प्रयास कर रही थी। आज दोनों को खुशी से अधिक गर्व का अनुभव हो रहा था। इस दिन के लिए दोनों ने अपने-अपने काम से भी छुट्टी ले रखी थी। स्कूल से निकल कर दोनों ने कहीं घूमने का मन बनाया। उस दिन सबने खूब मज़े किए।

कई दिनों के बाद निशा को आज मौका मिला कि वह अपनी पुरानी दिनचर्या का मज़ा ले सके। बेटे के स्कूल में सेशन ब्रेक शुरू हो चुका था। रिजल्ट निकलने के अगले दिन ही वह अपनी नानी के साथ उनके घर चला गया था। निशा ने ऑफिस से कुछ दिनों की छुट्टी ली। विगत एक वर्ष में निशा ने कोई भी ऐसा ब्रेक नहीं लिया जो सिर्फ उसके लिए हो। माँ के घर पर कुछ दिन चैन, सुकून से बिताने का मन बनाकर निशा चली आई।

उन कुछ दिनों में निशा को वापस से बेटी बनने का अवसर मिला। माँ ने उसकी पसंद की सभी चीज़ें बनाकर खिलाई। उसने कई महीनों की बची अपनी नींद पूरी की। माँ समझ रही थी कि उसे इन सभी चीजों की कितनी ज़रूरत थी, तभी तो अपनी तबीयत का ख्याल ना करते हुए भी सुबह शाम अपनी बेटी का ख्याल रखने में लगी रहती। एक माँ को माँ ने संभाल ही लिया।

शाम के छह बजने वाले थे। पास के मंदिर से भजन की आवाज़ सुनकर उसने ना चाहते हुए उठने का मन बना लिया। उधर किचन से चना दाल की खुशबू आ रही थी। आज रविवार भी था। कल से फिर पुरानी दिनचर्या में लौटने का टाइम आ गया था। लेकिन इन कुछ दिनों में उसे इतना अवश्य समझ में आ गया था कि अंत में एक औरत के अंदर सिर्फ एक माँ बचती है। बच्चा बड़ा हो या छोटा, औरत की उम्र माँ बनने के बाद रुक जाती है। माँ ने उसे चाय के लिए आवाज़ लगाई। निशा ने देखा कि माँ कुछ पैक कर रही है। पूछने पर बताया कि गाजर का हलवा टिफिन में रख रही है। साथ ही घर के बने चिप्स, बड़ी पहले ही पैक हो चुके हैं। शाम की आरती का समय हो गया था। माँ ने निशा को बैठने का इशारा किया और आरती करने लगी। निशा हाथ में मोबाइल लिए वहीं बैठी रही। इतनी देर में माँ ने सिर पर हाथ फेरा, निशा ने देखा कि माँ सिर में तेल लगाने की तैयारी कर रही थी। उसने आँख बंद कर बस इस क्षण को जी लेना चाहा।

प्रियंका संजीव सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

भारत-मालदीव संबंध: एक झलक

इन दिनों "मालदीव का बहिष्कार" का ट्विटर पर रुझान हो रहा है। मालदीव के निर्वाचित नेता, भारत के खिलाफ ऐसे ट्वीट कर रहे हैं- जैसे खुले में शौच करना हमारी राष्ट्रीय संस्कृति है और ये संस्कृति हम पश्चिमी देशों में भी ले जा रहे हैं। भारत मालदीव जितना सुंदर कभी हो ही नहीं सकता... ये सब वहाँ की सत्तारूढ़ पार्टी के मंत्री कह रहे हैं। इन सब की शुरुआत तब हुई जब हमारे प्रधानमंत्री जी लक्षद्वीप गए और वहाँ का चित्र एवं वीडियो को साझा किया। सुंदर नज़ारा, सुंदर समुद्र तट, सूर्यास्त का मनोरम दृश्य को देख कर प्रथम बार में ऐसा लगेगा ये थाईलैंड या मालदीव है। लेकिन सच्चाई इससे परे थी, ये हमारा लक्षद्वीप था। प्रधानमंत्री ने लक्षद्वीप में साफ पानी एवं विकास के लिए निवेश की घोषणा की। ये बात मालदीव की सरकार में कुछ लोगों को चुभ रही है और वो अमर्यादित टिप्पणी कर रहे हैं। आपको बता दें, ये किसी ट्रोलर की नहीं बल्कि वहाँ की सत्तारूढ़ मंत्री की आधिकारिक सोशल मीडिया से की गई टिप्पणी है। भारत की तरफ से यह एक इन्स्टाग्राम में डाली गई सूची सिर्फ नहीं थी। ये एक भू- राजनीतिक मास्टर स्ट्रोक था, भारत नम्र शक्ति (सॉफ्ट पावर) एवं कठोर शक्ति (हार्ड पावर) का एक अनुस्मारक था कि लक्षद्वीप भारत के लिए महत्व रखता है। भारत के पास लक्षद्वीप होना मालदीव एवं चीन जैसे देशों के लिए एक खतरा है। इस तरह भारत ने एक तीर से दो निशाना लगाया।

मालदीव में हाल ही में चुनाव हुआ। मुहम्मद मुइज़ू ने चुनावी घोषणा में भारत विरोधी बातें की। राष्ट्रपति बनने के बाद इन्होने घोषणा भी कि- मैं अपने देश की ज़मीन पर किसी भी विदेशी सेना की उपस्थिति को हटा दूंगा। इस वादे के दम पर चुनाव भी जीता। उन्होंने अपने अभियान को 'भारत बाहर निकलो' (इंडिया आउट) का नाम दिया। इनके पहले जो राष्ट्रपति थे वे भारत के अच्छे दोस्त थे। वे वास्तविकता जानते थे कि मालदीव एशिया का बहुत छोटा देश है। मालदीव के सबसे नजदीक भारत ही है जो ज़रूरत के समय उसकी मदद कर सकता है और भारत ने वैसा किया भी है। ऑपरेशन वॉटर के द्वारा 2014 में हमने उन्हें मुफ्त में पानी उपलब्ध कराया और ये करने वाले हम पहले देश थे। हमनें उन्हें कोविड के समय टीका भी उपलब्ध कराया। आज भी हमारे कुछ सैन्य कर्मचारी मालदीव में हैं जिनकी संख्या सिर्फ 75 है। 2009 में भारत ने मालदीव को कुछ हेलीकाप्टर दिया था। इसके रख-रखाव के लिए सैन्य कर्मचारियों को साथ में भेजा गया। इसके अलावा एक रडार भी बनाया गया था। अब प्रश्न उठता है कि जवानों से मालदीव को

क्या खतरा है? लेकिन जब प्रधानमंत्री जी ने लक्षद्वीप का चित्र एवं वीडियो साझा किया तब मालदीव को समस्या होने लगी जबकि मालदीव का ज़िक्र भी नहीं था। ये तो सामान्य सी बात है। भारत का प्रधानमंत्री भारत के किसी भी कोने में जाकर वहाँ का चित्र और वीडियो सोशल मीडिया पर डाल सकता है इसमे किसी भी देश को तकलीफ नहीं होनी चाहिए लेकिन मालदीव के लोगों ने सोशल मीडिया का गलत इस्तेमाल करना शुरू कर दिया और हमारे देश के खिलाफ अमर्यादित टिप्पणी करने लगे और हमारे लोगों ने बॉयकाट मालदीव कहना शुरू कर दिया। निश्चित रूप से ये ज़्यादा समय नहीं चलेगा लेकिन ये आज के भारत की भावना को ज़रूर समझा रहा है।

अब सवाल उठता है कि मालदीव भारत के लिए इतना महत्वपूर्ण क्यों है? हिन्द महासागर से होकर विश्व-व्यापार का बड़ा हिस्सा संचालित होता है। भारत 'पड़ोसी प्रथम' की नीति अपनाता है। हमारी नौ-सेना अरब सागर और हिन्द महासागर में समुद्री डाकू से लड़ती है। कई बार भारत ने लोगों का बचाव भी किया है। भारत की बढ़ती शक्ति से चीन को भय लगता है क्योंकि चीन की डोमिनेंट नीति (वर्चस्व नीति) के लिए भारत एक बाधा है। निश्चित रूप से हम तकनीक के मामले में चीन की बराबरी नहीं कर सकते हैं फिर भी हम विकसित और प्रभुत्वशाली होते जा रहे हैं और चीन हमें रोकने के लिए हर संभव प्रयास कर रहा है। चीन एशिया का अब इकलौती महाशक्ति नहीं रहा। इसलिए चीन मालदीव की मदद चाहता है ताकि हिन्द महासागर में इसकी भी पकड़ मजबूत हो।

सामान्यतया चुनाव के बाद मालदीव का राष्ट्रपति भारत आना चाहता है लेकिन इस बार राष्ट्रपति मुहम्मद मुइज़ू ने परंपरा को तोड़ा। पहले वो तुर्की गए, उसके बाद वो चीन जाना चाहते हैं। ये सब वो वोट बैंक के लिए कर रहे हैं। इससे उनका वोट तो बढ़ा लेकिन इनके देश का बहुत नुकसान हो गया। मालदीव को चीन-तुर्की से ज़्यादा फायदा भारत से है।

अनूप कुमार सिन्हा
सहायक लेखा अधिकारी

भारत का चंद्रविजय अभियान

अन्तरिक्ष के शांत अंधेरे में, लाखों आँखें भारत के महत्वाकांक्षी चन्द्र मिशन 'चंद्रयान-3' से टेलीमेट्री डेटा प्रदर्शित करने वाली स्क्रीन पर टिकी थी। जैसे ही अन्तरिक्ष यान चंद्रमा की सतह के करीब पहुंचा, भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) नियंत्रण कक्ष में तनाव फैल गया। इंजीनियरों और वैज्ञानिकों की सांसें अटक गईं, उनके दिल प्रत्याशा में धड़कने लगे। वर्षों की सावधानीपूर्वक योजना और कार्यान्वयन के कारण यह क्षण आया। चंद्रयान–3 जिसमें एक आर्बिटर, विक्रम नामक एक लैंडर और प्रज्ञान नामक एक रोवर शामिल है, ने अज्ञात चन्द्र दक्षिणी पोल का पता लगाने के लिए अपनी यात्रा शुरू की थी। जैसे ही विक्रम चंद्रमा के ऊबड़-खाबड़ इलाकों की ओर उतरा, नियंत्रण कक्ष धीमी आवाज़ों से गूंज उठा। आदेश जारी किए गए और हर गतिविधि पर सटीकता से निगरानी रखी गई। लैंडिंग अनुक्रम के अंतिम क्षण महत्वपूर्ण थे। अचानक कमरे में मौजूद सभी की साँसे थम सी गईं थीं क्योंकि विक्रम को टेलीमेट्री ने अपने नियोजित प्रक्षेप पथ से विचलन का संकेत दिया। फिर गणना और त्वरित निर्णय लेने की प्रक्रिया शुरू हुई क्योंकि इसरो इंजीनियरों ने नियंत्रण हासिल करने के लिए अथक प्रयास किया। जब विक्रम अपने मिशन को पूरा करने के लिए दृढ़ संकल्पित होकर चंद्रमा के गुरुत्वाकर्षण के खिलाफ लड़ रहा था तो मिनट भी अनंत काल की तरह महसूस हो रहे थे। और फिर जब टेलीमेट्री डेटा स्थिर हो गया, जो एक सफल लैंडिंग का संकेत था, तो नियंत्रण कक्ष में अत्यंत प्रसन्नता का माहौल हो गया।

जब इसरो की मिशन नियंत्रण टीम ने एक ऐतिहासिक उपलब्धि का जश्न मनाया तो जयकारे गूंज उठे, खुशी के आँसू बहे और सबने एक दूसरे को बधाइयाँ दीं। भारत चंद्रमा पर सॉफ्ट लैंडिंग करने वाला दुनिया का चौथा और दक्षिणी ध्रुव के पास ऐसा करने वाला पहला देश बन गया था। जैसे ही धूल जमी, फोकस मिशन के अगले चरण में स्थानांतरित हो गया। आर्बिटर ने चंद्रमा की परिक्रमा करना जारी रखा, मूल्यवान डेटा एकत्र किया और चंद्रमा के सतह की आश्चर्यजनक छवियों को पृथ्वी पर वापस भेजा। इस बीच, रोवर प्रज्ञान चंद्रमा के अज्ञात क्षेत्रों के रहस्यों को उजागर करने का वादा करते हुए अपनी खोज पर निकलने के लिए तैयार हो गया। चंद्रयान–3 की सफल लैंडिंग, न केवल भारत के अन्तरिक्ष अन्वेषण यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुई है, बल्कि देश को वैज्ञानिक खोज और नवाचार की भावना से प्रेरित भी किया है। यह भारत के वैज्ञानिकों और इंजीनियरों के समर्पण, दृढ़ता और सरलता का प्रमाण था, जिन्होने बड़े सपने देखने और सितारों तक पहुँचने का साहस किया।

हर भारतवासी को अपने देश के महान वैज्ञानिकों की इस अद्वितीय कामयाबी पर गर्व है।

आनंद कुमार पाण्डेय
सहायक लेखा अधिकारी

छोटी-छोटी बातें

श्याम अपने गाँव का इकलौता लड़का था जो सरकारी विभाग में नौकरी करता था। एक गरीब परिवार से ताल्लुक रखने वाला श्याम आज अपनी मेहनत से शहर के बड़े दफ्तर में बाबू की नौकरी पर लग गया था। नौकरी लगने की बात जंगल की आग जैसी चारों तरफ फैल गयी थी। सब अपनी बेटी का रिश्ता श्याम के साथ करना चाहते थे। श्याम के पिता मुनीलाल भी श्याम के लायक एक सुंदर एवं सुशील कन्या ढूंढ रहे थे। काफी लड़कियों को देखने के बाद भी उन्हें अपने श्याम के लिए उचित वधू नहीं मिल पायी थी। हर जगह उन्हे निराशा ही हाथ लगती थी। अब तो उन्हें लगने लगा था कि शायद उन्होंने अपनी होने वाली बहू से कुछ ज़्यादा ही उम्मीदें लगा रखी है। किसी के नैन-नक्श मे कुछ गड़बड़ी तो किसी की पढ़ाई-लिखाई ठीक नहीं, कोई घर के काम में योग्य नहीं तो किसी को बात करने का ढंग नहीं। इसी बीच उन्हें बगल के गाँव से एक खबर आई की रमा नाम की एक लड़की है, जो श्याम के लिए एकदम योग्य है। रमा की खूबसूरती, नैन-नक्श, कार्य-कुशलता, संस्कार इत्यादि की चर्चा आप-पास के गाँवों में हो रही थी। श्याम के पिताजी इतनी बातें सुनकर रह नहीं पाये और बगल के गाँव जाने का निश्चय किया। जाने की तारीख आ गयी और श्याम की माँ ने जाने की पूरी व्यवस्था कर दी।

श्याम के पिता मुनीलाल रमा के गाँव की ओर निकल पड़े। बस से कुछ घंटे का सफर था लेकिन रास्ते में काफी तेज़ बारिश होने लगी और सफर का समय काफी बढ़ गया। आकस्मिक बरसात से पूरे गाँव में कीचड़ भर गया। गाँव की सड़क कच्ची थी इसीलिए कोई ऑटो या रिक्शा भी जाने के लिए तैयार नहीं था। सबको कीचड़ में फंस जाने का डर था। ज़्यादा पैसा देने के बाद भी कोई राजी नहीं हो रहा था। अब उन्हें पैदल चल कर ही गाँव पहुँचना था। उन्होंने हाथ जोड़े और कहा- हे भगवान! इतना कष्ट झेल कर लड़की देखने जा रहा हूँ, कृपा करके इस बार बात पक्की करवा देना। उन्हें ऐसा करते देख गाँव की कुछ लड़कियां ठहाके लगा के हँसने लगीं। उनमें से एक ने पूछा- ऐसी क्या मुसीबत आन पड़ी चाचा, जो कीचड़ में खड़े होकर भगवान को याद कर रहे हो? और फिर सब ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगीं। मुनीलाल ने सब अनसुना कर दिया और इस मुसीबत से निकलने की ओर ध्यान देने लगे। लड़कियां भी अपनी-अपनी मंज़िल की ओर बढ़ गईं। चलते-चलते मुनीलाल काफी आगे पहुँच गए। अब तूफान भी शांत हो चुका था। उनके पैरों में कीचड़ लगा हुआ था, वहाँ पास ही बरामदे में खड़ी एक लड़की से उन्होंने थोड़ा पानी मांगा जिससे वो अपने पैर धोकर आगे बढ़ सकें। पानी मांगने पर लड़की बोल पड़ी- अरे चाचा आप! आप अभी यहाँ पहुँचें हैं, मैं तो कब की आ गयी। मुनीलाल जी बोले- क्या करूँ? आँधी तूफान झेलने की आदत नहीं है न, इसीलिए चला नहीं जा रहा था। खैर क्या मुझे थोड़ा पानी मिल सकता है, मुझे अपने पैरों से कीचड़ साफ करना है? इतने में लड़की बोल पड़ी- चाचा, आपको फिर कहीं जाना है क्या? मुनीलाल बोले- क्यूँ तुम्हें इससे क्या, मुझे कहीं जाना है या नहीं। लड़की बोली- अरे अरे चाचा, आप तो गुस्सा हो गए। मैं तो बस इसीलिए पूछ रही थी कि अगर जाना है तो आप वापस इसी रास्ते से जाओगे और जब जाओगे तो फिर से पैरों में कीचड़ लग जाएगा। और जब कीचड़ लग ही जाएगा तो फिर धोने से क्या फायदा। इतना बोलकर वो लड़की फिर से ठहाके लगाकर हँसने लगी। मुनीलाल जी शर्म से लाल हो गए। क्योंकि आजतक किसी ने भी उन्हें ऐसा उल्टा जबाब नहीं दिया था और उनकी गलती तो किसी ने बताई ही नहीं थी। वो खीझ तो गए थे लेकिन बात समझ आने पर मुस्कुराने लगे। इतने में उस लड़की के पिताजी बोलते हुए बाहर आए- अब कौन आया है इसकी शिकायत लेकर। नाक मे दम कर दिया है तूने रमा। बाहर आकर जब उन्होने मुनीलाल को देखा तो स्तब्ध रह गए। -अरे मुनीलाल जी आप! आप तो दोपहर तक आने वाले थे। शाम हो गयी तो मुझे लगा अब आप नहीं आएंगे। या फिर आपने आने का इरादा बदल दिया। मुनीलाल बोले- अरे

नहीं नहीं शंकर बाबू, वो तो रास्ते में तूफान के कारण आने में वक़्त लग गया। अच्छा! तो ये आपका घर है? इसका मतलब ये आपकी बेटी है। और मैं इसी को देखने आया हूँ। इतना सुनते ही रमा शरमाती हुई अंदर चली गयी और मुनीलाल जी मुस्कुराने लगे। शंकर बाबू ने उनको अंदर बुला कर बैठाया और रमा की माँ को आवाज़ दी- अरी सुनती हो रमा की माँ, मुनीलाल जी आए हैं। रमा की माँ बोली- क्या कहा आपने ! मुनीलाल जी, लेकिन वो तो दोपहर में आने वाले थे। अपने सर पर पल्लू रखते हुए रमा की माँ बाहर आई। दोनों की खुशी का ठिकाना नहीं था। और हो भी क्यों न? रमा उनकी इकलौती बेटी थी। और पहली बार कोई उनके घर रिश्ता लेकर आया था। दोनों मुनीलाल जी की आवभगत में लग गए।

इधर रमा छुप के किवाड़ के कोने से झांककर मुनीलाल जी को देख रही थी। ऐसा करते हुए उनको मुनीलाल जी ने देख लिया और इशारे से अपनी तरफ़ बुलाया। रमा पहले सकुचाई लेकिन फिर चली गयी। उन्होंनें रमा को बैठने का इशारा किया तो वो बैठ गयी। दोनों चुपचाप बैठे थे। रमा को चुप बैठा देख मुनीलाल जी को हँसी आ गयी। उन्होने रमा से पूछा- क्या हुआ? तुम इतना डर क्यूँ रही हो। तो रमा ने कहा- माँ ने कहा था कि जब मेहमान देखने आएं तो चुपचाप शालीनता से बैठना है लेकिन मैंने आपकी हँसी उड़ाई और आपसे सवाल भी किए। मुनीलाल जी झट से बोले- ये तो अच्छी बात है न। इससे मुझे तुम्हारे असली स्वभाव का पता चल गया। अच्छा ऐसी बात है?-रमा ने पूछा। हाँ बिलकुल! अगर मैं तुमसे वहाँ नहीं मिलता तो तुम यहाँ चुपचाप बैठी रहती और मुझे पता ही नहीं चलता कि तुम कितनी समझदार हो। ऐसा बोलकर दोनों हंसने लगे। इतने में रमा की माँ चाय नाश्ता लेकर आई। रमा को बैठा देख वो चिल्ला पड़ी-हे भगवान! मुनीलाल बोले- अरे अरे बहन जी क्या हुआ? आप चौंक क्यूँ गईं? रमा की माँ बोली- भाईसाब.. मैंने इसको लाख समझाया था कि जब मेहमान तुम्हें देखने आएं तो शालीनता से पेश आना और ये आपके बगल में जा कर बैठ गयी। रमा कुछ बोलना चाहती थी लेकिन रमा की बात को बीच में ही काटते हुए माँ बोल पड़ी- भाईसाब... ये सब इसकी नादानी है। इसे माफ कर दीजिए। मुनीलाल बोले-अरे बहन जी, मैंने ही इसे यहाँ बैठने को कहा था। दरअसल ये हमारी दूसरी मुलाक़ात है। रास्ते में आते वक़्त मैं रमा से मिल चुका हूँ। वो अपनी सहेलियों के साथ घर वापस आ रही थी। रमा की माँ बोली- तुमने हमे बताया नहीं रमा। रमा बोली- अरे मुझे कैसे पता चलेगा कि ये बातें भी बतानी होती हैं। रमा की इन बातों को सुनकर सब ठहाके लगा कर हँसने लगे। और रमा शरम से लाल हो गयी। माँ ने नाश्ता और चाय परोसा। मुनीलाल जी ने रमा को अपने साथ खाने को कहा और उसकी तरफ अपनी थाली आगे बढ़ा दी। रमा ने अपनी माँ की तरफ देखा। माँ ने इशारे से अपनी मंजूरी दे दी। फिर क्या रमा शुरू हो गयी। उसने मुनीलाल जी का नाश्ता लगभग अकेले खा लिया। मुनीलाल जी बस रमा की इन बचकानी हरकतों को देख कर मुस्कुरा रहे थे। रमा जैसे ही प्लेट सफाचट करने वाली थी कि माँ ने आकर उसका हाथ पकड़ लिया और कहा- अरे रमा, चलो तैयार होकर आ जाना। रमा उनके साथ चल पड़ी।

रमा के पिता और मुनीलाल जी बैठ कर बातें करने लगे। मुनीलाल जी मन ही मन खुश थे। जैसी लड़की उन्हें चाहिए थी, रमा बिल्कुल वैसी ही थी। माँ कुछ देर में रमा को लेकर आ गयी, रमा ने साड़ी पहनी थी। रमा को देख मुनीलाल ने अपना मन पक्का कर लिया और रमा को मन ही मन अपनी बहू भी स्वीकार कर लिया। कुछ देर बातें होने के बाद मुनीलाल जी ने रमा के पिता से कहा- भाईसाब... मुझे रमा पसंद है, अब आप

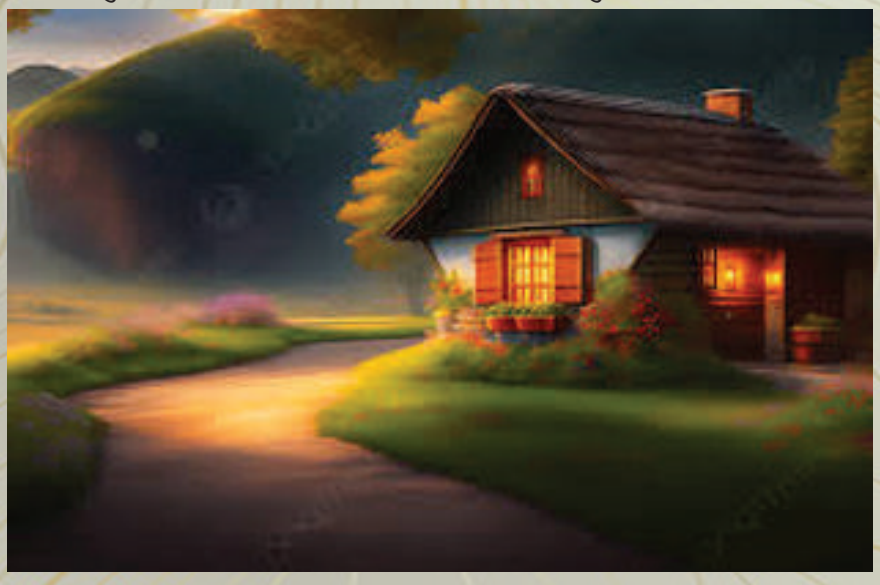

आकर हमारे लड़के से मिल ले। भगवान की दया से अगर सब ठीक रहा तो शादी की तारीख भी संग-संग तय कर लेंगे। ये बातें सुनकर रमा दौड़ कर अंदर चली गयी। दोनों बाबूजी एक दूसरे के गले लग गए। श्याम से मिलने जब रमा और उसके माता-पिता आए तब उसकी खूबियों को देख कर तीनों मंत्रमुग्ध हो गए। उनको रमा के लिए जैसे वर की तलाश थी श्याम बिलकुल वैसा था। शादी की तारीख पक्की हुई और देखते देखते वो दिन भी नजदीक आ गया। रमा और श्याम में ज़्यादा बातचीत नहीं हुई थी, क्योंकि दोनों शर्मीले स्वभाव के थे। रमा वैसे तो काफी बातें करती थी, लेकिन श्याम के सामने उसके मुँह से कोई आवाज़ नहीं निकलती थी। वो बस मुसकुराते रहती उसके आसपास। शादी बड़े धूम धाम से हुई। रमा अपने जीवनसाथी के रूप में श्याम जैसा लड़का पाकर सातवें आसमान पर थी। श्याम और रमा एक दूसरे के साथ काफी खुश थे। दोनो एक दूसरे की उम्मीदों पर खरे उतरे थे। रमा अपने सास ससुर की भी लाड़ली बहू थी। मुनीलाल जी तो उसे अपने सर आंखो पर बैठा के रखते थे। रमा के रूप में उन्हें एक बेटी मिल गयी थी। शादी के एक महीने के बाद अब रमा, श्याम के साथ कोलकाता जाने वाली थी। पर रमा चाहती थी कि सब एक साथ रहें। सास-ससुर ने बीच-बीच में आते रहने का दिलासा देते हुये दोनों को विदा किया।

रमा पहली बार किसी बड़े शहर में गयी थी। वो शहर की भाग-दौड़ देखकर आश्चर्यचकित थी। उसे ऐसा लग रहा था की दुनिया इतनी बड़ी है, उसे तो पता ही नहीं था। दोनों ने वहाँ धीरे-धीरे अपनी दुनिया बसाई। दोनों खूब घूमते, खाते-पीते, सिनेमा देखते। शहर की दुनिया रमा को भा गयी थी। अब उसका पहनावा-ओढ़ावा भी बदल गया था। अब रमा साड़ी-सूट नहीं बल्कि जीन्स टॉप पहनने लगी थी। उसे साड़ी पहनना अब मुसीबत लगने लगा था। उसकी कई दोस्त भी बन गई थीं जो उसी की तरह गृहणी थीं। अब रमा उनके साथ ज़्यादा समय बिताने लगी थी। अब उसका पढ़ाई-लिखाई में मन नहीं लगता था। श्याम उसे हमेशा टोकता रहता था कि उसे पढ़ाई पर ध्यान देना चाहिए। स्नातक फ़ाइनल की परीक्षा पास आने वाली है। पर रमा उसकी बातों को अनसुना कर देती थी। और अपने दोस्तों के साथ नए-नए प्लान्स बनाती रहती थी। कभी माल्स, कभी सिनेमा, कभी पिकनिक, कभी किट्टी पार्टी। अब रमा के पास श्याम के लिए ज़्यादा समय नहीं होता था। श्याम और रमा में अब दूरियाँ बढ़ने लगी थी। रमा अब माँ-बाबूजी से भी नियमतः बात नहीं कर पाती थी। माँ बाबूजी को ये बात खटकने लगी थी। उन्हें आभास हो चुका था कि कहीं न कहीं दोनों के बीच कुछ गड़बड़ चल रही है। उन्होंने श्याम से इस बारे में पूछा लेकिन उसने कुछ संतोषजनक जबाब नही दिया। फलतः माँ-बाबूजी दोनों ने कलकत्ता जाने का निश्चय किया।

रमा और श्याम दोनों उनके आव-भगत की तैयारी में लग गए थे। शादी के बाद दोनों पहली बार उनके घर आ रहे थे। रमा और शाम काफी खुश थे। श्याम ने ऑफिस से कुछ दिनों की छुट्टियाँ ले ली थी। और रमा ने भी अपने दोस्तों के साथ सारे प्लान्स रद्द कर दिये। वो सारा समय माँ-बाबूजी के साथ बिताना चाहती थी। ये देख कर श्याम काफी खुश हुआ कि रमा भले ही यहाँ आकर बदल गयी है, लेकिन जो उसका स्वभाव है वो वैसे का वैसा ही है। रमा ने अपनी रसोई में सारा सामान भर लिया कि कहीं कोई कमी न रह जाए। श्याम भी घर के कामों में रमा की मदद किया करता था। दोनों अब ज़्यादा से ज़्यादा वक़्त एक साथ बिताया करते थे। माँ-बाबूजी के आने का दिन भी आ गया। रमा और श्याम दोनों उन्हे लेने स्टेशन पहुँचे। रमा ने खीर बना कर लंचबॉक्स में रख लिया था कि घर आते समय माँ-बाबूजी को अगर भूख लग गयी तो वो खा लेंगे। रमा की इन सारी बातों ने ही श्याम और उसके परिवार को आकर्षित किया था। रमा हर छोटी छोटी बात का ध्यान रखती थी। माँ, बाबूजी, श्याम और रमा सब लोगों ने मिलकर पूरा समय खूब खुशी एवं मस्ती से व्यतीत किया। रमा भी अब समझ चुकी थी कि क्यों श्याम उससे उखड़ा उखड़ा रहता था। उसे फिर से अपने परिवार से मिलाने और समय पर उसकी आँखों को खोलने के लिए उसने भगवान का शुक्रिया किया। अब रमा समय को बिना नष्ट किए श्याम, घर, एवं अपनी पढ़ाई को बराबर महत्व देती थी, और कभी कभार दोस्तों को भी समय देती थी।

आस्था गुप्ता
लेखाकार

राजभाषा

राजभाषा कितना सुंदर शब्द! संविधान निर्माता ने भी कितना सुंदर नाम दिया है एवं संविधान में राजभाषा का स्थान दिया है। राजभाषा किसी क्षेत्र विशेष का या किसी खास हिंदी भाषी राज्य की भाषा नही है। हिंदी भाषी क्षेत्र की स्थानीय भाषा तो देहाती या गाँव की भाषा होती है। शुद्ध हिंदी तो साहित्यिक और राजभाषा की भाषा है। राजभाषा किसी क्षेत्र विशेष या राज्य विशेष के लोगों की भाषा नहीं है। राजभाषा का मूल अर्थ-राजकाज की भाषा या शासकीय कार्य की भाषा या कार्यालयीन कार्य की भाषा है। राजभाषा शब्द की उत्पत्ति संविधान में किए गए प्रावधान से हुई है। राजभाषा विभाग द्वारा समय-समय पर इस बात पर जोर दिया जाता रहा है कि कार्यालय के अधिकारियों कर्मचारियों को कार्यालय में प्रकाशित किए जाने वाले पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से राजभाषा से संबंधित संवैधानिक प्रावधानों, अधिनियमों, नियमों, पुरस्कार योजनाओं से अवगत कराया जाना चाहिए। इसी कार्य के लिए केन्द्र सरकार के मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों आदि के राजभाषा अनुभाग संविधान के प्रहरी के रुप में कार्य करतें है।

जब हम सर्वप्रथम शासकीय कार्य से जुड़ते हैं, हम शपथ लेते हैं, " मैं भारत के संविधान का निष्ठापूर्वक पालन करूंगा।" यही शपथ राजभाषा के सम्बन्ध में भी प्रयोज्य है। "राजभाषा" संविधान का ही भाग है और इसका पालन करना, इसके उत्तरोत्तर प्रयोग हेतु प्रयास करना हमारा नैतिक एवं संवैधानिक दायित्व है।

संविधान के भाग 17 के अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा से संबंधित प्रावधान किया गया है। अनुच्छेद 343 में यह उल्लेख है कि संघ की राजभाषा हिंदी एवं लिपि देवनागरी होगी। संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंको का रूप भारतीय अंको का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा। कार्यालय के सभी कार्मिक संघ सरकार के सेवक है। संघ सरकार को संविधान के अनुच्चेद 351 द्वारा राजभाषा हिंदी के विकास के लिए निदेश दिया गया है। हमारे सहयोग एवं प्रयास से ही तो संघ सरकार को राजभाषा के विकास में सहयोग प्राप्त हो पाएगा। संविधान के अनुच्छेद 351के अनुसार संघ सरकार का यह कर्तव्य होगा कि वह राजभाषा हिंदी का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे। आठवीं अनुसूचि में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली, शब्दों और पदों को ग्रहण करते हुए राजभाषा हिंदी की समृद्धि सुनिश्चित करें।

अनुच्छेद 343(3) के शक्ति का प्रयोग करते हुए संसद द्वारा राजभाषा अधिनियम 1963 पारित किया गया। इस अधिनियम में कुल 9 धाराएं एवं 11 उप धाराएं है। राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अनुसार कार्यालय द्वारा जारी

किए जाने वाले निम्न 14 प्रकर के दस्तावेज हिंदी एवं अंग्रेजी में जारी किया जाना अनिवार्य है : 1. सामान्य आदेश 2. अधिसूचनाएं 3. संकल्प 4. नियम 5. प्रशासनिक एवं अन्य रिपोर्ट 6. प्रेस विज्ञप्तियाँ 7. संविदा 8. करार 9. लाइसेंस 10. परमिट 11. निविदा सूचना 12. निविदा फॉर्म 13. संसद के समक्ष प्रसतुत किए जाने वाले प्रशासनिक व अन्य प्रतिवेदन 14. संसद के समक्ष प्रसतुत किए जाने वाले सरकारी कागजात।

सामान्य आदेश में निम्नलिखित सम्मिलित है:-

- ऐसे सभी आदेश, निर्णय या अनुदेश जो विभागीय प्रयोग के लिए हों और जो स्थाई प्रकार के हों,
- एसे सभी आदेश, अनुदेश, पत्र, ज्ञापन, नोटिस आदि जो सरकारी कर्मचारियों के समूह अथवा समूहों के संबंध में हों या उनके लिए हों,
- ऐसे सभी प्रपत्र जो विभागीय प्रयोग के लिए हों या सरकारी कर्मचारियों के लिए हों।

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 8 के उपबंधों के अंतर्गत राजभाषा नियम 1976 बनाए गए हैं। इस नियम के तहत कुल 12 नियम है। राजभाषा नियम 5 के अनुसार सभी क्षेत्रों/कार्यालयों से प्राप्त हिंदी पत्र का जवाब हिंदी में दिया जाना अनिवार्य है।

राजभाषा नियम 8(4) के तहत कार्यालय के विभागाध्यक्ष के हस्ताक्षर से हिंदी में प्रवीणता प्राप्त या कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त अधिकारी एवं कर्मचारी को हिंदी में कार्य करने के लिए आदेश जारी किए जाते है।

राजभाषा नियम 11 के अनुसार लेखन सामग्री, नामपट्ट, पत्रशीर्ष, लिफाफे, विजिटिंग कार्डस, रबड़ की मोहरें द्वीभाषी रूप में तैयार कराया जाना अनिवार्य है।

राजभाषा नियम 12 के अनुसार कार्यालय के प्रशासनिक अध्यक्ष की यह जिम्मेदारी है कि वह राजभाषा अधिनियम व उसके अधीन बनाए गए नियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं।

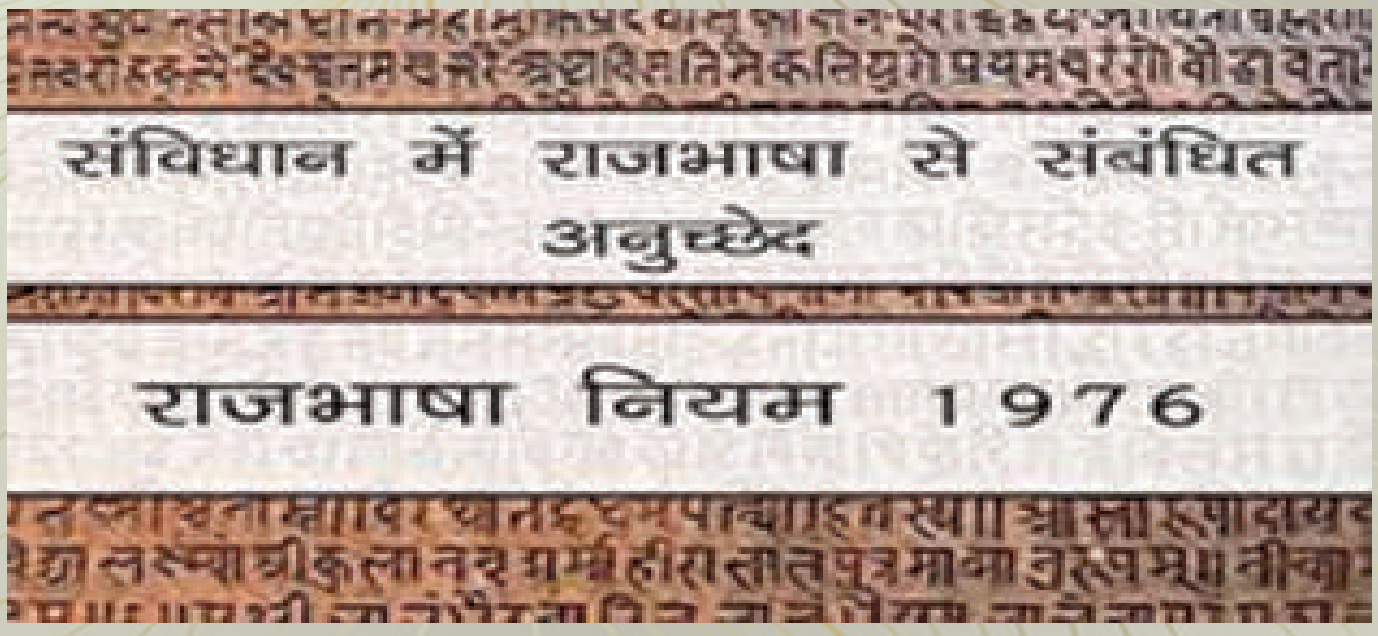

संघ सरकार द्वारा राजभाषा के समुचित विकास के लिए विभिन्न प्रकार के पुरस्कार योजनाएं भी लागू की हैं। यदि क्षेत्र "ग" के कार्मिक एक वित्तीय वर्ष में हिंदी में टिप्पण एवं प्रारूपण में 10,000 शब्द लिखतें है, तो वे हिंदी पुरस्कार योजना के तहत 10 पुरस्कार में से एक पुरस्कार के लिए पात्र होंगे। हिंदी में कार्यालयीन कार्य करिए एवं वित्तीय लाभ भी प्राप्त करिए।

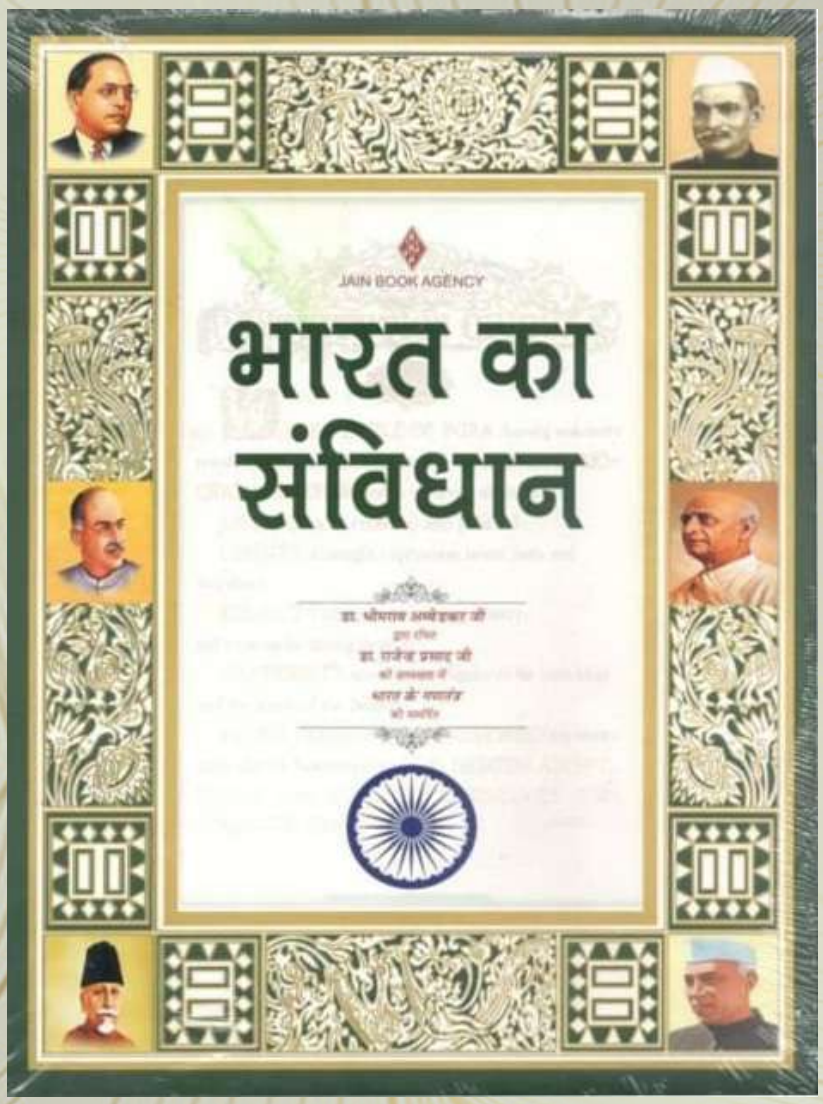

संसद के दोनों सदनों द्वारा पारित राजभाषा संकल्प 1968 के अनुपालन में ही संघ सरकार द्वारा प्रतिवर्ष वार्षिक कार्यक्रम जारी किए जातें है। वार्षिक कार्यक्रम में अलग-अलग क्षेत्र के लिए हिंदी में मूल पत्राचार के लिए अलग-अलग लक्ष्य निर्धारित किए गए है। हिंदी में मूल पत्राचार का अभिप्राय हिंदी या अंग्रेजी में प्राप्त पत्र के उत्तर दिए जाने से संबंधित नही है मूल पत्राचार अन्तर कर्यालयीन पत्राचार भी नहीं है। मूल पत्राचार ऐसे पत्राचार है जो आकस्मिक प्रकृति के होते हैं एवं वे बिना किसी आवती (पत्र प्राप्ति) के केन्द्र सरकार/ राज्य सरकार के मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/ स्थानीय निकायो/लोक क्षेत्र उपक्रमों के बीच हिंदी में पत्राचार किए जाते है।

संघ सरकार द्वारा राजभाषा के सफल कार्यान्वयन प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, प्राइज अर्थात पुरस्कार, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रतिबद्धता, प्रयास, एवं प्रमोशन जैसी 12 "प्र" पर आधारित है। संघ सरकार द्वारा राजाभाषा के समूचित विकास के लिए अनेक प्रकार के हिंदी तकनीकी टूल्स भी विकसित किए गए है। अनुवाद टूल्स भी विकसित किए गए है। अनुवाद टूल्स कंठस्थ- 2.0 एवं माइक्रोसॉफ्ट इंडिक लैंग्वेज इनपुट टूल / हिंदी फोनेटिक का प्रयोग करना बहुत आसान है।

अरुण कुमार
हिंदी अधिकारी

हास्य–व्यंग्य

मैंने वर्ष 2010 में गुवाहाटी, असम की यात्रा नई दिल्ली से प्रारम्भ की। हिंदीत्तर भाषी क्षेत्र होने के कारण थोड़ा आशंकित था कि किस प्रकार किसी व्यक्ति से संपर्क स्थापित कर पाऊँगा। परंतु, संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी में ही मुझे भरपूर सहयोग मिला क्योंकि सभी लोग हिन्दी में भी बात करते थे। एक जगह मैं धोखा खा गया। मैं कार्यालय में प्रथम दिन ज्वाइन करने गया था। मेरे एक मित्र थे। उन्हें भी ज्वाइन करना था। वे असम के ही रहने वाले थे। मैं एक नॉवेल पढ़ने में व्यस्त था। मेरे मित्र को उस दिन कहीं जाना था। इसलिए, वे एक घंटा पहले निकल गए। परंतु जाने वक़्त उन्होने मुझसे बोला, "आप बैठो, मैं आता हूँ।" मैंने सोचा वो आएंगे तो दोनों साथ में ही होटल के लिए जाएँगे। मैं उनकी प्रतीक्षा करता रहा। सभी लोग अपने- अपने घर चले गए। मैं सोच रहा था कि हमारे मित्र आएंगे, तो एक साथ जाएँगे। इसी बीच वॉचमैन पावर ऑफ, कमरा बंद करने के लिए आया। उन्होने पहले मुझसे असमिया में बात किया। परंतु, मैं उन्हें जवाब न दे सका। फिर उन्होने हिन्दी में मुझसे बात किया। उन्होने पूछा, "आप यहाँ क्यों बैठा है"?

मैंने बोला- मेरे मित्र ने जाने के समय बोला है कि आप बैठो, मैं आता हूँ। इसलिए मैं उनके आने का इंतज़ार कर रहा हूँ। वॉचमैन ने मुझसे बोला नहीं, नहीं, "आप बैठो मैं आता हूँ का मतलब हुआ कि वह अब नहीं आएगा, वह चला गया। मैं आश्चर्य हो गया और घबरा गया। मैं फिर भागते- भागते एवं पूछते हुए किसी तरह होटल पहुंचा। अत: संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी तो बहुत काम आई, परंतु कुछ क्षेत्रीय हिन्दी शब्द के अर्थ नही समझने के कारण धोखा खा गया।

2. मोबाईल इंडिया

आजकल पेड़ पर लदे आम- अमरूद- बेर खुद ही पककर नीचे गिर जाते हैं। आम-अमरूद को खूब पता है कि पत्थर मारने वाले बच्चे तो अब अपने परिवार एवं पुस्तक में नहीं, मोबाईल में व्यस्त हैं।

अरुण कुमार
हिंदी अधिकारी

कुछ वर्ष पहले

कुछ वर्ष पहले की बात है। हमारे जीवन में एक वाक्या हुआ जिसे मैं अपने जीवन का सबसे सुनहरा पल कह सकता हूँ। मेरे घर के समीप रहने वाले एक परिवारवाले अपने बच्चे को हमेशा ही पढ़ाई–लिखाई नहीं करने को लेकर डांटते रहते। उसकी माँ हमेशा यही चाहती थी कि जिस प्रकार औरों के बच्चे स्कूल के क्लास में अच्छा प्रदर्शन करते उसी तरह उनका भी बच्चा वैसा प्रदर्शन करे, वो भी अपने क्लास में अच्छा करे। परंतु हमेशा इसका विपरीत सुनने को मिलता। क्लास की टीचर पी.टी.एम. के दौरान उसकी शिकायतों के बारे में आगाह करती। ये भी कहतीं कि आपका लड़का तो क्लास रूम में या तो बहुत शांत रहता है या तो बहुत ही शरारत करता रहता है; कभी तो चुपचाप हमारी बातों को सुनता रहता है, कभी अपने आप में ही खो जाता है। अचानक पढ़ाई करते-करते वह रूक जाया करता है; मानों कहीं गुम हो जाता है या किसी बात की उसे चिंता सता रही है। इन सब बातों की शिकायत आए दिन उसकी माँ को पी.टी. एम. के दौरान सुनने को मिलती थीं। वह कभी अपने क्लासरूम में टीचर की सभी बातों को बहुत ध्यान से सुनता और जब लिखने का मन करे, तब लिखता और जब नहीं लिखने का मन करे तो वह चुप-चाप शांत होकर बैठा रहता। उसकी एक अच्छी आदत भी थी कि वह अपने क्लास रूम में किसी और को बेकार में तंग नहीं करता था। इन सब बातों को सुनकर उसकी माँ हमेशा ही सोचती रहती थी कि हमारे बेटे में दूसरों वाले गुण क्यों नहीं हैं? परंतु भगवान जब भी किसी को बनाता है तो कुछ सोच कर ही बनाता है। ये बात उसकी माँ को समझ में नहीं आती। वह बेकार में ही चिंता करती रहती थीं। इसी प्रकार दिनों-दिन समय बीतता रहा। उस बच्चे की माँ रोज उसी प्रकार से सुबह उठती और अपने बच्चे के लिए जल्दी–जल्दी टिफिन तैयार करती। उसे अपने बच्चे के खाने की भी चिंता सताती कि वो क्लास जायेगा तो ये खायेगा वो खायेगा। उसके लिए कुछ खास बनाना है। जब वह स्कूल से लौटकर घर आता तो वे फिर उसके साथ दुश्मन जैसा तरह व्यवहार करती थीं। फिर तुम क्लास में कुछ नहीं किए.. लगता है फिर तुम क्लास में सो गये या चुपचाप बैठे रहे.... कॉपी में कुछ भी नहीं लिखे। इन सब बातों से उसे ताना देना शुरू कर देतीं। वह बच्चा भी अपनी माँ के ताने सुन–सुनकर मानों बोर सा हो गया। जैसे उसे पता हो गया हो कि घर जाकर सबसे पहले माँ का ताना सुनना है और फिर वही माँ अपने हाथों से प्यार से बिठाकर खाना खिलाएगी। यह सब वह जान चुका था।

उसकी माँ भी यह बात समझ चुकी थी कि ये सब इसी तरह से चलता रहेगा। उसकी माँ ने सोचा कि ये तो

सुधरेगा नहीं, कुछ न कुछ तो इसके लिए करना पड़ेगा ताकि वह अपनी पढ़ाई में और आगे कुछ अच्छा कर सके। तभी उसकी माँ ने सोचा- मैं एक बार उसके सामने रोने का नाटक करती हूँ, हो सकता है वह मुझे रोता देखकर अपने आप को सुधार सके। आखिरकार वही हुआ। उसकी माँ का यह दिमाग काम आ गया। वह जब भी स्कूल से आता तो उसकी माँ उसे रो–रो कर समझाती कि बेटा पढ़ोगे नहीं तो जीवन में कुछ भी नहीं कर सकोगे। तुम्हारी पहचान तुम्हारी पढ़ाई-लिखाई है। पढ़ोगे-लिखोगे तो जीवन में अच्छा आदमी बन सकोगे वरना तुम्हें कोई पूछने वाला भी नहीं होगा। बेटा, अभी समय है तुम अपने आप को समझो ताकि तुम भी अपने जीवन में कुछ कर सको। यह बात सुनकर उसे भी कुछ समय के लिए प्रेरणा मिलती तो कुछ समय वह बहुत अच्छा रहता। क्लास में सब कुछ अच्छा करता। मैडम की सारी बातों को बहुत ही ध्यान से सुनता और घर आकर सारी बातों को वो अपनी माँ को बताता। यह सुनकर उसकी माँ भी फूली नहीं समाती थी। वह सोचती- चलो अपना दिमाग लगाना कुछ हद तक सफल तो हो गया है। परंतु फिर कुछ दिन होने के बाद वह बच्चा वापस उसी तरह से व्यवहार करना शुरू कर दिया करता। क्लास की मैडम भी सोचती कि अचानक इसे क्या हो जाता है? कभी तो क्लास में सबसे पहले सब कुछ खत्म कर लेता है और कभी तो कुछ भी

नहीं करता। यह बात नोटबुक की डायरी में लिखकर उसकी माँ को भेज दिया करती थी। इसी तरह से उसका जीवन चलता रहा। रात होती उसे डांट पड़ती और दिन होता तो स्कूल और फिर स्कूल से वापस घर। यह सब सोचकर उसकी माँ का और उसके बच्चे का वही ढ़ंग रहा करता। धीरे–धीरे वह बड़ा होता गया। उसी प्रकार से उसकी शरारतें भी बढ़ती चली गईं। वह पढ़ाई–लिखाई में ज्यादा नहीं सोचता परंतु उसका दिमाग बहुत ही तेज था। वह किसी भी बात को एक बार में ही समझ लेता, उसे कोई भी बात याद रह जाती। समय तारीख सब कुछ। परंतु वह इसे मजाक में टाल दिया करता करता था। उसे अपनी ताकत न बनाकर अपने जीवन को हँसी-खुशी में बिताना ज्यादा पंसद करता था। उसकी माँ को धीरे–धीरे सब समझ में आ गया कि इसे किसी प्रकार से ठीक नहीं किया जा सकता है। वे जानती थीं कि उससे जोर-जबरदस्ती करके कोई भी काम नहीं करा सकता। उसे तो सिर्फ प्यार से समझाया जा सकता है वह भी तब जब वह समझना चाहे या जब कोई रोने-धोने का नाटक करे। वह भी कम नहीं था। अपनी माँ की हरकतों को समझ चुका था कि माँ कब रोती है और क्यों रोती है। वह जानबूझकर नाटक तो नहीं कर रही हैं। अगर उसे लगता कि माँ उसे समझाने के लिए नाटक कर रही है तो वह भी नाटक करता और बोलता- मैं पढ़ूँगा माँ.... तुम तो जानती हो न मुझे, मैं थोड़ी देर में पढ़ लूगा। तुम मेरे बारे में बेकार में सोचती हो। तब उसकी माँ कुछ नहीं बोलती थी और चुप हो जाती थीं। इसी तरह से उसकी शरारतें दिन-प्रतिदिन

बढ़ती रहीं। वह अपने दोस्तों के साथ घुमना–फिरना साईकिलिंग करना बेहद पंसद करता। उसकी माँ भी उसे अपने दोस्तों के साथ खेलने-कूदने से नहीं रोका करती थी।

एक समय की बात है कि उसके स्कूल में खेल-कूद का प्रोग्राम हो रहा था। उसी समय उसकी क्लास की टीचर ने उसका भी नाम खेल-कूद वाले प्रतिभागियों में शामिल कर दिया और वह उस प्रतियोगिता को जीतकर प्रथम स्थान लाया और उसे गोल्ड मेडल से

पुस्कृत किया गया। इस बात से वह बेहद खुश हुआ। उसने अपनी माँ को जब अपना गोल्ड मैडल दिखाया तो उसकी माँ की आखों में फिर से आँसू भर आए। यह देख उसका बच्चा बोला- अब तुम क्यों रो रही हो, देखो न माँ, अब तो तुम खुश हो जाओ मैने बहुत मेहनत की है तब जाकर मुझे ये गोल्ड मैडल मिला है। तुम्हें तो खुश होना चाहिए न माँ... बोलो...। तब उसकी माँ बोली- अरे पगले, ये तो खुशी के आँसू हैं। तुम नहीं समझोगे। जब तुम बड़े हो जाओगे तब तुम्हें हमारी बातें समझ में आएंगी। कभी–कभी आँसू भी हमें खुशी प्रदान करते हैं।

माँ बोली-बेटा अब तो तुम समझ ही गये न कि मेहनत करने पर और उसके बाद कुछ हासिल होने पर तुम्हें कितनी खुशी मिली... तुम्हारी मुस्कान से ही मुझे पता चल रहा है..... बेटा और एक बात, मैं सच कहूँ तो तुम्हारी इसी मुस्कान को हमेशा अपने जीवन और तुम्हारे जीवन में देखना चाहती हूँ। अब तुम ही बताओ मैं क्या यह गलत सोचती हूँ? तुम्हारे लिए हमारा प्यार सदैव इसी प्रकार से बना रहे बेटा, यह सोचकर मैं तुम्हे डाटती–फटकारती रहती हूँ। इसमें मेरा स्वार्थ है जो सिर्फ तुम्हारी मुस्कुराहट देखने के लिए है।

ये सब बातें सुनकर वह बच्चा भी अपनी मेहनत को समझ गया और वो अपनी मेहनत के बल पर अपनी सारी परीक्षाओं को पास कर आज उस मुकाम पर है जो उसकी माँ ने कभी सोचा था। यह उसकी माँ की जीत है और उसकी माँ की मेहनत और प्यार, जिसने उसे सब कुछ हासिल करा दिया।

अमित कुमार
वरिष्ठ लेखाकार

क्रिकेट विश्वकप फ़ाइनल एवं छठ महापर्व

दिन था 19 नवंबर, 2023 अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच एकदिवसीय क्रिकेट विश्वकप का फ़ाइनल खेला जाना था। भारतीय दल ने फ़ाइनल तक का सफर अविजित तय किया था। सभी खिलाड़ियों ने इस सफर में अभूतपूर्ण योगदान दिया था। सभी भारतवासियों की तरह मैं भी इस दिन की प्रतीक्षा बड़ी व्याकुलता से कर रहा था। चूंकि भारतीय टीम ने लगातार दस मैचों में अविजित रहकर फ़ाइनल में जगह बनाई थी इसलिए मैं आश्वस्त था कि भारत फ़ाइनल जीतकर तीसरी बार एकदिवसीय विश्वकप का खिताब अपने नाम करेगा। संयोग से इस दिन छठ महापर्व का संध्या अर्घ्य भी था। एकदिवसीय विश्वकप का फ़ाइनल मैच एवं छठ महापर्व का संयोग एक साथ होने से एक अलग ही उत्साह का माहौल था पूरे घर में।

क्रिकेट विश्वकप का आयोजन भारत में त्योहारों के अवधि में हुआ था। इस दौरान दुर्गापूजा एवं दशहरा जैसे पावन त्योहार भी बड़ी धूमधाम से मनाए गए। इस कारण से पूरा का पूरा विश्वकप किसी उत्सव से कम नहीं प्रतीत हो रहा था। वैसे भी भारत में क्रिकेट खेल की लोकप्रियता अन्य किसी भी खेल से अधिक है। वर्ष 2011 में भी भारत ने मेजबानी करते हुए ही अपना दूसरा विश्वकप जीत कर समस्त भारतवर्ष को गौरवान्वित किया था। इससे पहले 1983 में भारत ने अपना पहला विश्वकप जीता था। 2023 विश्वकप से ठीक पहले भारत ने एशिया कप जीत कर भी विश्वकप के खिताब के लिए अपना दावा मजबूत किया था ।

मैं दिवाली एवं छठ पर्व की छुट्टी लेकर पटना में अपने घर आया हुआ था। फ़ाइनल के अगले ही दिन मुझे कोलकाता के लिए निकालना था। फ़ाइनल को लेकर मैं बहुत ही ज्यादा उत्सुक था। पटना नगर में जगह-जगह लोकगीत स्पीकर पे चलाये जा रहे थे। पूरा का पूरा नगर साफ-सुथरा रोशनी से चमक रहा था। पटना में आम-तौर पर दीपावली में घर की बाहरी साज-सज्जा के लिए लगाई जानेवाली चमकदार लाइटें छठ पूजा तक के लिए रहने दी जाती है। इस सब के बीच भारत का फ़ाइनल में पहुँचना सोने पे सुहागा जैसा प्रतीत हो रहा था।

बहरहाल, खेल की शुरुआत हुई। भारत को पहले बल्लेबाजी करने का मौका मिला। भारतीय दल के कप्तान रोहित शर्मा ने अपने चिर-परिचित अंदाज में भारत को तेज़ शुरुआत दी। परंतु उनके

विकेट के पतन के पश्चात विराट कोहली एवं के एल राहुल ने संभल के खेलना शुरू किया। पैट कमिंस की कप्तानी में ऑस्ट्रेलिया के गेंदबाज काफी कसी हुई गेंदबाजी कर रहे थे। ये सब देखने के अलावा परिवार के सदस्य पूजा के कार्यों में भी लगे हुए थे। छठ-पूजा के दौरान गुड़ का ठेकुआ प्रसाद के रूप में बनाया जाता है। मेरी माँ, मामी एवं बहन इस कार्य में खेल के शुरू होने के पहले से लगे हुए थे। छठ पूजा के लिए व्रत मेरी माताजी ने रखा था। कभी-कभी किसी आवश्यक कार्य के लिए माँ आवाज़ भी लगाती थी परंतु खेल देखने के कारण मैं ध्यान नहीं दे पा रहा था। इसलिए माँ और बहन से 3-4 बार डांट भी पड़ी।

पारंपरिक रूप से अर्घ्य नदी या पोखर के किनारे दिया जाता है। वैसे तो पटना गंगा नदी के किनारे अवस्थित है परंतु उन स्थानों पर अत्यधिक भीड़ होने के कारण हमने अपने घर की छत पर ही कृत्रिम घेराबंदी की एवं उसमें जल एवं गंगा नदी का जल मिला कर उसे अर्घ्य देने के लिए तैयार किया। चूंकि गंगा घाट पर जाने की आवश्यकता नहीं थी और हमनें छत पर ही व्यवस्था कर रखी थी इसलिए टीवी पर देर तक खेल देखने का अवसर मिल रहा था। इस बीच विराट कोहली का विकेट गिरने से भारत को बहुत गंभीर क्षति पहुंची। गेंदबाजी इतनी कसी हुई हो रही थी कि बाउंड्री लगना भी बंद हो गया था कई ओवरों तक। मैं, मेरा भाई और मेरे जीजाजी काफी बार खीज भी रहे थे क्योंकि सब भारत को जीतते हुए देखना चाहते थे। जैसे-जैसे भारत की बल्लेबाजी लड़खड़ा रही थी हम भी मन बहलाने के लिए पूजा-पाठ के अन्य कार्यों मे समय व्यतीत करने लगे।

इसी बीच संध्या अर्घ्य का समय हो गया। यह अस्ताचलगामी सूर्य को समर्पित किया जाता है। हम सब छत पर आ गए थे। परिवार के सदस्यों के अलावा कुछ पड़ोसी भी पूजा में भागीदारी के लिए उपस्थित थे। उनमें से कुछ लोगों ने अपने मोबाइल ऐप में मैच लगा लिया था। इसलिए खेल की खबर भी कानों तक पहुँच रही थी। यह देखते हुए मैंने भी लाइव स्कोरकार्ड देखने के लिए मोबाइल के ब्राउजर में एक टैब खोल रखा था और बीच-

बीच में देख लेता था पर भारत की स्थिति में कोई सुधार नहीं हो रहा था। इस बीच सूर्यदेव को अर्घ्य अर्पित करने का कार्य अच्छे से सम्पन्न हुआ। हमारे घर में प्रवेश करते-करते भारतीय टीम की बल्लेबाजी समाप्त हो चुकी थी। भारतीय टीम ने ऑस्ट्रेलिया को 241 रनों का लक्ष्य दिया था। यह लक्ष्य अधिक कठिन तो नहीं था परंतु भारतीय गेंदबाजो ने पूरे विश्वकप में काफी घातक गेंदबाजी की थी इसलिए आशा की किरण अवश्य थी। बहरहाल क्रिकेट के हर बड़े मंच पर ऑस्ट्रेलिया हमेशा अपना सर्वश्रेष्ठ देती है। यह उनके गेंदबाजी से जाहिर हो गया था। शुरुआती मुक़ाबले में भारतीय टीम से करारी शिकस्त मिलने के बाद उनका यह प्रदर्शन असाधारण था। ऑस्ट्रेलिया के प्रशंसक होने के कारण बड़े भैया बार-बार उनके पूर्व के प्रदर्शन कि कहानी बीच-बीच में सुना रहे थे जिस कारण से आशा की किरण धूमिल होते हुए दिख रही थी।

खैर पारी समाप्ती और फिर विश्राम के पश्चात ऑस्ट्रेलिया ने अपने पारी तीव्र गति से शुरू की। उन्होंने मुख्य भारतीय गेंदबाज जसप्रीत बुमराह के पहले ओवर में ही 15 रन जड़ दिये। चूंकि रन पहले से कम थे ऐसे में इतनी खराब शुरुआत के पश्चात हमारे जीजाजी ने मुझे, मेरे भैया एवं मेरी बहन को कार से बाहर रात्रिभ्रमण का सुझाव दिया। मेरे बड़े भैया टीवी से अपना ध्यान नहीं हटाना चाहते थे इसलिए उन्होंने मना कर दिया। कुछ ही देर में हमलोग बाहर निकल गए। हम कोई अच्छा शाकाहारी भोजनालय ढूंढ रहे थे। इस खोजबीन के बीच में मैं कभी-कभी स्कोरकार्ड देख लेता था। पता चला कि ऑस्ट्रेलिया ने भी कम अंतराल में ही 3 विकेट खो दिये थे। हालांकि उनका रनरेट काफी अच्छा चल रहा था। खैर हमें एक ढंग का भोजनालय मिल गया। वहाँ भी बड़े स्क्रीन पर मैच चल रहा था। हमने खाना ऑर्डर किया एवं मैच देखने लगे। ऑस्ट्रेलिया अब काफी संभल कर खेल रहा था। इस बीच हमारा खाना आ गया। भोजन समाप्त होने के बाद हम वहाँ से घर की ओर निकल गए। ऑस्ट्रेलिया की ओर से ट्रेविस हेड और मार्नस लाबुशेन मानों जम से गए थे। इनमें से ट्रेविस हेड ने काफी आक्रामक बल्लेबाजी शुरू कर दी थी।

घर पहुँच कर हमने देखा कि बड़े भैया उदासी के साथ मैच देख रहे थे। हमने कुछ देर उनके साथ मैच देखा फिर जब ऐसा प्रतीत होने लगा कि अब खेल भारत के हाथ से निकाल चुका है तो धीरे-धीरे मैच की तरफ से रुझान घटना शुरू हो गया। अब मेरी बहन ने कोई फिल्म टीवी पर देखने का सुझाव दिया। मैं अपने कमरे में चला गया। फिर भी बीच-बीच में स्कोरकार्ड देख लेता था, परंतु अब मानों भारतीय टीम की पराजय तय थी। कुछ ही समय में में ऑस्ट्रेलिया ने विजय रन भी कर लिए एवं इसके साथ छठी बार एकदिवसीय क्रिकेट विश्वकप का खिताब अपने नाम कर लिया। मन

काफी उदास था क्योंकि भारतीय टीम सर्वश्रेष्ठ टीम प्रतीत हो रही थी, परंतु इस बड़े मंच पर और विश्वकप के सबसे बड़े स्टेडियम जहां की क्षमता करीब सवा लाख है, वहाँ दबाव के बीच में ऑस्ट्रेलिया का यह मैच जीतना काबिले-तारीफ़ भी था। उनकी जितनी भी प्रशंसा की जाए वह कम है। अगले दिन सूर्योदय के पहले जागना था इसलिए मैं सो गया।

खैर अगले दिन भोर में उगते हुए सूर्य को अर्घ्य अर्पित करने की तैयारी करनी थी। यह सोच के मन में एक उत्साह था परंतु भारतीय टीम की पराजय का ध्यान आते ही मन विचलित भी हो जाता था। फिर भी जो हुआ सो हुआ सोच कर मैं पूजा से संबंधित कार्य में लग गया। सूर्योदय होते ही हमने अर्घ्य अर्पित की तथा इसकी समाप्ती के उपरांत हमने प्रसाद के रूप में ठेकुआ एवं अन्य फलों का लुत्फ उठाया। सभी काफी प्रसन्न लग रहे थे। माताजी ने भी प्रसाद खा कर अपना उपवास तोड़ा। इसके बाद वे आराम करने को चली गईं। सबकुछ सम्पन्न होने के पश्चात सभी आराम करने लगे। इसके बाद एक और बात का आभास हुआ कि वर्ष के समस्त त्योहार भी समाप्त हो चुके हैं। भारतीय टीम अगर जीत जाती तो त्योहार का समाप्त होना उतना नहीं खलता। पर हम जो सोचते है वैसा होता नहीं। भारतीय टीम ने अच्छा प्रदर्शन किया इस बात का हमें उनपर गर्व होना चाहिए।

अतुल कुमार
लेखाकार

प्रतिभा बनाम लापरवाही

हाई स्कूल का मेरा पहले दिन था तब तब मेरी मुलाकात मेरी कक्षा के सबसे शरारती कहें या उद्दंड बच्चे से हुई। पहली नजर में किसी को शरारती कहना शायद उचित नहीं होगा परंतु अंतिम बेंच में बैठे उस लड़के की हरकतें देख कर पहले ही दिन पूरे कक्षा की शायद यही राय बन गई थी। ऐसा लग ही नहीं रहा था कि आज कक्षा का पहला दिन था। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वह लड़का कई वर्षों से यहां पढ़ रहा हो और बदमाशी करना, विद्यालय के नियमों का उल्लंघन करना उसकी आदत हो। पहले ही दिन उसने बेंच बजाना, गप्पे मारना, शोरगुल करना और मॉनिटर की बात न मानना शुरू कर दिया था। सांवला रंग, सामान्य कद और दुबले शरीर वाले उस लड़के का नाम करण था।

खेलों में भी उसकी रुचि अधिक थी। वैसे तो करण क्रिकेट, फुटबॉल, कबड्डी, गिल्ली डंडा, गोली (कंचे) इत्यादि खेल खेलता था परंतु क्रिकेट उसका पसंदीदा खेल था। वह प्रतिदिन स्कूल एक घंटे पहले आता और अपना बैट और कुछ कंचे साथ लेकर आता ताकि स्कूल शुरू होने से पहले स्पोर्ट्स पीरियड या टिफिन के समय वह खेल सके। कई बार तो करण अपने मित्रों के साथ कक्षा में ही कंचे खेलना शुरू कर देता था। प्रतिदिन शिक्षक से डांट सुनना, मार खाना तो उसकी आदत बन गई थी। पर फिर भी वह अपनी हरकतों से बाज नहीं आता था।

इन सब के बावजूद वह स्कूल रोज आता और पढ़ाई के अलावा अन्य सभी कार्य करता। जैसे स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, सरस्वती पूजा, स्कूल का वार्षिक सांस्कृतिक कार्यक्रम समारोह, विद्यालय की वार्षिक खेल प्रतियोगिताओं इत्यादि में स्कूल को सजाता। इन समारोह के कार्यक्रमों मे बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेता। विद्यालय की नाट्य मंडली का वह स्थायी सदस्य भी था। वह और उसकी नाट्य मंडली प्रतिवर्ष विद्यालय के वार्षिक कार्यक्रम में हिस्सा लेते थे। करण हर तरह के नाटकों, चाहे वह हास्य हो, त्रासदी हो, ऐतिहासिक हो या सामाजिक हो, सबमें हिस्सा लेता और उसका अभिनय इन नाटकों में सराहनीय होता था। लेकिन जब बात पढ़ाई पर आती तो वह न तो कक्षा में शिक्षकों को पढ़ाने देता, न अपने सहपाठियों को पढ़ने देता और न ही खुद पढ़ाई करता। कुछ शिक्षक तो करण को अपनी क्लास मे बैठने ही नहीं देते थे। थोड़ी सी बदमाशी करने पर उसे क्लास से बाहर निकल देते थे। पर इन सबका करण पर कोई प्रभाव नही पड़ता था। वह फिर से अगली क्लास में आता और अपनी

बदमाशी शुरू कर देता था।

कभी कभी तो वह अपनी पाठ्य-पुस्तकों के बिना ही विद्यालय आ जाता था। उसकी एक दो कॉपियां हमेशा ही उसके मित्रों के पास रहती थीं। यही कारण है कि वह कभी-कभी अपना बैग लिए बिना ही विद्यालय आ जाता और अपने मित्रों के पास रखी कॉपिओं में कक्षा नोट्स लिख लेता था। पढ़ाई के मामले में वह बहुत ही लापरवाह था। उसने कभी भी अपने प्रोजेक्ट्स समय पर जमा नहीं किए और न ही वह अपना प्रोजेक्ट खुद बनाता था। उसका प्रोजेक्ट्स या तो किसी दूसरे के प्रोजेक्ट की कॉपी होता था या किसी अन्य विद्यार्थी द्वारा बनाया जाता था। इसके बावजूद भी करण पढ़ाई में मध्यम स्तर का विद्यार्थी था। वह आश्चर्यजनक रूप से हमेशा हमारी कक्षा के शीर्ष 20 विद्यार्थियों मे रहता था।

समय के साथ करण की बदमाशियां, प्रतिभा और लापरवाही बढ़ती चली गई। अब वह किसी भी शिक्षक से नहीं डरता था, उनसे तर्क करता था, कक्षा में सहपाठियों के साथ उसने झगड़े करना भी शुरू कर दिया था। शिक्षक को बिना बताए वह कक्षा से बाहर चल जाता और कुछ देर बाद घूम-फिर कर आता। अपने पसंदीदा खेल क्रिकेट में वह विद्यालय की तरफ से खेलते हुए जिला स्तर पर खेलने लगा था। वह अब हमेशा समय पर कक्षा में नहीं पहुंचता था और अपने काम को समय पर पूरा नहीं करता था। अक्सर वह परीक्षा के कुछ दिन पहले नोट्स इकट्ठे करता और पढ़ता। देखते ही देखते माध्यमिक परीक्षा के परिणाम का दिन आ गया। सभी विधार्थी अपना अपना रिजल्ट ऑनलाइन देख कर रिजल्ट लेने विद्यालय आये हुए थे। कुछ विद्यार्थी बहुत खुश थे तो कुछ बहुत ही उदास थे पर करण हमेशा

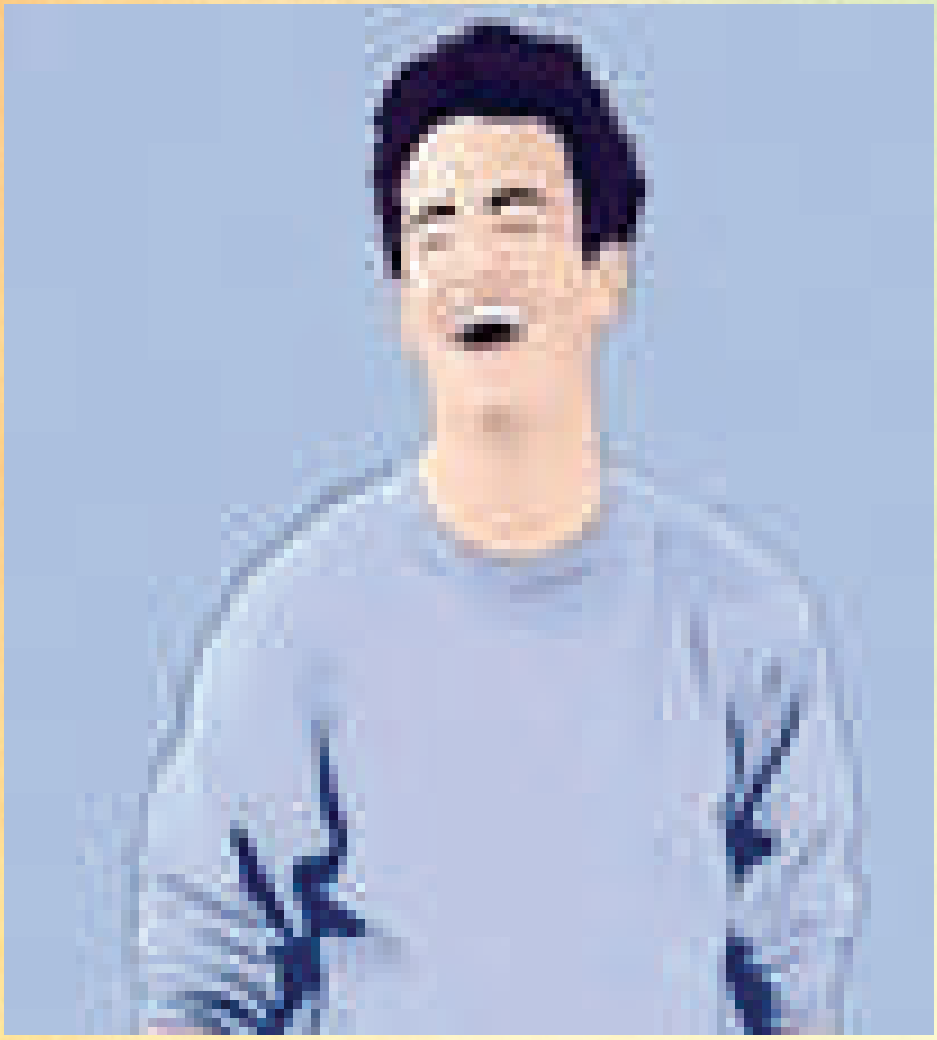

की तरह ही मौज-मस्ती कर रहा था। आश्चर्यजनक रूप से करण हमारी कक्षा मे टॉप कर गया, उसे 80% नंबर प्राप्त हुए। सभी विद्यार्थी आश्चर्यचकित थे और उनसे भी अधिक शिक्षक आश्चर्यचकित थे। उस समय हमारे शिक्षक और हमें यह समझ मे आया कि करण बहुत ही प्रतिभा-संपन्न विद्यार्थी है परन्तु उतना ही लापरवाह है। लापरवाही त्याग कर वह अपने जीवन मे बहुत कुछ हासिल कर सकता है। ठीक इसी प्रकार करण का प्रदर्शन इसके बाद के अन्य परीक्षाओं जैसे उच्च माध्यमिक तथा स्नातक में भी रहा। वह अब भी टॉप करता परंतु लापरवाही का त्याग नहीं करता था। लापरवाही तो जैसे उसके जीवन का हिस्सा बन गई थी। शिक्षक के लाख समझाने पर भी उसने अपनी ये आदत नहीं सुधारी। अति आत्मविश्वास के कारण उसकी लापरवाही बढ़ती गई। स्नातकोत्तर मे भी उसका यही रवैया रहा परंतु इस बार प्रतिभा बनाम लापरवाही की जंग में लापरवाही जीत गई और पहली बार करण पहले सेमेस्टर के एक पेपर मे फेल हो गया। ऐसा सिर्फ करण की पढाई के साथ ही नही हुआ बल्कि उसके पसंदीदा खेल क्रिकेट के साथ भी हुआ। अब वह न तो अपनी पढाई में और न ही अपने खेल में अच्छा प्रदर्शन कर पा रहा था। ऐसा करण के साथ लगभग दो वर्षों तक होता रहा। इन वर्षों के बीच करण ने कई प्रतियोगी परीक्षाएं दी परंतु हर बार उस असफलता ही हाँथ लगी। उसका आत्मविश्वास बिल्कुल टूट

चुका था। उसे समझ में आ चुका था कि उसकी लापरवाही ही उसके रास्ते का सबसे बड़ा कांटा है। वह प्रयास करता पर लापरवाही का त्याग नही कर पाता था। इस समय उसे अपने शिक्षक की कही बात याद आई- "विद्यार्थियों के जीवन में प्रतिभा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, लेकिन कुछ विद्यार्थी अपनी प्रतिभा के साथ-साथ लापरवाह भी होते हैं। यह लापरवाही उनकी प्रतिभा को नष्ट कर देती है और उन्हें प्रगति के मार्ग पर अग्रसर होने से रोकती है।" इसके बाद करण ने ठान लिया कि वह निरंत परिश्रम के द्वारा लापरवाही को त्याग कर रहेगा। धीरे-धीरे उसने अपनी लापरवाही को दूर किया और अपनी प्रतिभा को उजागर किया। अगले तीन वर्षों के अंदर ही उसका अपने राज्य की रणजी टीम में चयन हो गया और साथ ही प्रतियोगी परीक्षा पास कर अधिकारी भी बन गया। इस कहानी से हमें यह सिखने को मिलता है कि प्रतिभा के साथ-साथ नियमितता और प्रतिबद्धता भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। लापरवाही से बचने के लिए हमें अपनी प्रतिभा का सही तरीके से उपयोग करना और अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए मेहनत करना चाहिए।

सचिन प्रसाद
कनिष्ठ अनुवादक

कार्यालय में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन

प्रति वर्ष अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च को मनाया जाता है। हमारे कार्यालय में प्रति वर्ष इस अवसर पर कुछ कार्यक्रम आयोजित किए जाते है। इस वर्ष भी 8 मार्च को औपचारिक रूप से अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर "भारतीय अर्थव्यवस्था में महिलाओं का योगदान" विषय पर निबंध लेखन प्रतियोगिता और "महिला दिवस" पर आशु भाषण आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कार्यालय की महिला कार्मिकों ने उक्त प्रतियोगिताओं में भाग भी लिया।

इस वर्ष 8 मार्च को शिवरात्रि भी होने के कारण शेष कार्यक्रम 13 मार्च को मनाना तय किया गया। कार्यालय की सभी महिला कार्मिकों के लिए उक्त तिथि को लाल रंग के भारतीय कपड़ों में आने का निवेदन किया गया। 13 मार्च को होने वाले कार्यक्रम में हमारे कार्यालय प्रमुखों सहित आस – पास के कार्यालयों के प्रमुख भी शामिल हुए। सभी ने इस अवसर पर देश और समाज के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं के योगदान पर अपना मन्तव्य व्यक्त किया। कुछ महिला कार्मिकों ने गीत-संगीत प्रस्तुत किया तो किसी ने काव्य पाठ का वाचन

किया। इस अवसर पर कार्यालय की तरफ से सभी महिला कार्मिकों के लिए खाने का भी प्रबंध किया गया था। खाने के अलग- अलग स्टॉल लगे थे। किसी स्टॉल पर पापड़ी चाट मिल रही थी, किसी पर फूचका, तो किसी पर वेजीटेबल चाप और इडली। यह कार्यक्रम हमारे कार्यालय के लान में आयोजित किया गया था। सभी महिला कार्मिकों ने चाट- पकौड़ी का भरपूर आनंद लिया।

इसके बाद मनोरंजन की बारी थी। सभी महिला कार्मिकों के लिए अलग- अलग खेलों का भी प्रबंध किया गया था। पहली खेल प्रतियोगिता बास्केट बॉल की थी, जिसमें एक बास्केट में गेंद को कुछ दूरी से डालना था। सभी ने इसका पूरा लुत्फ लिया। कुछ देर बाद बाद म्यूजिकल चेयर शुरू हुआ। इसमें तो लगभग सभी महिला कार्मिकों ने ही भाग लिया। यह खेल बहुत मनोरंजक रहा। उक्त दोनों खेलों में विजित सभी प्रतिभागियों को कार्यालय प्रमुखों द्वारा पुरस्कृत किया गया।

इस वर्ष का अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन बहुत मामलों में खास था। प्रत्येक वर्ष इसका आयोजन होता था लेकिन कोरोना काल के बाद इस वर्ष ऐसा भव्य आयोजन हुआ कि सभी महिला कार्मिकों का बहुत उत्साहवर्धन हुआ। यही आशा है कि इस वर्ष की भांति प्रत्येक वर्ष अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन ऐसे ही किया जाएगा और हम सभी को अपने रोज़मर्रा की भागा- भागी से एक अल्प विराम मिलेगा।

सुनीता राउत
एम.टी.एस.

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), पश्चिम बंगाल, ट्रेजरी बिल्डिंग्स, कोलकाता – 700 001